श्रीनाभादासजीविरचित

श्रीभक्तमाल

खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन बम्बई

॥ लक्ष्मीवेंकटेश्वराय नमः ॥

श्रीनाभादासजीविरचित

श्रीभक्तमाल

श्रीप्रियादासजीकृत भक्तिरसबोधिनी

टीकासहित

जिसमें

चारों युगों के समस्त भक्तों का चरित्र

सविस्तार वर्णित है।

मुद्रक एवं प्रकाशकः

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

भूमिका

. यह भक्तमाल ग्रन्थ नाभाजी स्वामी ने छप्पय छन्द में बनाया, इस जगत् में भगवत्प्राप्ति के लिये जो बहुत प्रकार के मत प्रचलित हैं, उन सर्व मतों में जो श्रेष्ठ भक्त हो गये उनके नाम, गांव और हरिभक्तिविषयक भाव तथा उनके लिये प्रभु ने जिस प्रकार परिचय दिया है और उनको जिस प्रकार प्रभु मिले इत्यादि सब विषयों का वर्णन इस भक्तमाल में है, किंतु यह मूल ग्रन्थ अतिशय गूढ होने से किंचित् पढे हुए मन्दबुद्धि पुरुषों को इसका अर्थ स्पष्टतया नहीं लगता था, इसलिये सम्प्रदायनिष्ठ, महाचतुर, भक्तिनिपुण कविश्रेष्ठ श्रीप्रियादासजी ने भक्तिबोधिनी नामक इसकी सरल सुबोध टीका कवित्त छन्दों में बनाई है। इन्होंने अपनी कविता में अनुप्रास, यमक, माधुर्य, रसिकता, शब्दप्रौढी, अर्थगूढत्ा, अलंकार, काकूक्ति आदि अनंत भेद बड़ी युक्तिपूर्वक दिखा दिये हैं। यह ग्रन्थ सबसे श्रेष्ठ है, इसमें संदेह नहीं, क्योंकि जो कोई इस ग्रन्थ का आदि से अन्त तक पढ के पुनः पुनः अवलोकन करता है, या इसका पारायण करता है, उसे नवधा भक्ति, कविता करने की शक्ति, जगत् से विरक्ति और जीवन्मुक्ति सहज ही में प्राप्त होती है। हमने भी इसे बहुत ही शुद्धता के साथ छाप के प्रसिद्ध किया, किन्तु हम सर्व सज्जनों से सविनय निवेदन करते हैं कि वे इसे साद्यंत अवलोकन करके हमारे परिश्रम को सफल करें और दृष्टिदोष से जो कुछ इसमें भूल रही हो, तो उसको क्षमा करें।

– प्रकाशक

संस्करण : मई २०१९, संवत् २०७६ मूल्य : १६० रुपये मात्र ।

© सर्वाधिकार : प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

मुद्रक एवं प्रकाशक:
खेमराज श्रीकृष्णदास,™
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
मुंबई - ४०० ००४.

Printers & Publishers
Khemraj Shrikrishnadass
Prop: Shri Venkateshwar Press
Khemraj Shrikrishnadass Marg, 7th Khetwadi, Mumbai - 400 004.
Web Site : http://www.khe-shri.com E-mail : khemraj@vsnl.com

Printed by Sanjay Bajaj for M/s Khemraj Shrikrishnadass Prop. Shri Venkateshwar Press, Mumbai-400004, at their Shri Venkateshwar Press, 66 Hadapsar Industrial Estate, Pune -411 013.

BERDE.

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

अथ
भक्तमालकी विषयानुक्रमणिका।

विषय.	पृष्ठांक.
टीकाकर्ताका मंगलाचरण तथा आज्ञानिरूपण	.... १
टीकाका नाम तथा स्वरूपवर्णन.	,,
भक्तिस्वरूपवर्णन	.... ,,
भक्तिपंचरसवर्णन	.... ,,
सत्संगप्रभाववर्णन	.... २
नाभाजूका वर्णन	.... ,,
भक्तमालस्वरूप वर्णन	.... ,,
टीकाविशेष लक्षण	.... ३
आज्ञावर्णन	.... ,,
नाभाजूकी आद्यावस्था वर्णन	.... ४
चौबीस अवतारोंका वर्णन	.... ,,
रामचन्द्रजूके चरणचिन्हका वर्णन	.... ५
पार्वतीजूको सीताका स्वरूप लेनेका वर्णन	.... ६
अजामीलजूका वर्णन	.... ,,
षोडश पार्षदोंका वर्णन	.... ७
हरिवल्लभप्रार्थनाका वर्णन	.... ,,
हनुमान्का वर्णन	.... ८
बिभीषणजूका वर्णन	.... ,,
शिबरीजूका वर्णन	.... ९
खगपतिजूका वर्णन	.... १०
अंबरीषराजाजूका वर्णन	.... ,,
विदुरजूका वर्णन	.... १२
सुदामाजूका वर्णन	.... १३
चंद्रहासजूका वर्णन	.... १४
समुदायका वर्णन	.... १६
कुंतीजूका वर्णन	.... ,,
द्रौपदीजूका वर्णन	.... १६
विप्र श्रुतदेवजूका वर्णन	.... १७
संक्षेपसमुदायका वर्णन	.... ,,
श्वपच वाल्मीकिजूका वर्णन	.... १८
रुक्मांगदजूका वर्णन	.... १९
समुदायका वर्णन	.... २०
बलिकी दारा विंध्यावलीका वर्णन	.... ,,
मोरध्वजजूका वर्णन	.... ,,
अलर्कजूका वर्णन	.... २१
रंतिदेवजूका वर्णन	.... २२
गुहरामजूका वर्णन	.... ,,
परीक्षित्जूका वर्णन	.... २३
श्रीशुकदेवजूका वर्णन	.... ,,
प्रल्हादजूका वर्णन	.... ,,
श्वफल्कसुवन अक्रूरजीका वर्णन	.... २४
बलिराजाजूका वर्णन	.... ,,
श्वेतद्वीपवासीका वर्णन	.... २७
निंबादित्यजूका वर्णन	.... २८
सहस्रास्यजूका वर्णन	.... २९
आचार्यके जामाताका वर्णन	.... ३०
गुरुभक्तका वर्णन	.... ३१
श्रीरंगजूका वर्णन	.... ३२
पैहारीजूका वर्णन	.... ३३
सुमेरदेवजूका वर्णन	.... ३४
अग्रदासजूका बागप्रीतिप्रसंगका वर्णन	.... ,,
शंकराचार्यजूका वर्णन	.... ३५
वामदेवजूका वर्णन	.... ३६

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक.
जयदेवजूका वर्णन	३९	गुरुनिष्ठका वर्णन	६५
श्रीधरजूका वर्णन	४३	रैदासजूका वर्णन	,,
बिल्वमंगलजूका वर्णन	,,	कबीरसाहेबजूका वर्णन	६७
विष्णुपुरीजूका वर्णन	४६	पीपाभक्तका वर्णन	७०
ज्ञानदेवजूका वर्णन	,,	धनाभक्तका वर्णन	७५
त्रिलोचनजूका वर्णन	४७	सेनाभक्तजूका वर्णन	७६
वल्लभाचार्यजूका वर्णन	४८	पद्मनाभजूका वर्णन	७७
कुलशेखरजूका वर्णन	४९	तत्वाजीबाजूका वर्णन	७८
रतिवंतीबाईजूका वर्णन	,,	माधवदासजूका वर्णन	७९
पुरुषोत्तमवासी महाराजजूका वर्णन	५०	रघुनाथगुसांईजूका वर्णन	८१
करमाबाईजूका वर्णन	५१	नित्यानंदजूका वर्णन	८२
सिलपिल्लेकुँवरिका वर्णन	,,	कृष्णचैतन्यजूका वर्णन	,,
भक्तनिहितसुतविषदियोए उभय बाईजूका वर्णन	५२	केशवभट्टजूका वर्णन	८३
दोऊमामाभानजेका वर्णन	५४	श्रीभट्टजूका वर्णन	८५
हंसप्रसंगजूका वर्णन	५५	कायस्थतिपुरदासजूका वर्णन	८६
महाजनसदाव्रतीजूका वर्णन	,,	श्रीविठ्ठलजूका वर्णन	८७
भुवनचौहानजूका वर्णन	५६	भाई उभयमाथुरजूका वर्णन	८८
देवापंडाजूका वर्णन	५७	हरिरामजूका वर्णन	९०
कामध्वजजूका वर्णन	५८	श्रीनारायणभट्टजूका वर्णन	९१
जैमलजूका वर्णन	,,	बंगालदेशभक्तजूका वर्णन	,,
ग्वालभक्तजूका वर्णन	,,	हरिवंशगुसांईजूका वर्णन	९३
श्रीधरस्वामीजूकी आद्याव-स्थाका वर्णन	५९	हरिदासजूका वर्णन	९४
		व्यासभक्तजूका वर्णन	,,
		श्रीजीवगुसांईजूका वर्णन	९५
निष्किंचनभक्तजूका वर्णन	,,	श्रीगोपालभट्टगुसांईजूका वर्णन	९६
साखीगोपालजूका वर्णन	६०	अलिभगवानजूका वर्णन	,,
रामदास भक्तजूका वर्णन	,,	विठ्ठलविपुलजूका वर्णन	,,
जसूस्वामीजूका वर्णन	६१	जगन्नाथानेश्वरीजूका वर्णन	९७
नंददासजूका वर्णन	६२	श्रीलोकनाथगुसाईका वर्णन	,,
अल्हजूका वर्णन	,,	श्रीमधुगुसाईजूका वर्णन	,,
बारमुखीजूका वर्णन	,,	श्रीकृष्णदासब्रह्मचारीजूका वर्णन	,,
तियासंग विप्र भक्तका वर्णन	६३	श्रीकृष्णदासपंडितजूका वर्णन	९८
राजा भक्तराजजूका वर्णन	६४	भूगर्भगुसांईजूका वर्णन	,,
तिया हरिभक्तजूका वर्णन	,,	रसिक मुरारिदासजूका वर्णन	,,

विषय.	पृष्ठांक
सधनाभक्तजूका वर्णन	१००
श्रीगुसांईकाशीश्वरजूका वर्णन	१०१
खोजीजूका वर्णन	१०२
रांकाबांकाजूका वर्णन	,,
लड्डुभक्तजूका वर्णन	१०३
श्रीसंतभक्तजूका वर्णन	,,
त्रिलोकभक्तजूका वर्णम	,,
प्रतापरुद्र गजद्रतिजूका वर्णन	१०५
श्रीगोबिंदस्वामीका वर्णन	,,
गुंजामालीजूका वर्णन	१०६
गणेशदेरानीजूका वर्णन	१०७
नरवाहनजूका वर्णन	१०८
गोपालभक्तका वर्णन	,,
लाखाभक्तका वर्णन	१०९
नरसीभक्तका वर्णन	११०
माधवभक्तका वर्णन	११६
अंगदभक्तका वर्णन	११७
चतुर्भुजराजाका वर्णन	११८
मीराबाईका वर्णन	१२०
पृथ्वीराजराजाजूका वर्णन....	१२२
जैमलजूका वर्णन	१२३
मधुकरशाहजूका वर्णन	,,
रामराजाजूका वर्णन	१२४
राजाराम अभिराम दोऊका वर्णन	१२५
किशोरभक्तका वर्णन	,,
चतुर्भुजदासका वर्णन	१२६
संतदासका वर्णन	१२७
सूरदास मदनमोहनका वर्णन	१२८
श्रीमुरारिदासका वर्णन	१२९
तुलसीदासजीका वर्णन	१३०
गोकुलनाथजूका वर्णन	१३३
बनवारीदासका वर्णन	१३५
गदाधरभट्टका वर्णन	,,
फर्मानंदका वर्णन	१३७

विषय.	पृष्ठांक
कोल्हअल्हका वर्णन	१३७
श्रीनारायणदासका वर्णन	१३८
पृथ्वीराजाका वर्णन	१३९
सीवाभक्तका वर्णन	१४०
रत्नावतीबाईका वर्णन	,,
पारीखभक्तका वर्णन	१४४
नारायणभक्तका वर्णन	,,
जैतारनभक्तका वर्णन	१४५
चतुरीनगनस्वामीजूका वर्णन	१४६
केवलकुवाजूका वर्णन	,,
तुंबरभगवानदासका वर्णन	१४९
हरिदासवणिकका वर्णन....	१५०
बांबोली गोपालका वर्णन....	१५१
करमेतीबाईका वर्णन	१५२
गोविंदभक्तका वर्णन	१५४
गंगग्वालभक्तका वर्णन	,,
प्रेमदासका वर्णन	१५६
केवलरामका वर्णन	१५८
नरवरराजाका वर्णन	,,
हरिदासभक्तका वर्णन	१६०
कृष्णदाससुनारका वर्णन....	१६२
श्रीप्रबोधानंदसरस्वती गुसांई-जूका वर्णन	,,
कृष्णदासजूका वर्णन	१६३
गदाधरदासका वर्णन	१६४
नारायणदासका वर्णन	१६५
भगवानदासका वर्णन	,,
नामदीपकुवरिका वर्णन	१६७
गिरिधरग्वालका वर्णन	,,
रामदासभक्तका वर्णन	१६८
भगवंतभक्तका वर्णन	१६९
फलश्रुति दोहा	१७१
टीकाकर्ताके गुरुदेवका वर्णन	१७२

इति विषयानुक्रमणिका समाप्त ।

॥ श्रीराधावल्लभो जयति ॥

अथ

भक्तिरसबोधिनीटीकासहित

श्रीभक्तमाल।

टीकाकर्ताका मंगलाचरण तथा आज्ञानिरूपण।

क०–महाप्रभु कृष्ण चैतन्य मनहरणजूके चरणको ध्यान मेरे नाम मुख गाइये। ताही समय नाभाजूने आज्ञा दई लई धारि टीका विस्तार भक्तमालको सुनाइये॥ कीजिये कवित्तबंध छंद अति प्यारो लगै जगै जगमाहिं कहि वानी बिरमाइये। जानों निजमति ऐपै सुन्यो भागवत शुक द्रुमनि प्रवेश कियो ऐसेही कहाइये॥ १॥

टीकाका नाम तथा स्वरूपवर्णन।

क०–रचि कविताई औ सचाई सुखदाई लगै निपट सुहाई पुनरुक्ति ले मिटाई है। अक्षरमधुरताई अनुप्रास यमकाई अति छबि छाई मोद-झरीसी लगाई है॥ काव्यकी बडाई निजमुख न भलाई होत नाभाजू कहाई ताते प्रौढकै सुनाई है। हृदै सरसाई जोपै सुनिये सदाई यह भक्ति-रसबोधिनी सुनाम टीका गाई है॥ २॥

भक्तिस्वरूपवर्णन।

क०–श्रद्धाई फुलेल औ उबटनो श्रवण कथा मैल अभिमान अंग अंगनि छुटाइये। मनन सुनीर अन्हवाय अँगुछाय दया नवनि वसन प्रन सोंधो ले लगाइये॥ आभरण नाम हरि साधुसेवा कर्णफूल मानसी सुनथ संग अंजन बनाइये। भक्ति महारानीको श्रृंगार चारु बीरी चाह रहै जो निहारि लहै लाल प्यारी गाइये॥ ३॥

भक्तिपंचरसवर्णन।

क०–शान्ति दास्य सख्य वात्सल्य औ श्रृंगार चारु पांचों रस सार विसतार नीके गाय हैं। टीकाको चमतकार जानोगे विचारि मन इनके

स्वरूपमें अनूप ले दिखाय हैं ॥ जिनके न अश्रुपात पुलकित गात कभू तिनहूको भावसिंधु बोरि सो छकाय हैं । जौलौं रहे दूरि रहे विमुखता पूरि हियो होइ चूर चूर नेक श्रवण लगाय हैं ॥ ४ ॥ पंच रस सोई पंचरंग फूल थाके नीके पीयके पैरायवेको रचिके बनाई है । वैजयंती दाम भाववती आलि नाभा नाम ल्याई अभिराम श्याममति ललचाई है । धारी उर प्यारी क्योंहू करत न न्यारी अहो देखो गति न्यारी ढरि पांयनिको आई है । भक्तिछबिभार ताते नमित श्रृंगार होत होत वश लखे जोई याते जानि पाई है ॥ ५ ॥

सत्संगप्रभाववर्णन ।

क०—भक्ति तरु पौधा ताहि विघ्न डर छेरिहूको बारदे विचार वारि सींच्यो सतसंगसों । लग्योई बढन गोदा चहुँ दिशि कढनसो चढन आकाश जस फैल्यो बहु रंगसों ॥ संतउर आलवाल शोभित विशाल छाया जिये जीवजाल ताप गए यों प्रसंगसों । देखो बढवार जाहि अजाहूकी शंका हुती ताही पेड बँधे झूलैं हाथी जीते जंगसों ॥ ६ ॥

नाभाजूका वर्णन ।

क०—जाको जो स्वरूप सो अनूप ले दिखाइ दियो कियो जो कवित्त पटमिहिंमध्य लाल है । गुण पै अपार साधु कहे अंक चारिहीमें अर्थ विसतार कविराज टकसाल है । सुनि संतसभा झूमि रही आलिश्रेणी मानो धूमि रही कहे यह कहाधौं रसाल है । सुने हैं अगर अब जाने मैं अगर सही चोवा भए नाभा औ सुगंध भक्तमाल है ॥ ७ ॥

भक्तमालस्वरूपवर्णन ।

क०—बडे भक्तिमान निशिदिन गुणगान करें हरें जगपाप जाप यो परिपूर है । जानि सुख मानि हरि संतसनमान सचे बचेऊ जगत रीति प्रीति जानि मूर है ॥ तेऊ दुराराध कोऊ कैसेकै अराधि सकै समझ्यो न जात मन कंप भयो चूर है। शोभित तिलक भाल माल उर राजै तौपै विना भक्तमाल भक्तिरूप अतिदूर है ॥ ८ ॥

दोहा–भक्त भक्ति भगवंत गुरु, चतुर नाम वपु एक ।
इनके पद वन्दन करे, नाशैं विघ्न अनेक ॥१॥

टीका–विशेषलक्षण ।

क०–हरिगुरुदासनसों सांचो सोई भक्त सही गही एक टेंक फिरि उरते न टरी है। भक्तिरसरूप को स्वरूप यहै छबिसार चारु हरिनाम लेत अश्रुवनि झरी है॥ वही भगवंत संतप्रीतिको विचार करे धरे दूरी ईशताहू पांडवनिसों क़री है। गुरु गुरुताईकी सचाई ले दिखाई जाहि गाई श्रीपै हरीजूकी रीति रंगभरी है॥९॥

आज्ञावर्णन ।

दोहा–मंगल आदि विचारि यह, वस्तु न और अनूप ।
हरिजनके यश गावते, हरीजन मंगलरूप ॥२॥
संतन मिलि निर्णय कियो, मथि पुराण इतिहास ।
भजवेको दोई सुघर, कै हरि कै हरिदास ॥३॥
अग्रदेव आज्ञा दई, भक्तनको यश गाव ।
भवसागरके तरनको, नाहिंन आन उपाव ॥४॥

टी०क०–मानसी स्वरूपमें लगे ह अग्रदासजू वे करत बयार नाभा मधुर सँभारसों॥ चढयो है जहाजपै जु शिष्य एक आपदामें कऱ्यो ध्यान सऱ्यो मन छूटयो रूपसारसों॥ कहत समर्थ गयो बोहित बहुत दूरि आवो छबि पूरि फिरि ढरो ताहि ढारसों। लोचन उघारिकै निरारि कही बोल्यो कौन वही जौन पाल्यो शीथ दै दै सुकुमारसों॥१०॥ अचिरज दयो नयो इहांलो प्रवेश भयो मनसुख छयो जान्यो संतनप्रभावको। आज्ञा तब दई यहै भई तोपै साधुकृपा उनहीको रूप गुण कहो हियभावको॥ बोल्यो कर जोरि याको पावत न ओर छोर गाऊं राम कृष्ण नहीं पाऊं भक्तदावको। कहि समुझाई वेई हृदै आय कहे सब जिन ले दिखाइ दियो सागरमें नावको॥११॥

नाभाजूकी आद्यावस्थावर्णन।

टी०क०–हनूमानवंशहीमें जनम प्रसिद्ध जाको भयो दृगहीन सो नवीन बात धारिये। उमर वरष पांच मानिकै अकाल आच मातु वन छोरि गई विपति विचारिये॥ कील्ह और अगर ताही डगर दरश दियो लियो यों अनाथ जानि पूंछि सो उचारिये बडे सिद्ध जल ले कमंडलुसों सींचे नैन चैन भयो खुले चक्षु जोडीको निहारिये ॥ १२ ॥ पांय परि आसूं आय कृपा करि संग ल्याय कील्ह आज्ञा पाय मंत्र अगर सुनायो है। गलते प्रगट साधुसेवा सो विराजमान जान अनुमान ताहि टहल लगायो है। चरण प्रक्षाल संत शीथसों आनंद प्रीति जानि रसरीति ताते हृदै रंग छायो है। भई बढवार ताको पावे कौन पारावार जैसो भक्तरूप सो अनूप गिरा गायो है ॥ १३ ॥

छप्पग–जय जय मीन वराह कमठ नरहरि बलि वामन।
परशुराम रघुवीर कृष्णकीरति जगपावन॥
बुद्ध कलंकी व्यास पृथू हरि हंस मन्वंतर।
यज्ञ ऋषभ हयग्रीव ध्रुव वरदेन धन्वंतर॥
बदरीपति दत्त कपिलदेव, सनकादिक करुणा करो।
चौविस रूप लीला रुचिर, अग्रदासउर पद धरो॥ ५॥

टी०क०–जेते अवतार सुखसागर न पारावार करैं विसतार लीला जीवनि उधारको। जाहि रूपमाहिं मन लगै जाके पगे तिहिं जगै हिये भाग वही पावे क्यों न पारको॥ सबही है नित्य ध्यान करतहि प्रकाशे चित्त जैसे रंक पावै वित्त जोपै जानै सारको। केशनि कुटिलताई ऐसे मीन सुखदाई अगर सुरीति भाई बसो उर हारको॥ १४ ॥

छप्पय–अंकुश अंबर कुलिश कमल यव ध्वजा धेनुपद।
शंख चक्र स्वस्तीक जंबुफल कलश सुधाहृद ॥
अर्धचंद्र षट्कोण मीन बिंदु ऊरधरेषा।

अष्टकोण रु त्रिकोण इंद्रधनु पुरुष विशेषा ॥
सीतापतिपद नित बसत, एते मंगलदायका ।
चरणचिह्न रघुवीरके, संतन सदा सहायका ॥ ६ ॥

टी० क०—संतनसहाय काज धारे नृपराज रामचरणसरोजनमें चिह्न सुखदाइये । मन है मतंग मतवारो हाथ आवे नाहिं ताके लिये अंकुश ले धाऱ्यो हिये धाइये ॥ शठता सतावे शीत तातेही अंबर धऱ्यो हऱ्यो जन-शोक ध्यान कीन्हे सुखदाइये । ऐसेही कुलिश पापपर्वतके फोरिवेको भ-क्तिनिधि जोरिवेको कंज मन ल्याइये ॥ १५ ॥ सुनो यवहेतु सदा दाता सिद्ध विद्याहीको सुमति सुगति सुखसंपतिनिवास है । छिनमें सभीत होत कलिकी कुचाल देखि ध्वजा सो विशेष जानो अभयको विश्वास है ॥ गोप-दसो होय भवसागर नागरजन जोपै नैन हियेमें लगावे मिटे त्रास है । कपट कुचाल मायाजाल सबै जीतवेको दरको दरश किये होत अनायास है ॥ १६ ॥ कामहू निशाचरके मारवेको चक्र धऱ्यो मंगल कल्याणहेत स्वस्तिकहु मानिये । मांगलिक जंबुफल चारहुको फल मनकामना अनेक विधि पूर्ण नित ध्यानिये ॥ कलश सुधाको सर भऱ्यो हरिभक्तिरस नैनपुु-टपान कीजे जीजे मन आनिये। भक्तिको बढावे औ घटावे तीन तापनको अर्धचंद्र धारण ये कारण है जानिये ॥ १७ ॥ विषय भुजंग वलमीक तन-मांहि बसे दासको न डसे तातें यत्न अनुसऱ्यो है । अष्टकोण षट्कोण औ त्रिकोण यंत्र किये जिये जोई जानि जाके ध्यान उर भऱ्यो है ॥ मीन बिंदु रामचंद्र कीन्हो वसिकर्ण पाय ताहीते निकाय जनमन जात हऱ्यो है। संसारसागरको न पारावार पावे तातें ऊर्ध्व रेखा दासनको सेतुबंध कऱ्यो है ॥ १८ ॥ धनु पदमाहिं धऱ्यो शोक ध्यानिनको मानिनको माऱ्यो मान रावणादि साखिये । पुरुषविशेष पदकमल बसायो राम हेतु सुनो अभि-राम श्याम अभिलाखिये ॥ सूधो मन सूधो बैन सूधी करतूत सब ऐसो जन होय मेरो याहिको जु राखिये । जोपै बुधिवंत रसवंत गुण संपतिमैं करि हिये ध्यान हरिनाम मुख भाखिये ॥ १९ ॥

छप्पय–विधि नारद शंकर सनकादिक कपिलदेव मनु भूप ।
नरहरिदास जनक भीष्म रु बलि शुक मुनि धर्मस्वरूप ।।
अंतरंग अनचुर हरिजूके जो इनको यश गावे ।।
आदि अंतलों मंगल तिनके श्रोता वक्ता पावे ।।
अजामील प्रसंग यह, निर्णय परम धर्मको जान ।
इनकी कृपा और पुनि समुझे, द्वादश भक्त प्रधना ।।७।।

टी०क०–द्वादश प्रसिद्ध भक्त राजकथा भागवत अतिसुखदाई नानाविधि करि गाये हैं । शिवजी की बात एक बहुधा न जानै कोउ सुनि सरसाने हिने भाव उरझाये हैं । सीताके वियोग राम विकल विपिन देखि शंकर निपुण सतीवचन सुनाये हैं । कैसे ये प्रवीन ईश कौतुक नवीन देखो मनेउ करत अंग वैसेही बनाये हैं ।।२०।। सीताको स्वरूप वेष लेशहु न फेरफार रामजू निहारि नेकु मनमें न आई है । तब फिरि आयकै सुनाय दई शकरको अति दुख पाय बहु विधि समुझाई है । इष्ट को स्वरूप धर्‍यो तातें तनु परिहर्‍यो पर्‍यो बडो शोच मति अतिभरमाई है । ऐसे प्रभुभावपगे पोथिनमें जगमगे लगे मोको प्यारे यह बात रीझि गाई है।।२१।। चले मग जात उभे खरे शिव दीठि परे करे परनाम हिये भक्ति लागी प्यारी है । पारवती पूंछै किये कौनको जु कहो मोसों दीराउ न जन कोउ तबलों उचारी है । वरष हजार दश बीते जहां भक्त भयो नयो और ह्वै है दूजे ठौर बीते धारी है । सुनिकै प्रभाव हरिदासनसों भाव बढ्यो रह्यो कैसे जात चढ़यो रंग अति भारी है।।२२।।

अजामीलजूका वर्णन

क०–धर्‍यो पितु मातु नाम अजामील सांजो भयो कियो अजामील छोटी तिया शूद्रजातकी ।। कियो मद्यपान सो सयान गहिदूरि डर्‍यो मार्‍यो तन वाहिसों जु कीनो लेके पातकी ।। करि परिहारि काहु दुष्टने पठायो साधु आय गृह देखि बुद्धि आय गई सातकी।।सेवा करि सावधान संतनि

रिझाय लियो नारायण नाम धरयो गर्भबाल बातकी ॥ २३ ॥ आय गह्यो काल मोहजालमें लपटि रह्यो महाविकराल यमदूतहू दिखाइये । वही सुत नारायण नाम जो कृपाकै दियो लियो सो पुकारि सुर आरति सुनाइये ॥ सुनतहि पारषद आये वाहि ठौर दौरि तोरि डारे पाश कह्यो धर्म समुझाइये । हारलौं बिडारे जाय पतिपै पुकारे कही सुनो बजमारे मति जावो हरि गाइये ॥ २४ ॥

छप्पय—विष्वक्सेन जय विजय प्रबल बल मंगलकारी ।
नंद सुनंद सुभद्र भद्र जगआमयहारी ॥
चंड प्रचंड विनीत कुमुद कुमुदाक्ष करुणालय ।
शील सुशील सुसेन भावभक्तन प्रतिपालय ॥
लक्ष्मीपति प्रीणन प्रवीण मह, भजनानंदभक्तानि हद ।
मो चित्तवृत्ति नित तहँ रहो, जहँ नारायणपारषद ॥ ८ ॥

टी०क०—पारषदमुख्य कहे षोडश स्वभावसिद्ध सेवाहीकी ऋद्धि हिये राखि बहु जोरिकै । श्रीपति नारायणके प्रीणन प्रवीण महा ध्यान करे जन पाले भावदृग कोरिकै ॥ सनकादि दियो शाप प्रेरिकै दिवायो आप प्रगट व्है कह्यो पियो सुधा मींजि घोरिकै । गहि प्रतिकूलताई जोपै यही मन भाई याते रीति हद गाई धरि रंग बोरिकै ॥ २५ ॥

छप्पय—कमला गरुड सुनंद आदि षोडश प्रभुपदरति ।
(हनूमंत) जांबुवंत सुग्रीव बिभीषण शबरी खगपति ॥
ध्रुव उद्धव अंबरीष विदुर अक्रूर सुदामा ।
चंद्रहास चित्रकेतु ग्राह गज पांडवनामा ॥
कौषारव कुंतीवधू, पट ऐंचत लज्जा हरी ।
हरिवल्लभ सब प्रारथों, जिनपदरज आशा धरी ॥ ९ ॥

टी०क०—हरिके जे वल्लभ हैं दुर्लभ भुवनमांझ तिनहीकी पदरेणु आशा जिय करी है। योगी यती तपी तासों मेरो कछु काज नाहिं प्रीति परतीति

रीति मेरी मति हरी है ॥ कमला गरुड जांबवान सुग्रीवादि सबै स्वादरूप कथा जाकी पोथिनमें धरी है । प्रभुसों सचाई जग कीरति चलाई अति मेरे मन भाई सुखदाई रसभरी है ॥ २६ ॥

हनुमान्‌जूका वर्णन ।

टी०क०—रतन अपार सार सागर उधार किये लिये हित चायके बनाय माला करी है । सब सुखसाज रघुनाथ महाराजजूको भक्तसो बिभीषणजू आनि भेंट धरी है ॥ सभाहीकी चाह अवगाह हनुमान गरे डारि दई सुधि भई मति अरबरी है । राम बिन काम कौन फोरि मनी दीने डारि खोलि त्वचा नामहिं दिखायो बुद्धि हरी है ॥ २७ ॥

बिभीषणजूका वर्णन ।

क०—भक्ति जो बिभीषणकी कहे ऐसो कौन जन तोपै कछु कहि जात सुनो चित लायके । चलत जहाज परी अटक विचार कियो कोउ अंगहीन नर दियो ले बहायके ॥ जाय लग्यो टापू ताहि राक्षसनि गोद लिये मोदभरि राजापास गये किलकायके । देखत सिंहासनते कूदि परे नैन भरि याहिके अकार राम देख भाग पायके ॥ २८ ॥ रचि सो सिंहासनपै लै बैठारे ताहि छिन राक्षसनि रीझ देत मानि शुभ घरी है । चाहत मुखारविंद अतिहि आनंदभरी ढरकत नैन नीर टेक टाढो छरी है ॥ तऊ न प्रसन्न होत छिन छिन छीन छोति हूजिये कृपाल कहो मेरी मति डरी है । करो सिंधुपार मेरे यहि सुखसार दिये रतन अपार ल्याए वाही ठौर फिरी है ॥ २९ ॥ रामनाम लिखि शीसमध्य धरि दियो याके यही जलपार करे भाव सांचो पायो है । ताही ठौर बैठ्यो मानो नयो और रूप भयो जो जहाज सोई फिर कारि आयो है ॥ लियो पहिचानि पूंछ्यो सबसों बखान कियो हियो हुलसायो सुनि विनैकै चढायो है । पर्‌यो नीर कूदि नेकु पाप न परस कर्‌यो हर्‌यो मन देखि रघुनाथनाम भायो है ॥ ३० ॥

शिवरीजूका वर्णन ।

क०-वनमें रहत नित सिवरी कहत सब चहति टहल साधु तन न्यूनताई है। रजनीके शेष ऋषि आश्रम प्रवेश करी लकरीन बोझ धरी आवे मन भाई है ॥ न्हाइवेको मग झारी कांकरिन बीनि डारी वेगि उठि जाइ नेकु जाति न लखाई है। उठत सबार कहें कौन धौं बुहारि गयो भयो हिये शोच कोऊ बडो सुखदाई है ॥ २१ ॥ बडेई असंग वे मतंग रसरंगभरे धरे देखि बोझ कह्यो कौन चोर आयो है । करे नित चोरी अहो गहो वाहि एक दिन विना पाए प्रीति वाकी मन भरमायो है ॥ बैठे निशि चौकी देत शिष्य सब सावधान आइ गई गहि लई कांपै तन नायो है। देखतहि ऋषि जलधारा चली नैननतै बैननसों कह्यो जात कहा कछु पायो है ॥ ३२ ॥ दीठिहू न सोंही होत मानि तन गोत छोत परी जाय सोच सोत कैसेकै निकारिये । भक्तिको प्रताप ऋषि जानत निपट नीके केऊ कोटि विप्रताई यापै वारि डारिये ॥ दियो वास आश्रममें श्रवणमें नाम दियो कियो मुनि रोष सेवा कीनी पाति न्यारिये । शिवरीसों कह्यो तुम रामदरशन करो मैं तो परलोक जात आज्ञा प्रभु पारिये ॥३३॥ गुरुके वियोग हिये दारुण ले शोग दिये जियो नहीं जात तौपै रामआस लागी है । न्हायवेके घाट निशि जातही बुहारि सब भई यों अबार ऋषि देखि व्यथा पागी है॥ छयो गयो नेकु बहु खीझत अनेक भांति करिकै विवेक गयो न्हान यह भागी है । जलसों रुधिर भयो नाना कृमि भरि गयो नयो पायो शोच तऊ जाने न अभागी है ॥ ३४ ॥ ल्यावे वन बेर लागी रामकी औसेर फल चाखे धरि राखे फेरि मीठे उन्हीं योग हैं । मारगमें रहे जाइ लोचन बिछाइ कभू आवें रघुराई दृग पावें निज भोग हैं ॥ ऐसेही बहुत दिन बीते मग जोवतहिं आइ गए औचकहि मिटे सब सोग हैं । जोपै तन न्यूनताई आई सुधि छीपि जाई पूंछे आप स्योरि कहां ठाढे और लोग है ॥ ३५ ॥ पूंछि पूंछि आए तहां शिवरीको स्थान जहां कहां वह भागवती हैं देखों दृग प्यासे हैं । आय गई आश्रममें

जानिकै पधारे आप दूरिहिते साष्टांग कारि चक्षु भासे हैं॥ हबकि उठाय लई व्यथा तन दूरि गई नई नीर झरी नैन परे प्रेमप्यासे हैं।बैठे सुख पाय फल खायके सराय वेई कह्यो कहा कहों मेरे मगदुःख नासे हैं ॥ २६ ॥ करत हैं शोच सब बैठे ऋषि आश्रममें जलको बिगार सो सुधार कैसे कीजिये । आवत सुने हैं वनपथ रघुनाथ कहूं आवें जब कहि याको भेद कहि दीजिये ॥ इतनेही मांझ सुनि स्यौरीके विराजे आनि गयो अभिमान चलो पग गहि लीजिये । आए खुनसाय कहि नीरको उपाय कहो गह्यो पग भीलनिके स्वच्छ तन भीजिये ॥ २७ ॥

खगपति जटायुजूका वर्णन ।

क०—जानकी हरण कियो रावण मरणकाज सुनि सीतावानी खगराज दौरि आयो है । बडीये लराई लीन देह बारि फोरि दीन राखे प्राण राम मुख देखवो सुहायो है ॥ आए आप गोद सीस धारि दृगधार सींच्यो देइ सुधि देइ गति जरायो है । दशरथतात मानि कियो जलदान यह अति सनमान निज रूप धाम पायो है ॥ ३८ ॥

अंबरीषजूका वर्णन ।

क०—अंबरीष भक्तकी जु रीस कोऊ करै और बडो मति बौर क्योंहूं जात नहीं भाषिये । दुरवासा ऋषि सीख सुनी नहिं काहू साधु मानि अपराध शिर जटा खेंचि नाखिये ॥ लेइ डपजाइ कालकृत्या विकरालरूप भूप महाधीर रह्यो ठाढो अभिलाषिये ।चक्रदुःख मानिकै कृशानुतेज राख करी परी भीर ब्राह्मणको भागवत साखिये ॥ ३९ ॥ भाज्यो दशों दिशा सब लोक लोकपालपास गयो नयो तेज चक्र चून किये डारे हैं। ब्रह्मा शिव कही यह टेव तुम बुरी करी दासनिको भेद नहिं जानैं वेद धारे हैं॥ पहुँचे वैकुंठ जाइ कह्यो दुःख अकुलाइ हाइ हाइ राखो प्रभु खरो तन जारे हैं। मैं तो हूं आधीन तीन गुणको न मान मेरे भक्तवात्सल्य गुण सबहीको टारे हैं ॥४०॥ मोको अतिप्यारे साधु इनको अगाध मन कऱ्यो अपराध

तुम सह्यो कैसे जात हैं । धाम धन वाम सुत प्राण तन त्याग करे ढरे मेरी और निशि भोर मोर बात हैं ॥ मेरेउ न संतविन और कछु सांची कहों जावो वाही ठौर जाते मिटें उतपात हैं । बडेई दयालु सदा दीनप्रतिपाल करैं न्यूनता न धरैं काहू भक्ति गात गात हैं ॥ ४१ ॥ है कारि निराश ऋषि आयो नृपपास चल्यो गर्वसों उदास पग गहे दीन भाख्यो है । राजा लाज मानि मृत्यु कहि सनमान कर्यो टर्यो चक्र और कर जोरि अभिलाख्यो है ॥ भक्तन सकाम कभू कासना न चाहत हैं चाहत हों विप्र दूरि करो दुःख चाख्यो है। देखिकै विकलताई सदा संतसुखदाई आई मनमांझ सब तेज ढांकि राख्यो है ॥ ४२ ॥ एक नृपसुता सुनि अंबरीषभक्तिभाव भयो हिये भाव ऐसो वर कारि लीजिये । पितासों निशंक ह्वैकै कही पति कियों मैंही विनै मानि मेरी वेगि चिठ्ठी लिखि दीजिये ॥ पाती लेके चल्यो विप्र क्षिप्र उहि पुरी गयो नयो चाव जान्यों तौपै कैसे तीय धीजिये । कहो तुम जाइ रानी बैठी सत आय मोको बोल्यो न सुहाय प्रभुसेवामांझ भीजिये ॥ ४३ ॥ कह्यो नृपसुता सो जु लीजिये जतन कौन पौन जिमि गयो आवो काम नहीं बियाको । फिरिकै पठायो सुख पायो मैं तो जान्यो यहै बडो धरमज्ञ वाके लोभ नहीं तियाको ॥ बोली अकुलाइ मन भक्तिहिं रिझाइ लियो कियो पति मुख नहिं देखों और पियाको । जाइकै निशंक तुम बात हय कहो मेरी चेरी जो न करो तौपै लेहु पाप जियाको ॥ ४४ ॥ कहि विप्र जाय सुनि चाय भई राय गयो दयो ले खडग यासों फेरा फेरी लीजिये । भयो जु विवाह उतसाह कहूं मात नाहिं आइ पुर अंबरीष देखि छबि भीजिये ॥ कह्यो नवे मंदिरमैं झारिकै बसेरा देवो देवो सब भोग विभौ नाना सुख कीजिये । पूरव जमन कोऊ मेरे भक्तिगंध हुती जाते सनबंध पायो यहै मान धीजिये ॥ ४५ ॥ रजनीके शेष पति भौनमें प्रवेश कियो लियो प्रेमसाथ ढिग मंदिरके आइये । बाहरि टहल पात्र चौका करि रीझि रही गही कौन जाय जामें होत न लखाइये ॥ आवतहि राजा

देखि लगै न निमेष क्योंहूं कौन चोर आयो मेरी सेवा ले चुराइये। देखि दिन तीन फिरि चीन्हिकै प्रवीन कही ऐसो मन जौपै प्रभु माथे पधराइये ॥ ४६ ॥ लई बात मानि मानो मंत्र ले सुनायो कान होतही विहान सेवा नीकी पधराई है। करत शृंगार फिरि आपही रहे लहे नहीं पार दृग झरीसी लगाई है। भई बढवार राग भोगसों अपार भाव भक्ति विसतार रीति पुर सब छाई है। नृपहु सुनत अब लागी चोप देखवेकी आए तत-काल मति अति अकुलाई है ॥ ४७ ॥ हरे हरे पांव धरे पौरिया न मने करे खरे अरबरे कब देखों भागभरीको। गए चलि मंदिरलों सुंदरी न सूंघि अंग रंग भीजि रहे दृग लाइ रहे झरीको ॥ बीन ले बजावै गावै लाल रिझावै त्यों त्यों अति मन भावै कहै धन्य यह घरीको। द्वारपें रह्यो न जाय गई ललचाइ ढिग भई उठि ठाढी देखि राजा गुरु हरीको ॥ ४८ ॥ वैसेही बजावो बीन तानन नवीन लैकै झीन स्वर कान परें जात मति खोइये। जैसे रंग भीजि रही कही सो न जात मोपै तौपै मन नैन चैन कैसे कारि गोइये ॥ करिकै अलापचारी फेरिकै सँवारी तान आइ गयो ध्यान रूप ताहीमांझ भोइये। प्रीति रसरूप भई रीति सब बीति गई नहीं कछु रीति अहो जामें नहीं सोइये ॥ ४९ ॥ बात सुनि रानी और राजा गण नई ठौर भई शिर मोर अब कौन बाकी सरी है। हमहूं ले सेवा करें पति मति वश करें धरैं नित ध्यान विषै बुद्धि राखि धरी है ॥ सुनिकै प्रसन्न भयो अति अंबरीष ईश लागी चोप फैलि गई भक्ति घर घरी है। बढे दिन दिन चाव ऐसोई प्रभाव कोऊ पलटे स्वभाव अहो आनंदको भरी है ॥५०॥

विदुरजीका वर्णन।

क०—न्हाताहि विदुरनारि अंगनि प्रक्षाल करि आय गण द्वार कृष्ण बोलिकै सुनायो है। सुनतहि सुरसुधि डारि लै निडरी मानो राख्यो मद भरि दौरि आनिकै चितायो है ॥ डारि दियो पीत पट कटि लपटाइ लियो हियो सकुचायो वेष वेगही बनायो है। बैठी ढिग आइ केरा छीलि छि-

लका खवाइ आयो पति खीज्यो दुःख कोटि गुनो पायो है ॥ ५१ ॥ प्रेमको विचारि आप लागे फलसारदेन चैन पायो हिये नारी बडी दुःखदाई है। बोले रीझि श्याम तुम कीन बडो काम तौपै स्वाद अभिराम कैसी वक्त मैं न पाई है॥ तिया सकुचाई कर काटि डारों हाय प्राणप्यारेको खवाइ छीलि छिलकानि भाई है। हितहीकी बात दोऊ कोऊ पार पावै नाहिं नीके ले लडावै सोई जाने यह गाई है॥ ५२ ॥

सुदामाजूका वर्णन।

क०—बडो निहकाम सेर चूनहू न धाम ढिग आइ निजभाम प्रीति हरिसों जनाई है। सुनि शोच पऱ्यो हियो खरो अरबऱ्यो मन गाढो लेके कऱ्यो बोल्यो हांजू सरसाई है। जावो एक बार वह वदन निहारि आवो जोपै कछू पावो ल्यावो मोको सुखदाई है। कही भली बात सात लोकमें कलंक है है जानियत याही लिये कीन्ही मित्रताई है ॥ ५३ ॥ तिया सुनि कहै कृष्णरूप क्यों न चहै जाइ दहै दुःख आपही सो वचन सुनाए हैं। आई सुधि प्यारेकी विचारे मति डारे सब धारे मग पग झूमि द्वारावति आए हैं॥ देखिकै विभूति सुख उपज्यो अभूत कोऊ चल्यो मुखमाधुरीके लोचन तिसाए हैं। डरपत हियो ड्योढी लागि मन गाढो कियो लियो कर गहि चाह तहां पहुँचाए हैं॥ ५४ ॥ देखे श्याम आयो मित्र चित्रवत रहे नेकु हितको चरित्र दौरि रोइ गरे लागे हैं। मानो एक तन भयो लयो ऐसे छाति लाइ नयो यह प्रेम छुटे नाहीं अंग पागे हैं। आई दुबराई सुधि मिलनि छुटाई ताते आने जल रानी पांव धोए भाग जाने हैं। सेज पधराई गुरुचरचा चलाई सुखसागर बुडाई आप अति अनुरागे हैं॥ ५५ ॥ चिरवा छिपाए कांख पूंछे कहा ल्याए मोको अति सकुचाए भूमि तकैं दृग मीजे हैं। खैंचि लई गांठि मूठी एक मुखमांझ दई दूसरी यों लेत स्वाद पाइ आप रीझे हैं॥ गह्यो कर रानी सुखसानी प्यारो वस्तु पायो बांटि मानी श्रीसुदामा प्रेमरंग भीजे हैं। श्याजू विचारि दीन्ही संपती अपार बिदा भये पै न जा०

नी सार बिछुरन छीजे हैं ॥ ५६ ॥ आए निज ग्राम यह अति अभिराम भयो भयो पुरद्वारिकासो देखि मति गई है। तिया रँगभीनी संग सतनि सहेली लीनी कीनी मनुहारि यों प्रतीति उर भई है ॥ वहै हरिध्यान रूप माधुरीको पान तासों राखैं निज प्रान जाके प्रीति रीति भई है। भोगकी न चाह ऐसे तन निरवाह करे टरे सोई चाल सुखजाल रसमई है ॥ ५७॥

चंद्रहासजूका वर्णन।

क०—हुतो नृप एक ताको सुत चंद्रहास भयो परी यों विपत्ति धाई लाई और पुर है। राजाको दिवान ताके रही घर आनि बाल आपने समान संग खेलै रस दुर है॥ भयो ब्रह्मभोज कोई ऐसोई संयोग बन्यो आये वे कुमार जहां विप्रनको सुर है। बोलि उठे सबै तेरी सुताको जू पति यहै हुवो चाहै जानि सुनि गयो लाज धुर है ॥ ५८ ॥ पर्यो शोच भारी कहा करों यों विचारी अहो सुता जो हमारी ताको पति ऐसो चाहिये। डारो याहि मारि याको यह है विचार तब बोलि नीच जन कह्यो मारो हिय दाहिये ॥ लैकै गए दूरि देखें बालछबि पूरि हम योनि परै धूरि दुःख ऐसो अवगाहिये। बोले अकुलाय तोहिं मारेंगे सहाय कौन मांगों एक बात जब कहो तब चाहिये ॥ ५९ ॥ मानि लीनो बोल वे कपोलमधि गोल एक गंडकीको सुत काढि सेवा नीकि कीनी है। भयो तदाकार यों निहार सुखभार भरे नैननकी कोरहिसों आज्ञा वध दीनी है ॥ गिरे मुरझाइ दया आई कछु भाइ भरे ढरे प्रभु ओर मति आनँदसों भीनी है। हुती छठी आंगुरी सुकाटि लई दूषणहु भूषणहु भयो जाइ कहि सांच चीनी है ॥ ६० ॥ वहै देश भूमिमें रहत लघु भूप और और सुख सब एक सुतचाह भारी है। निकस्यो विपिन आनि देखि याहि मोद मानि कीनी खगछांह घेरे मृगपति सारी है ॥ दौरिकै निशंक लियो पाइ निधि रंक जियो कियो मन भयो सो बधायो श्रीय बारी है। कोऊ दिन बीते नृप भये चित्त चिंते दियो राजको तिलक भाव भक्ति विसतारी है ॥ ६१ ॥ रहे जाके देश सो नरेश कछु पावे नाहिं बांह बल जोर दियो सचिव पठाइकै। आयो घर जानि कियो अति-

सनमान सो पिछानि लियो वहै बाल मार्‍यो छल छाइकै ॥ दई लिखि चिठी जाहु मेरे सुत हाथ दीजो कीजो वही बात जाको आयो लेखि खाइकै । गए पुरपास बाग सेवा मति पाग कारि भारि दृग नींद नेकु सोयो सुख पाइकै ॥ ६२ ॥ खेलती सहेलिनसों आई वाही बागमांझ करी अनुराग भई न्यारी देखि रीझी है । पागमधि पाती छबिमाती झुंकि खैंचि लई बांचि खोलि लिख्यो विष देन पिता खीझी है ॥ विषया सुनाम अभिराम दृग अंजनसों विषया बनाई मन भाई रसभीजी है । आई मिलि आलिनमें लालनको ध्यान हिये पिये मद मानो गृह आई जब धीजी है ॥ ६३ ॥ उठ्यो चंद्रहास जिहि पास लिख्यो ल्यायो आयो देखि मन भायो गाढे गरेसों लगायो है। देई कर पाती बात लिखी मो सुहाति बोलि विप्र घरी एक मांझ व्याह उघरायो है ॥ करी ऐसी रीति डारे बडे नृप जीति श्रीय देत गई बीति चाव पारपै न पायो है । आयो पिता नीच सुनि धूम आई मीच मानों बानो लखि दूलहको शूल सरसायो है ॥ ६४ ॥ बैठ्यो ले एकांत सुत करी कहा भ्रांत सब कह्यो सो वृतांत कर पाती ले दिखाई है । बांचि आंच लागी मैं तो बडोई अभागी तोपै मारो मतिपागी बेटी रांडहू सुहाई है ॥ बोलि नीच जात बात कही तुम जावो मठ आवै तहां कोऊ मारि डारो मोहिं भाई है । चंद्रहासजूको भाष्यो देवि पूजि आवों आजु मेरी कुलपूज सदा रीति चलि आई है ॥ ६५ ॥ चलेई करन पूजा देशपति राजा कहि मेरे सुत नाहीं राज वाहीको दीजिये । सचिव सुवन सो जु कह्यो तुम ल्यावो जावो पावो नाहिं फेरि समै अब काम कीजिये ॥ दौर्‍यौ सुख पाइ चाइ मगहिमें लियो जाइ दियो सो पठाइ नृप रंगमांझ भीजिये । देवी अपमानते न डरो सनमान करो जात मारि डार्‍यो यासों भाख्यो भूप लीजिये ॥ ६६ ॥ काहु आनि कही सुत तेरो मार्‍यो नीचतने सींचनि शरीर जल दृग झरी लागी है । चल्यो ततकाल देखि गिर्‍यो है विहाल सीस पाथरसो फोर्‍यो मर्‍यो ऐसोई अभागी है॥ सुनि चंद्रहास चलि वेगि मठपास आय

ध्याय गग देवताके काटि अंग सगी है । कह्यो तेरो दोषी याहि क्रोध करि मार्‍यो मैंही उठे दोउ दीजै दान जिये बडभागी है ॥ ६७ ॥ कर्‍यो ऐसो राज सब देश भक्त राज कियो ढिगको समाज ताकी बात कहा भाखिये । हरि हरि नाम अभिराम धाम धाम सुने और काम कामना न सेवा अभिलाखिये ॥ काम क्रोध लोभ मद आदि लेके दूरि किये जिये नृप पाइ ऐसो नैननिमें राखिये । कही जिती बात आदि अंतलों सुहात हिये पढे उठि प्रात फल जैमिनि है साखिये ॥ ६८ ॥

समुदायका वर्णन ।

क०—कौषारव नाम जो बखान कियो नाभाजूने मैत्रेय अभिराम ऋषि जानि लीजे बातमें । आज्ञा प्रभु दई जाहु विदुर है भक्त मेरो करो उपदेश रूप गुण गात गातमें ॥ चित्रकेतु प्रेमकेतु भागवत ख्यात जाते पलट्यो जनम प्रतिकूल फल घातमें । अक्रूर ध्रुव आदि भए सब भक्त भूप उद्धवसे प्यारे नीके ख्यात पात पातमें ॥ ६९ ॥

कुंतीजूका वर्णन ।

क०—कुंती करतूति कैसे करै कौन भूत प्राणी मांगत विपत्ति जासों भाजें सब जन है । देख्यो मुख चाहौं लाल देखे बिन हिये साल हूजिये कृपालु नहिं दीजे वास वन है ॥ देखि विकलाई प्रभु आंखि भरि आई फिरि घरहिको ल्याई कृष्ण प्राण तन धन है । श्रवण वियोग सुनि तनक न गयो भयो वपु न्यारो अहो एही सांचोपन है ॥ ७० ॥

द्रौपदीजूका वर्णन ।

क०—द्रौपदी सतीकी बात कहै ऐसा कौन पटु खेंचतेही पट पट कोटि-गुने भए हैं । द्वारिकाके नाथ कहि बोली जब साथ हुते द्वारिकासों फिरि आए भक्त बानि नए हैं ॥ गये दुर्वासा ऋषि वनमें पठाये नीच धर्मपुत्र बोले बिनै आवो पन लए हैं । भोजन निवारि तिय आनि कही शोच पर्‍यो चाहे तन त्यागूं कह्यो कृष्ण कहूं गए हैं ॥ ७१ ॥ सुन्यो भागवतीको वचन भक्ति भाव भर्‍यो कर्‍यो मन आए श्याम पूज्यो हियकाम है । आवतहि

कही मोहिं भूख लागी देवो कछु महा सकुचाए मांगे प्यारो नहिं धाम है ॥ विश्वके भरनहार धरे हैं अहार अजू हमसों दुरावो कहि बानी अभिराम है। लग्यो शाकपत्र पात्र जलसंग पाइ गए पूरण त्रिलोकी विप्र गनै कौन नाम है ॥ ७२ ॥

छप्पय–योगेश्वर श्रुतदेव अंग मुचकुंद प्रियव्रत जेता।
पृथू परीक्षित शेष सूत शौनक परचेता ॥
शतरूपा त्रिसुता सुनीति सति सबहि मदालस।
यज्ञपत्नि व्रजनारि कीय केशव अपने वस ॥
ऐसे नर नारी जिते, तिनहीके गाऊं जसै।
पदपंकज वांछौं सदा, जिनके हरि उर नित बसै ॥१०॥

टी० क०–जिनहींके हरि उर नित बसैं तिनहींकी पदरेणु चैन देन आभरण कीजिये। योगेश्वर आदि रसस्वादमैं प्रवीण महा विप्र श्रुतदेव ताकी बात कहि दीजिये ॥ आये हरि घर देखि गयो प्रेम भर हियो ऊंचो कर करि पट फेरि मति भीजिये। जिते साधु संग तिन्हैं विनय प्रसंग कियो कियो उपदेश मोसों बढि पांव लीजिये ॥ ७३ ॥

छप्पय–प्राचीनबर्हि सत्यव्रत रहूगण सगर भगीरथ।
वाल्मीकि मिथिलेश गए जे जे गोविंदपथ ॥
रुक्मांगद हरिचंद भरत दधीचि उदारा।
सुरथ सुधन्वा शिबिरु सुमति अति बलिकी दारा ॥
लील मोरध्वज ताम्रध्वज, अलर्क कीरति राचि हौं।
अंघ्रीअंबुज पांसुको, जन्म जन्म हौं याचि हौं ॥ ११ ॥

टी०क०–जनम जनमको न मेरे कछु शोच अहो संतपदकंजरेणु सीसपर धारिये। प्राचीनबर्हिक आदि कथा परसिद्ध जग उभै वालमीक बात चितते न टारिये ॥ भए भील संग भील ऋषिसंग ऋषि भए रामदर्शन पाय

लीला विसतारिये। चिन्हैं जग गाइ क्योहूं सकै न अघाइ चाइ भाइ भरि हियो भारि नैन भारि डारिये ॥ ७४ ॥

श्वपच वाल्मीकिजूका वर्णन।

क०—हुतो वाल्मीक एक श्वपच सुनाम ताको श्यामल प्रगट कियो भारतमें गाइये। पांडवनिमाधि मुख्य धर्मपुत्र राजा आप कीनो यज्ञ भारी ऋषि आये भूमि छाइये ॥ ताको अनुभाव शुभ शंखसों प्रभाव कहै जोपै नहिं बाजै तौ अपूरणता आइये। सोई बात भई वह बाज्यो नाहिं शोच पऱ्यो पूंछ्यो प्रभुपास याकी न्यूनता बताइये ॥ ७५ ॥ बोले कृष्णदेव याको सुनो सब भेव तौपै नीके मानि लेव बात दूरि समझाइये। भागवत संत रसवंत कोऊ जेंयो नाहिं ऋषिन समूह भूमि चहूं दिशि छाइये ॥ जोपै कहो भक्त नाहिं नाहिं कैसे कहो ग्रास एक और कुल जातीसों बहाइये। दासनके दास अभिमान किन वास कहूं पूरणकी आस तौपै ऐसो लै जिवाइये ॥७६॥ ऐसो हरिदास पुरआसपास दीसे नाहिं बास बिन कोऊ लोक लोकनमें पाइये। तेरेई नगरमांझ निशि दिन भोर सांझ आवै जाइ तौपै कहूं बात न जनाइये। सुनि सब चौंकि परे भाव अचिरज भरे हरे मन नैन अजू बेगिही बताइये। कहा नाम कहां ठाम जहां हम जाय देखें लेखें कारि भाग धाय पांय लपटाइये ॥ ७७ ॥ जिते मेरे साधू कभू चाहें न प्रकाश भयो करों जु प्रकाश मानें महादुःखदाइये। मोको पऱ्यो शोच यज्ञपूरणकी लोच हिये लिये वाको नाम जनि गाम तजि जाइये ॥ ऐसे तुम कहो जामें रहो न्यारे प्यारे सदा हमहिं लिवाय ल्याय नीकेकै जिंवाइये। जावो वाल्मीकि घर बडो अव्यलीक साधु कियो अपराध हम दियो जो बताइये ॥ ७८ ॥ अर्जुन औ भीमसेन चले इन मित्रनको अंतर उघारि कह्यो भक्तिभाव दूर है। पहुँचे भवन जाय चहूं दिशि फिरे आय परे भूमि झूमि घर देख्यो छबिपूर है ॥ आये नृपराजनको देखि तजे काजनको लाजनसों कांपि कांपि भयो मन चूर है पांवनको धारिये जू जूंठनि ले डारिये जू पाप गृह

टारिये औ कीजे भाग भूर है ॥ ७९ ॥ जूंठनि ले डारे सदा द्वारको बुहारों नाहिं औरको निहारों अजू यही सांचोपन है । कहो कहि जेंवो कछु पाछे ले जिंवावों हमै जानि गई रीति भक्ति भाव तुमतन है ॥ तब तो लजानो हिये कृष्णपै रिसानो नृप चाहो सोई ठानो मेरे संग कोऊ जन है। भोरही पधारो अब यही उर धारो और भूलि न विचारो कही भले जोपै मन है ॥ ८० ॥ कही सब रीति सुनि धर्मपुत्र प्रीति भई करी लै रसोई कृष्ण द्रौपदी सिखाई है। जेतिक प्रकार सब व्यंजन सुधारि करो आजु तेरे हाथनकी होती सफलाई है ॥ ल्याय जा लिवाय कहे बाहिर जिंवाय देवो कहि प्रभु आप ल्यावो अंक भरि भाई है। आनिकै बैठायो पाकशालामें रसाल ग्रास लेत बाज्यो शंख हरि दंडकी लगाई है॥ ८१॥ सीथ सीथ प्रति क्यों न बाज्यो कछु लाज्यो कहा भक्तको प्रभाव तूं न जानत यों जानिये । बोल्यो अकुलाइ जाइ पूंछो अजू द्रौपदीको मेरो दोष नाहिं यह आप मन आनिये ॥ मानि सांच बात जाति बुद्धि आइ देखि याहि सबहि मिलाई मेरी चातुरी बिहानिये । पूंछेते कही है वालमीकमें मिलायो याते आदि प्रभु पायो पाऊं स्वाद उनमानिये ॥ ८२ ॥

रुक्मांगदजूका वर्णन ।

क०—रुक्मांगद बाग शुभ गंध फूल पागि रहे कारि अनुराग देववधू लेन आवहीं। रह गई एक कांटो चुभ्यो पग बैंगनको सुनि नृप माली पास आए सुख पावहीं ॥ कहो को उपाय स्वर्गलोकको पठाय दीजे करे एकादशी जल धरे कर जावहीं । व्रतको तो नाम इहि ग्राम कोउ जाने नहीं कीनो व्है अजान काल्हि लावो गुन गावहीं ॥ ८३ ॥ फेरी नृप डौंडी सुनि वनिककी लौंडी भूखी रही ही कनौडी निशि जागि उन मारिये। राजाढिग आनि कारि दियो व्रतदान भई यों तिय उडानि निजलोकको पधारिये ॥ महिमा अपार देखि भूपने विचारि याको कोउ अन्न खाय ताहि बांधि मारि डारिये । याहिके प्रभाव भाव भक्तिको विस्तार भयो नयो चोज सुनो सब

पूरी ले उधारिये ॥ ८४ ॥ एकादशीव्रतकी सँचाई ले देखाई राजा सुताकी निकाई सुनो नीके चित्त लाइके । पिता घर आयो पति भूंखने सतायो अति मांगे तियापास नहीं दियो यह भाइके ॥ आजु हरिवासर सो तासर न कोऊ पूछे डर कहा मीचको यों मानि सुख पाइके । तजे उन प्राण पाए वेगि भगवान वधू हिये सरसान भई कह्यो पन गाइके ॥ ८५ ॥

समुदायका वर्णन ।

क०–सुनो हरिचंदकथा विथा विन द्रव्य दियो तथा नहिं राखी बेंच्यो सुत तिया तन है । सुरथ सुधन्वाजुसों दोषके करत मरे शंख औ लिखित विप्र भयो मैलो मन है ॥ इंद्र औ अगनि गए शिबिपै परीक्षा लेन काटि दियो मांस रीझी सांचो जान्यो पन है । भरत दधीचि आदि भगवतबीच गाए सबनि सुहाए जिन दियो तन धन है ॥ ८६ ॥

बलिकी दारा विंध्यावलीजीका वर्णन ।

क०–विंध्यावलि तियासी न देखी कहूं तिया नैन बांध्यो प्रभु पिया देखि कियो मन चौगुनो । करि अभिमान दान देन बैठ्यो तुमहीको कियो अपमान मैं तो मान्यो सुख सौगुनो ॥ त्रिभुवन छीनि लियो दियो वैरी देवतानि प्राणमात्र रहे हेरि आन्यो नहिं औगुनो । ऐसी भक्ति होइ जोपै जागै रहै सोई अहो रहे भवमांझ तौपै लागै नहीं भौगुनो ॥ ८७ ॥

मोरध्वजजूका वर्णन ।

क०–अर्जुनके गर्व भयो कृष्ण प्रभु जानि लयो दियो रसभारी याहि रोग ज्यों मिटाइये । मेरे एक भक्त आहि तोको ले दिखाऊं ताहि भये विप्रवृद्ध संग बाल चलि जाइये ॥ पहुँचत भाष्यो जाइ मोरध्वज राजा कहां वेगि सुधि देवो काहू बात या जनाइये । प्रभुसेवा करो नेकु रहो पांव धरो जाइ कहो तुम बैठो कहि आगसी लगाइये ॥ ८८ ॥ चले अनखाय पाय गहि अटकाय जाय नृपको सुनाय ततकाल दौरि आये हैं। बडी कृपा करी आजु फरी चाहबेलि मेरी निपट न बेल फल खायो जाते पाये हैं ॥

दीजे आज्ञा मोहिं सोई कीजो सुख लीजे वही पीजे रसवानि मेरे नैन ले सिराये हैं। सुनि क्रोध गयो मोद भयो सो परीक्षा हिये लिये चित्त चाव ऐसे वचन सुनाये हैं॥ ८९॥ देवकी प्रतिज्ञा करो करी जू प्रतिज्ञा हम जाही भांति सुख तुम्हें सोई मोको भाई है। मिल्यो मग सिंह इहि बालकके खाये जात कही खावो मोहिं नहिं याहि सुखदाई है॥ काहू भांति छोडों नृप आधो जो शरीर आवै तोहिं याहि तजों कहि बात यों जनाई है। बोलि उठी तिया अरधांगी मोहिं जाइ देवो पुत्र कहे मोको लेवो और सुधि आई है॥ ९०॥ सुनो एक बात सुत तिया ले करौंत गात चीरें धीरे धीरे नाहिं पीछे उन भाखिये। कीनी वाही भांति अहो नासा लगि आयो जब ढरयो दृग नीर भीर बाकरी न चाखिये॥ चले अनखाय गहि पांय सो सुनाय बैन नैन जल आयो अंग काम किहि नाखिये। सुनि भरि आयो हियो निजतन श्याम कियो दियो सुखरूप विथा गई अभिलाखिये॥ ९१॥ मोपै तो न दियो जाइ निपट रिझाइ लियो तऊ रीझि दिये बिना मेरे हिये साल है॥ मांगों वर कोट चोट बदलो न चूकत है सूखत है मुख सुधि आए वही हाल है॥ बोल्यो भक्तराज तुम बडे महाराज कोऊ थोरोई करत काज मानो कृतजाल है। एक मोको दीजे दान दियो जू बखानि वेगि साधुपै परीक्षा जिन करो कलिकाल है॥ ९२॥

अलर्कजूका वर्णन।

अलरक कीरतिमें राचो नित सांचो हिये किये उपदेशहू न छुटै विषै-वासना। माताजू मदालसाकी बडिये प्रतिज्ञा सुनो आवे जो उदरमांझ फेरि गर्भ आसना॥ पतिको निहारो ताते रह्यो छोटो कारो वाको ले गये निकासि मिलि कासी नृपशासना। मुद्रिका उघारि औ निहारि दत्तात्रयजूको भये भवपार कारि प्रभुकी उपासना॥ ९३॥

छप्पय–ऋभु इक्ष्वाकू ऐल गाधि रघु अंग शतधन्वा।
अमूर्ति अरु रतिदेव उत्तं भूरिदेव वैवस्वतमन्वा॥

नहुष ययाति दिलीप पुरुष यदु गुह मान्धाता ।
पिप्पल निमि भारद्वाज दक्ष शरभंग संघाता ॥
संजय शमीक उत्तानपाद, याज्ञवल्क्य जग यश भरे ।
तिन चरणधूरि भूरि मो शिर, जे जे हरिमाया तरे ॥ १२ ॥

रंतिदेवजूका वर्णन ।

क०–अहो रंतिदेव नृप संतहि दुष्यंतवंश अतिहि प्रशंस सो आकाशवृति लई है। भूंखेको न देखि सके आवे सो उठाइ देत नेत नहिं करे भूंखे देइ छीन भई है ॥ चालीस औ आठ दिन पीछे जल अन्न आयो दियो विप्र शूद्र नीच श्वान यह नई है। हरिहिं निहारे उनमांझ तब आये प्रभु भाये जगदुःख जिते भोगो भक्ति छई है ॥ ९४ ॥

गुहरामजूका वर्णन ।

क०–भील नीको राजा गुह राम अभिराम प्रीति भयो वनवास मिल्यो मारगमें आइकै। करो यह राज जू विराज सुख दीजे मोको बोले चैनसाज तज्यो आज्ञा पितु पाइकै ॥ दारुण वियोग अकुलात दृग अश्रुपात पीछे लोहू जात वह सकै कौन गाइकै। रहै नैन मूंदि रघुनाथ बिन देखे कहा अहो प्रेमरीति मेरे हिये रही छाइकै ॥ ९५ ॥ चौदह वरष पाछे आये रघुनाथ नाथ नाथके जे भील कहे आए प्रभु देखिये। बोल्यो अब पाऊं कहां होति न प्रतीति क्योंहूं प्रीति करि मिले राम कही मोको पेखिये ॥ परसि पिछाने लपटाने सुखसागर समाने प्राण पाये मानो भाल भाग लेखिये । प्रेमकी जो बात क्योहूं बानीमें समात नहीं अति अकुलात कहो कैसेकै विशेखिये ॥ ९६ ॥

छप्पय–कवि हरि करभाजनै भक्तिरत्नाकर भारी ।
अंतरिक्ष अरु चमसअनन्यता पद्धति उघारी ॥
प्रबुध प्रेमकी राशि भूरिदा आविरहोता ।
पिप्पल द्रुमिल प्रसिद्ध भवाब्धि पारके पाता ॥

जयंतीनंदन जगतके, त्रिविध ताप आमयहरण ।
निमि अरु नव योगेश्वरा, पाद त्राणकी हौं शरण ॥१३॥
श्रवण परीक्षित सुमति व्यास सा वक कीरतन ।
सुठि सुमिरन प्रहलाद प्रथूपूजा कमला चरन निमन ॥
वंदन सुफलक सुवदास दंपती दंपती कपीश्वर ।
सख्यत्व पार्थ समर्पण आत्म वलीधर ॥
उपजीवी इन नामके, एके त्राता अगतिके ।
पदपराग करुणा करो, जे नियंता नवधा भक्तिके ॥१४॥

परीक्षितजूका वर्णन ।

टी०क०—श्रवणरसिक कहूं सुने न परीक्षितसे पानहू करत लागै कोटि गुणी प्यास है। मुनिमनमांझ क्योंहू आवत न ध्यावतहू वही गर्भमांझ देखि आयो रूपरास है ॥ कही शुकदेवजूसों टेव मेरी लीजे जानि प्राण लागे कथा नहीं तक्षकको त्रास है । कीजिये परीक्षा उर आनि मति सानी अहो बानी विरमानी जहां जीवन निरास है ॥ ९७ ॥

श्रीशुकदेवजूका वर्णन ।

टी०क०—गर्भते निकसि चले वनहीमें कियो वास व्याससे पिताको नहिं उत्तरहु दियो है । दशमश्लोक सुनि गुनि मति हरि गई लई नई रीति पढि भागवत लियो है ॥ रूप गुण भर सह्यो जात कैसे करि आए सभा नृप ढरि भीज्यो प्रेमरस हियो है । पूंछे भक्त भूप ठौर परे भौंर जाइ गाइ डठे जबै मानो अबै रंगझर कियो है ॥ ९८ ॥

प्रह्लादजूका वर्णन ।

क०—सुमिरण सांचो कियो लियो देखि सबहीमें एक भगवान कैसे काटे तरवार है । काटियो खडग जल बोरी सकती है जाकी ताहिको निहारे चहुँ ओरसों अपार है ॥ पूंछेते बतायो खंभ तहांही दिखायो रूप प्रगट अनूप भक्तवानिहिसों प्यार है। दुष्ट डार्‍यो मारि गरे आंतें लई डारि तऊ क्रोधको न पार कहा कियो यों विचार है ॥ ९९ ॥ डरे शिवआदि

सब देख्यो नहीं क्रोध ऐसो आवत न ढिग कोउ लक्ष्मीहूको त्रास है। तब तो पठायो प्रहलाद अहलाद महा अहो भक्ति भाव पग्यो आयो प्रभु-पास है॥ गोदमें उठाइ लियो सीसपर हाथ दियो हियो हुलसायो कहि बानी विनैरास है। आई जग दया लागी परी श्रीनृसिंहजूको अऱ्यो यों छुटावो कऱ्यो माया ज्ञाननाश है॥ १००॥

श्वफल्कसुवन अक्रूरजीका वर्णन।

क०—चले अक्रूर मधुपुरीते बिसूरि नैन चली जलधारा कब देखों छबिपूरको। सगुन मनावे एक देखिवोई भावे देहसुधि बिसरावे लोट्यो लखि पगपूरको॥ वंदन प्रवीन चाह निपट नवीन भई दई शुकदेव कहि जीवनकी मूरको। मिले रामकृष्ण झिले पाइकै मनोरथको हिये दृग रूप किये चूर चूर चूरको॥ १॥

बलिराजाजूका वर्णन।

क०—दियो सर्वस्व करि अति अनुराग बलि पागि गयो हियो प्रहलाद सुधि आई है। गुरु भरमावे नीति कहि समझावे बोलि उरमें न आवे किती भीत उपजाई है॥ कह्यो जोई कियो सांचो भाव पन लियो अहो दीनो डर हरिहूने मति न चलाई। रीझे प्रभु रहे द्वार भये वश हार मानि श्रीशुक बखानी प्रीति रीति सोई गाई है॥ २॥

छप्पय—शंकर शुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना।
विष्वक्सेन प्रल्हाद बलि रु भीष्म सु जग जाना॥
अर्जुन ध्रुव अंबरीष बिभीषण महिमा भारी।
अनुरागी अक्रूर सदा उद्धव अधिकारी॥
भगवतभक्त उच्छिष्टकी, कीरति कहत सुजान।
हरिप्रसाद रसस्वादके, भक्त इते परधान॥ १५॥
अगस्त्य पुलस्त्य पुलह च्यवन वसिष्ठ सौभरि ऋषि।
कर्दम अत्रि ऋचीक गर्ग गौतम व्यास ऋषि॥
लोमश भृगु दालभ्य अंगिरा शृंगि प्रकाशी।

माण्डव्य विश्वामित्र दुर्वासा सहस्र अट्ठाशी ॥
याज्ञवल्क्यजामदग्निमयादसिकश्यपपरवतपाराशरपदरजधरों
ध्यान चतुर्भुज चित्त धर्‍यो, तिन्हें शरण हौं अनुसरों ॥१६॥
ब्रह्म विष्णु शिवलिंग पद्म स्कंद विस्तारा ।
वामन मीन वराह अग्नि अरु कूर्म उदारा ॥
गरुड नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त श्रवण शुचि ।
मार्कंड ब्रह्मांड कथा नाना उपजे रुचि ॥
परम धर्म श्रीमुखकथित, चतुरश्लोकी निगम तत ।
साधन साधि सत्रह पुराण, फलरूपी श्रीभागवत ॥ १७ ॥
मनुस्मृति आत्रेय वैष्णवी हारित यामी ।
याज्ञवल्क्य अंगिरा शनैश्चर समृतक नामी ॥
कात्यायनि शांडिल्य गौतमी वशिष्ठ दाषी ।
सुरगुरु आशा तापी पराशर कृतमनि भाषी ॥
आशा पाश उदार धीर, परलोक लोक साधनसो ।
दस आठ स्मृतिजिन उच्चरी, तिनपदसरासिजभालसो॥१८॥
सृष्टि विजयी जयंत नीतिपर शुचि रविनीता ।
राष्ट्रवर्धन निपुण सुराष्ट्र परम पुनीता ॥
अशोक सदा आनंद धर्मपालक तत्ववेता ।
मंत्रीवर्य सुमंत चतुर्युग मंत्री जेता ॥
अनायास रघुपति प्रसन्न, भवसागर दुस्तर तरें ।
पावें भक्ति अनपायिनी, जे रामसचिवसुमिरण करें ॥१९॥
दिनकरसुत हरिराज वालि बच्छ केशरि औरस ।
दधिमुख द्विविद मयंद रीछपति समको पौरस ॥
उल्का सुभट सुसेन दरीमुख कुमुद नील नल ।
शरभंग गय गवाक्ष पनस गंधमादन अतिबल ॥

पञ्च अठारह यूथपाल, रामकाज भट भीरके।
शुभ दृष्टि वृष्टि मोपर करो, जे सहचर रघुवीरके ॥ २० ॥
धरानंद ध्रुवनंद तृतीय उपनंद सुनागर।
चतुर्थ तहां अभिनंद नंद सुखसिंधु उजागर ॥
सुनंद पशुपाल निर्मल निश्चय अभिनंदन।
करमा धरमानंद अनुज विदित वल्लभ जगवंदन ॥
आसपास वा बगरके, जहां विहरत पशु पशु छंद।
व्रज बडे गोप पर्जन्यके, सुतनीके नव नंद ॥ २१ ॥
नंद गोप उपनंद ध्रुव धरा नंद महरि यशोदा।
कीरतिदा वृषभानुकुँवरि सहचरि विहरति मन मोदा ॥
मधु मंगल सुबल सुबाहु भोज अर्जुन श्रीदामा।
मंडलि ग्वाल अनेक श्याम संगी बहुनामा ॥
घोषनिवासनकी कृपा सुरनर वांछित आदि अज अज।
बाल वृद्ध नर नारी गोप, हौं अर्थी उन पादरज ॥ २२ ॥
रक्तक पत्रक अवर पत्र सबही मन भावे।
मधुकंठी मधुवर्त रसाल विशाल सुहावे ॥
प्रेमकंद मकरंद सदा आनंद चंद्रहासा।
पयद बकुल रसदान शारदा बुद्धि प्रकाशा ॥
सेवासमय विचारिकै, चारु चतुर चितकी लहैं।
व्रजराज सुवन संग सदन वन, अनुग सदा तत्पर रहैं॥२३॥
प्लक्ष शाल्मली बहुत राजऋषि।
कुश पवित्र पुनि क्रौंच कौन महिमा जाने लषि॥
शाक विपुल विस्तार प्रसिद्ध नामी अतिपुष्कर।
पर्वत लोकालोक ओक टापू कंचन धर॥
हरिभृत्य वसत जे जे जहां, तिनसों नितप्रति काज।

सप्तद्वीपमें दास जे, ते मेरे शिरताज ॥ २४ ॥
इलावर्त आधीश संकर्षणअगुण सदाशिव ।
रम्यक मछ मनु दास हिरण्मय कूर्म अर्यम इव ॥
कुरु वराह भूभृत्य वर्ष हरि नृसिंह प्रहलादा ।
किंपुरुष राम कपि भरत नारायण वीणानादा ॥
भद्राश्व ग्रीव हय भद्रश्रवा, केतुमाल कमला अनूप ।
मध्यद्वीप नवखंडमें, भक्त जिते मम भूप ॥ २५ ॥
नारायणको वदन निरंतर नाही देखें ॥
पलक परै जो बीच कोटि युग जात न लेखें ॥
तिनके दर्शनकाज गये तहां वीणा धारी ।
श्याम दई कर सेन उलटि अब नहिं अधिकारी ॥
नारायण आख्यान दृढ, तहां प्रसंग नाहिन तथा ।
श्वेतद्वीपमें दास जे, श्रवण सुनो तिनकी कथा ॥ २६ ॥

टी०क०—श्वेतद्वीपवासी सदा रूपके उपासी गए नारद विलासी उपदेश आश लागी है । देवी प्रभुसैन जिन आवो इहि ऐन दृग देखो सदा चैन मति अति अनुरागी है ॥ फिरे दुख पाइ जाइ कही श्रीवैकुंठनाथ साथ लिये चालि लखो भक्ति अंग पागी है । देख्यो एक सर खग रह्यो ध्यान धरि ऋषि पूंछे हरि कहौ कह्यो बडे बडभागी है ॥ ३ ॥ वरष इजार बीते भए नाहीं चित चितै प्यासोई रहत तौपै पानी नहिं पीजिये । पावै जो प्रसाद जब जीभसों सवाद लेत लेत नहीं और याकी मति रस भीजिये ॥ लीजै बात मानि जलपान करि डारि दियो लियो चोंच भारि दृगभारि बुद्धि धीजिये । अचरज देखि चष लगे न निमेष क्योंहूं चहूं दिशि फिरयो अब सेवा याकी कीजिये ॥ ४ ॥ चलो आगे देखौ कोड रहे न परेखो भाव भक्ति करि लेखो गए द्वीप हरि गाइये । आयो एक जन धाइ आरति समै बिहाई खैंचि लिये प्राण फेरि वधू याकी आइये ॥ वही इन कही पति देखि नहीं

मही पर्‍यो हर्‍यो याको जीव तन गिर्‍यो मन भाइये। ऐसे पुत्र आदि आये संचि हितमें दिखाये फेरिकै जिवाये ऋषि गाये चित लाइये ॥ ५ ॥

छप्पय—इलापुत्र मुख अनंत अनंतकीरति विस्तारत।
पद्मशंकु पण प्रगट ध्यान उरते नहिं टारत ॥
अश्रुकमल वासुकी अजित आज्ञाअनुवर्ती।
कर्कोटक तक्षक सुभद्र सेवा शिर धर्ती ॥
आगमोक्त शिवसंहिता, अगर एकरस भजनरति।
उरग अष्टकुल द्वारपाल, सावधान हरिधाम थिति ॥ २७ ॥
श्रीरामानुज उदार सुधानिधि अवनि कल्पतरु।
विष्णुस्वामी बोहित्त सिंधु संसारपार कर ॥
मध्वाचारय मेघ भक्ति सर ऊसर भरिया।
निंबादित्य आदित्य कुहर अज्ञान जु हरिया ॥
जनम करम भागवत धरम, संप्रदाय थापी अघट।
चौवीस प्रथम हरि वपु धरे त्यों चतुर्व्यूह कलियुग प्रगट ॥ २८ ॥

निंबादित्यजूका वर्णन।

टी०क०—निंबादित्य नाम जाते भयो अभिराम कथा आयो एक दंडी ग्राम न्योतो करि आए हैं। पाकको अबार भई संध्या मानि लई यति रतिहु न पाऊं वेद वचन सुनाए हैं॥ आंगनेमें निंब तापै आदित दिखायो वाहि भोजन करायो पाछे निशि चिह्न पाए हैं। प्रगट प्रभाव पेखि जान्यो भक्तिभाव जग दांव पाइ नाव पर्‍यो हर्‍यो मन गाए हैं॥ ६ ॥

दोहा—रमापति रामानुज, विष्णुस्वामि त्रिपुरारि।
निंबादित्य सनकादिक, मधुकर गुरु मुख चारि॥२९॥

छप्पय—विष्वक्सेन मुनिवर्य सपुन शठकोप प्रनीता।
बोपदेव भागवत लुप्त उधर्‍यो नवनीता॥
मंगल मुनि श्रीनाथ पुंडरीकाक्ष परमयश।

रामभिश्र रसराशि प्रगट परताप परांकुश ॥
यामुन मुनि रामानुज, तिमिरहरण उदय भान ।
संप्रदायशिरोमणि सिंधुजा, रच्यो भक्तिवितान ॥ ३० ॥
गोपुर व्है आरूढ ऊंच स्वर मंत्र उचाऱ्यो ।
सूते नर परे जागि बहत्तरि श्रवणनि धाऱ्यो ॥
नित नेई गुरु देव पद्धति भई न्यारी ।
कुरु तारक शिष्य प्रथम भक्ति वपु मंगलकारी ॥
कृपणपाल करुणासमुद्र, रामानुजसम नहिं बियो ।
सहस्रास्य उपदेश करि, जगत उद्धारण जतन कियो॥३१॥

टी०क०—आस्य सो वदन नाम सहस्र हजार मुख शेषअवतार जानो वही सुधि आई है । गुरुउपदेश मंत्र कह्यो नीके राख्यो अंत्र जपतहि श्यामजूने मूरति दिखाई है ॥ करुणानिधान कहि सब भगवान पावे चढि दरवाजे सो पुकाऱ्यो धुनि छाई है । सुनि शिष लियो यों बहत्तरिहि सिद्ध भये नये भक्ति चोज यह रीति लेके गाई है ॥ ७ ॥ गये नीलाचल जगन्नाथजूको देखिवेको देख्यो अनाचार सब पंडा दूरि किये हैं । संग ले हजार शिष्य रंगभरी सेवा करें धरें हिये भाव गूढ दरसाइ दिये हैं ॥ बोले प्रभु वेई आवें करें अंगीकार मैं तो प्यारहीको लेत कभू औगून न लिये हैं । तऊ दृष्टि कीनी फिरि कही नहिं कान कीनी लीनी वेदवानी विधि कैसे जात छिये हैं ॥ ८ ॥ जोरावर भक्तसों बसाइ नहीं कही किती रतिहू न ल्यावे मन चोज दरसायो है । गरुडको आज्ञा दई सोई मानि उन शिष्यनसमेत निजदेश छोंडि आयो है ॥ जागिकै निहारे ठौर औरही मगन भये दये यों प्रगट कारि गूढभाव पायो है । वेई सब सेवा करैं श्यामसन हरैं सदा सांचो प्रेम हियेमाहिं प्रभुजू दिखायो है ॥ ९ ॥

छप्पय—श्रुतप्रज्ञ श्रुतदेव ऋषभ पुहकर ऋभु ऐसे ।
श्रुतिधामा श्रुति उदधि पराजित वामन जैसे ॥

रामानुज गुरुबंधु विदित जग मंगलकारी ।
शिवसंहिता प्रणीत ज्ञान सनकादिक सारी ॥
इंदिरापद्धति उदारधी, सभा साखि सारंग कहे ।
चतुर महंत दिग्गज चतुर, भक्ति भूमि दाबे रहे ॥ ३२ ॥
मालाधारी मृतक बह्यो सरितामें आयो ।
दाहकृत्य ज्यों बंधु न्यौति सब कुटुंब बुलायो ॥
नाक सकोचहिं विप्र हरिपुरते हरिजन आये ।
जेंवत देखे सबनि जात काहू नहिं पाये ॥
लालाचारज लक्षधा, प्रचुर भई महिमा जगति ।
श्रीआचारज जामातकी, कथा सुनत हरि होइ रति ॥ ३३ ॥

टी०क०—आचारजको जामात बात ताकी सुनो नीके करि पायो उपदेश संत बंधुकरि मानिये । कीजे कोटिगुणी प्रीति तौपै नवनीतरीति ताते इति करो याते घट तीन आनिये ॥ मालाधारी तनु साधु सरितामें बह्यो आयो ल्यायो घर फेरिकै विमान सब जानिये । गावत बजावत ले नीरतीर दाह कियो हियो सुख पायो सुख पायो समाधानिये ॥ ११० ॥ कियो सो महोछो ज्ञाति विप्रनको न्योतो दियो लियो मानि आयो नाहिं शंका दुःखदाइये । भये एक ठौर माया कीन्हे सब बौरे कछु कहे बात औरै मरी देह वही आइये ॥ याते नहिं खात वाकी जानत न जाति पांति बडो उतपात घर ल्याइ जाइ दाइये । मग अवलोकि उत परयो सुनि शोक हिये जिये आइ पूंछे गुरु कैसेकै निवाइये ॥ ११ ॥ चले श्रीआचारज ये वारिजवदन देखि करिहि साष्टांग बात कहि सो जनाइये । जावो निहशंक वे प्रसाद कौन जाने रंक जानि जे प्रभाव आवे वेगी दुखदाइये ॥ देखे नभ भूमिद्वार ऐहै निराधार जन वैकुंठनिवासी पांति ढिग व्हैकै आइये । इन्हैं अब जाने देवो जिनि कछु कहो आहो गहो करो हांसी जब घर जाइ खाइये ॥ १२ ॥ आय देखि पारषद गयो गिरि भूमि सद हद करी कृपा यह

जानि निज जनको। पायो ले प्रसाद स्वाद कहि अहलाद भयो नयो लयो मोद जान्यो सांचो संतपनको॥ बिदा व्है पधारे नभमगमें सिधारे विप्र देखत विचारे द्वार विथा भई मनको। गयो अभिमान आनि मंदिर मगन भयो नयो दृगलाज बीनि बीनि लेत कनको॥ १३॥ पाये लपटाये अंग धूरिमें लुटाये कहे करो मन भाये और दीन बहु भाख्यो है। कही भक्तराज तुम कृपामें समाज पायो गायो यों पुराणनमें रूप नैन चाख्यो है॥ छांडो उपहास अब करो निजदास हमैं पूजै हिये आस मन अति अभिलाख्यो है। किये परशंस मानो हंस ये परम कोऊ ऐसे जस लाख भांति घर घर राख्यो है॥१४॥

छप्पय–गुरु गमन कियो परदेश शिष्यनि स्वर्धुनी दृढाई।
एक मंजन नित पान एक हृदवंदन कराई॥
गुरुगंगामें प्रवेश शिष्यको बेगि बुलायो।
विष्णुपदी भय जानि कमलपत्रपर धायो॥
पादपद्म तादिन प्रगट, सब प्रसन्न मुनि परमरुचि।
श्रीमारग उपदेशकृत, श्रवण सुनो आख्यान शुचि॥३४॥

टी०क०–देवधुनीतीर सो कुटीर बहु साधु रहे रहे गुरु भक्त एक न्यारो नहीं व्है सके। चले प्रभु गांव जिन तजो बलि जाऊं कहि करो दास सेवा गंगामेंही कैसे छ्वै सके॥ क्रिया सब कूप करे विष्णुपदी ध्यान धरे रोसभरे संतश्रेणी भाव नहीं भ्वै सके। आये ईश जानि दुःख मानि सो बखान कियो आनि मन जानि बात अंग कैसे ध्वैसके॥ १५॥ चले ले अस्नान संग गंगामें प्रवेश कियो रंगभरी बोले सो अंगोछा वेगि ल्याइये। करत विचार शोचसागर न पावे पार गंगाजू प्रगट कह्यो कंजनपै आइये॥ चल्योई अधर पग धरे सो मधुर जाय प्रभु हाथ दियो लियो तारि भीर छाइये। निकसत धाय चाय पांय लपटाय गये बडोई प्रताप यह निशि दिन गाइये॥१६॥

छप्पय–देवाचारज द्वितीय महा महिमा हरियानंद।
तस्य राघवानंद भये भक्तनको मानंद॥

पत्रावलंब पृथिवी करि काशी स्थाई ।
चारि वरण आश्रम सबहीको भक्ति दृढाई ॥
तिनके रामानंद प्रगट, विश्वमंगल जिहिं वपु धऱ्यो ।
श्रीरामानुजपद्धति प्रताप, अवनि अमृत ह्वै अनुसऱ्यो॥३५॥
अनंतानंद कबीर सुखा सुरसुरा पद्मावति नरहरि ।
पीपा भावानंद रैदासधना सेन सुर सुरकी घर हरि ॥
औरौ शिष्य प्रशिष्य एकते एक उजागर ।
विश्वमंगल आधार भक्ति श्रद्धाके आगर ॥
बहुत काल वपु धारिकैं, प्रणतजननको पार दियो ।
श्रीरामानंद रघुनाथ ज्यों, द्वितीय सेतु जगतरण कियो ॥३६॥
योगानंद गयेश करम चंद अल्ह पैहारी सारि ।
रामदास श्रीरंग अवधि गुण महिमा भारी ॥
तिनके नरहरि उदित मुदित मोहामंगल तन ।
रघुवर यदुवर गाइ विमल कीरति संच्यो धन ॥
हरिभक्ति सिंधुवेला रचे, पाणिपद्म जा शिर दिये ।
अनंतानंदपद परसिकै, लोकपाल सेते भये ॥ ३७ ॥

श्रीरंगजूका वर्णन ।

टी०क०–द्यौसा एक गांव तहां श्रीरंग सुनाम हुतो बनिक सरावगी-की कथा ले बखानिये । रहतो गुलाम गयो धर्मराजधाम उहां भयो बडो दूत कही अरे सुन बानिये ॥ आए बनिजारे लैन देखि तू दिखावै चैन बेलश्रृंगमध्य बैठि मारे पहिंचानिये । बिन हरिभक्ति सब जगतकी यही गति भयो हरिभक्त श्रीअनंतपद ध्यानिये ॥ १७ ॥ सुतको दिखाइ देत भूत नित सूख्यो जात पूंछे कही बात जाइ बाको ठौर सोयो है । आयो निशि मारिवेको धायो यह रोष भऱ्यो देवो गति मोको उन बोलिकै सुनायो है ॥ जातिको सुनार परनारीलगि प्रेत भयो लयो तेरो शरण मैं ढूंढि

जग पायो है। दियो चरणामृत ले कियो दिव्य रूप वाको अतिहि अनूप सुनो भक्तिभाव गायो है॥ १८ ॥

छप्पय–जाके शिर कर धऱ्यो तासु करतर नहिं आड्यो।
अर्प्यों पद निर्वाण सोइ निर्भय करि छांड्यो॥
तेजपुंज बल भजन महामणि ऊरधरेता।
सेवत चरणसरोज राइ राना भुवि जेता॥
महिमा वंश दिनकर उदै, संतकमल हिय सुख दियो।
निर्वेदअवधिकलिकृष्णदास, अनपरिहरिपयपानकियो॥३८॥

पैहारिजूका वर्णन।

टी०क०–जाके शिर कर धरयो तातर न ओड्यो हाथ दीनो बडो वर राजा कुलकोजू साखिये। परवतकंदरामें दरशन दियो आनि दियो भाव साधु हरिसेवा अभिलाखिये॥ गिरी जो जलेबी थारमांझ ते उठाई बाल भयो हियसाल बिन अरपित चाखिये। लेकरि खडग ताको मारन उपाय कियो जियो संतओट फिरि मोलकरि राखिये॥ १९॥ नृपसुत भक्त बडो अबलों विराजमान साधुसनमानमें न दूसरो बखानिये। संत वधूगर्भ देखि उभै पनवारे दिये कही गर्भ इष्ट मेरो ऐसी उर आनिये॥ कोऊ भेखधारी सो सो व्योहारी पददासनको कही कृपा करो कहा जाने और प्रानिये। तोपै तजि दया क्रिया देखि जग बुरो होत जोत बहु दई दाम राम मतिं सानिये॥ १२०॥

छप्पय–कील्ह अगर केवलचरणव्रत हठी नारायण।
सूरज पुरुषा पृथु त्रपुर हरिभक्तिपरायण॥
पद्मनाभ गोपाल टेक टीला गदाधारी।
देवा हेम कल्याण गंगा गंगासम नारी॥
विष्णुदास कान्हर गंगा, चंदन सब हरिभजनपर।
पैहारी परसादते, शिष्य सबै भये पारकर॥ ३९॥

रामचरण चित बनै रहत निशिदिन लै लागी ।
सर्वभूत शिर नमित सूर भजनानंदभागी ॥
सांख्ययोगमन सुदृढ कियो अनुभो हस्तामल ।
ब्रह्मरंध्र करि गौन भयो हरितन करणीवल ॥
सुमेरदेवसुत जगविदित, भू विस्तार्यो विमल यश ।
गांगेय मृत्यु गंज्यो नहीं, त्यों कील्ह करण नहिं कालवश ।४०।

सुमेरदेवजूका वर्णन ।

टी०क०—श्रीसुमेरदेव पिता सो वे गुजरात हुते भयो तनपात सो विमान चढि चले हैं । बैठे मधुपुरी कील्ह मानसिंहराजढिग देखे नभ तात उठि कही भले भले हैं ॥ पूंछे नृप बोले कासों कैसेकै प्रकाशो कहो कह्यो हठ परे सुनि अचिरज रले हैं । मानुष पठाये सुधि ल्याये सांच आंच लागी करी जू साष्टांग बात मानि भाग फले हैं ॥ २१ ॥ ऐसे प्रभु लीन नहीं कालके आधीन बात सुनिये नवीन चाहै रामसेवा कीजिये । धरीही पिटारी फूलमाल हाथ डार्‍यो तहां व्याल कर काढ्यो कह्यो फेरि काढि लीजिये ॥ ऐसेही कटायो बार तीनि हुलसायो हियो कियो न प्रभाव नेकु सदा रस पीजिये । करिकै समाज साधुमध्य यों विराजमान तजे दशो द्वार योगी थके सुनि जीजिये ॥ २२ ॥

छप्पय--सदाचार ज्यों संत प्रीति जैसे करि आये ।
सेवा सुमिरण सावधान राघव चित लाये ॥
प्रसिद्ध वागसों प्रीति स्वहस्तकृत करत निरंतर ।
रसना निर्मल नाम मनहु वरषत धाराधर ॥
कृष्णदासकृपा करिभक्तिदत्त, मनवचक्रमकरिअटल दियो ।
श्रीअग्रदास हरिभजनबिन, काल वृथा नाहिं बीतयो ॥४१॥

अग्रदासजूकी बाग प्रीतिप्रसंगका वर्णन ।

टी०क०--दरशनकाज महाराज मानसिंह आयो छायो बागमांझ बैठे द्वार द्वारपाल हैं । झारके पतौवा गए बाहिर ले डारिवेको देखि भीर

भार रहे बैठिये रसाल हैं ॥ आये देखि नाभाजू साष्टांग नति करि ठाढे भारि जल आंखी चले अश्रुवनिजाल हैं। राजा मग चाहि हारि आनिकै निहारि नैन जानि आपजाति भये दासनि दयाल हैं ॥ २३ ॥

छप्पय–उच्छृंखल अज्ञान जिते अनईश्वरवादी ।
बौद्ध कुतर्की जैन और पाखंडहि आदी ॥
विमुखनिको दियो दंड ऐंचि सन्मारग आने ।
सदाचारकी सींव विश्वकीरतिहिं बखाने ॥
ईश्वरअंश अवतार महीमें, मर्यादा मांडी अघट ।
कलियुग धर्मपालक प्रगट, आचारज शंकर सुभट ॥ ४२ ॥

शंकराचार्यजूका वर्णन ।

टी०क०–विमुखसमूह लैकै किये सनमुख श्याम अति अभिराम लीला जग विसतारी है। सेवरा प्रबल वास केवरा ज्यों फैलि रहे गहे नहीं जाहिं वादी शुचि बात धारी है ॥ तजिकै शरीर काहू नृपमें प्रवेश कियो दियो करि ग्रंथ मोहमुद्गर भारी है। शिष्यनसों कह्यो कभू देहमैं आवेश जानो तबहीं बखानो आय सुनि कीजे न्यारी है ॥ २४ ॥ जानिकै आवेश तन शिष्यने प्रवेश कियो रावलेमैं देखि सो सुश्लोक ले उचार्‍यो है सुनतहि तज्यो तन निजतन आय लियो कियो सो प्रणाम दासपन पूरोपार्‍यो है॥सेवरा हराये वादी आये नृपपास उच्च छतपर बैठि एक मायाफंद डार्‍यो है। जल चढि आयो नाव भाव ले दिखायो कहें चढो नहीं बूडे आप कौतुकसों धार्‍यो है ॥ २५ ॥ आचारज कही यों चढावो इनि सेवरानि राजाने चढाये गिर टूक उडि गये हैं। तब तो प्रसन्न नृप पांव पर्‍यो भर्‍यो कह्यो जोई कर्‍यो धर्म यह भागवत लये हैं ॥ भक्तिहिं प्रचार पाछे मायावाद डारि दीनो कीनो प्रभु कह्यो किते विमुखहू भये हैं। ऐसे सो गंभीर संत धरि वह रीति जानें प्रीतिहिमें सानें हरिरूप गुणमये हैं ॥ २६ ॥

छप्पय–बालदशा विठ्ठल पानी जाके पय पीयो।
मृतक गऊ जिवाई परचो असुरनको दीयो ॥
सेज सलिलते काढी पहिलेही जैसी होती।
देवल उलटो देखि सकुचि रहे सबही सोती ॥
पंढरीनाथ कृत अनुग ज्यों, छानि स्वकर छाई घासकी।
नामदेवप्रतिज्ञा निर्वही, ज्यों त्रेता नरहरि दासकी ॥ ४३ ॥

टी०क०–छीपा वामदेव हरिदेवजूकों भक्त बडो ताकी एक बेटी पतिहीन भई जानिये। द्वादश वरषमांझ भयो तब कही पिता सेवा सावधान मन नीके करि आनिये॥ ते रे जे मनोरथ हैं पूरण करण एही जोपै दत्तचित्त व्हैकै मेरी बात मानिये। करत टहल प्रभु वेगिही प्रसन्न भये कीनी कामवासना सुपोखि उन मानिये ॥२७॥ विधवाको गर्भ ताकी बात चली ठौर २ दुष्टशिर मौरनीकी भई मन भाइये । चलत चलत वामदेवजूके कानपरी कारि निरधार प्रभु आप अपनाइये॥भयो जू प्रगट बाल नाम नामदेव धर्‍यो मनभायो सब संपति लुटाइये। दिन दिन बढ्यो कछू औरै रंग चढ्यो भक्तिभाव अंग मढ्यो कढ्यो रूप सुखदाइये॥ २८॥ खेलत खिलौना प्रीति रीति सब सेवाहीकी पढ पहिरावे पुनि भोगको लगावहीं। घंटा ले बजावे नीके ध्यान मन लावे त्यों त्यों अति सुख पावे नैन नीर भरि आवहीं॥ बार बार कहे नामदेव वामदेवजूसों देवो मोहिं सेवामांझ अतिही सुहावहीं। जाऊं एक गांव फिरि आऊं दिन तीन मध्य दूधको पिवावो मत पीवो मोहिं भावहीं ॥ २९ ॥ कौन वह बेर जेहि बेर दिन फेर होय फेर फेर कहे वह बेर नहीं आइये। आई वह बेर ले कराहीमांझ हेरी दूध डार्‍यो युग सेर मन नीकेकै बनाइये ॥ चोपनकी ढेर लागी निपट औसेरे दृग आवे नीर घेरि जिनि गिरे घूंटि जाइये। मात कहे टेर कारि बडीतैं अबेर अब करो मति झेर अजू चित दै औटाइये ॥ १३० ॥ चल्यो प्रभुपास ले कटोरा छबिरास तामें दूध सो सुवास मध्य मिश्री ले मिलाइये। हियमें हुलास निज अज्ञताको त्रास तौपै करे जोपै दास मोहिं

महासुखदाइये ॥ देख्यो मृदुहास कोटि चांदनीको भास कियो भावको प्रकाश माति अति सरसाइये । प्यायवेकी आश करि ओट कछु भरयो श्वास देखिकै निराश कह्यो पियोजू अघाइये ॥ २१ ॥ ऐसे दिन बीते दोय राखी हिये बात गोय रह्यो निशि सोय तौपै नींद नहीं आवही । भयो जु सबार फिरि वैसेही सुधार लियो हियो कियो गाढो जाय धरयो पीवो भावही ॥ बार बार पीयो कहूं अब तुम पीयो नाहिं आवै भोर नाना गरे छूरी दे दिखावही । गहि लियो कर जिनि करे ऐसी पीयों मैं तो पीवेको ले गई नेकु राखो सदा पावही ॥ ३२ ॥ आये वामदेव पाछे पूंछे नामदेवजूसों दूधको प्रसंग अतिरंगभर भाखिये। मोसों न पिछानि दिन दोई हानि भई जब मानि डर प्राण तज्यो चाहो अभिलाखिये ॥ पियो सुख दियो जब नेकु राखि लियो मैं तो जियो सुनि बातैं कहि प्यायो कौन साखिये । धरयो पै न पीये अरयो प्यायो सुख पायो नाना यामें ले दिखायो भक्तवश रस चाखिये ॥ ३३ ॥ नृप सो मलेछ बोलि कही मिले साहिबको दीजिये सिलाय करामात दिखराइये । होय करामात तौपै काहेको कसब करें भरें दिन तौपै बाटी संतनसों खाइये ॥ ताहीके प्रताप आप इहांलों बुलाय हमैं दीजिये बिदाई गाइ घर चलि जाइये। देइ ले जिंवाइ गाई सहज सुभाइहिमें अति सुख पाइ पाइ परयो मन भाइये ॥ ३४ ॥ लेवो देश गांव जाते मेरों कछु नाव होइ चाहिये न कछु दई सेज मणिमई है । धरि लई सीस दियो संग दशबीस नर नाहीं कारि आय जलमांझ डारि दई है ॥ भूप सुनि चौंकि परयो ल्यावो फेरि आय कहो कही नेकु आनिकै दिखावो कीजे नई है । जलते निकासि बहु भांति गहि डारि तट लीजिये पिछानि देखि सुधि बुधि गई है ॥ ३५ ॥ आनि परयो पांय प्रभुपासते बचाय लीजे कीजे एक बात कभू साधु न दुखाइये । लई यह मानि फेरि कीजिये न सुधि मेरी लीजिये गुनानि गाइ मंदिरले जाइये॥ देखि द्वार भीर पगदा कटि बांधी धीरसी करसौं उछीर करि चाहे पद गाइये । देखि लीन वेई काहु दीनी

पाच सात चोट कीनी धका धकी रीस मनमें न आइये ॥ ३६ ॥ बैठे पिछबार जाइ कीनी जु उचित यह लीनी जो लगाइ चोट मेरे मन भाइ-ये । कान देके सुनो अब चाहत न और कछू ठौर मोको यह नित नेम पद गाइये ॥ सुनतहि आनि कारि करुणा विकल भए फेरो द्वारईते गहि मंदिर फिराइये । जेतिक वे सोती मोती आबसी उतरि गई भई हिये प्रीति गहे पांव सुखदाइये ॥ ३७ ॥ औंचकहि घरमांझ सांझही अगिनि लागी बडो अनुरागी ताहि गई सोऊ डारिये । कहे अहो नाथ सब कीजिये जु अंगीकार हँसे सुकुमार हरि मोहिंको निहारिये ॥ तुम्हरो भवन और आइ कौन सके इहां भये यों प्रसन्न छानि छाई आप सारिये । पूंछे आनि लोग कौन छाई हो छवाइ लीजे दीजे जोई भावे तन मन प्राण वारिये ॥ ३८ ॥ सुनो और परिचै जे आये न कवित्त मांझ बांझ भई माता क्यों न जौन मतिपागी है । हुतो एक शाह तुलादानको उछाह भयो दयो पुर सबै रह्यो नामदेव रागी है ॥ ल्यावो जू बुलाइ एक दोई तो फिराइ दिये तीसरेसों आय कहा कहो बडभागी है । कीजिये जू कछु अंगीकार मेरो भलो होय तेरो भयो भलो दीजे जौपै आस लागी है ॥ ३९ ॥ जाके तुलसी है ऐसे तुलसीके पत्रमांझ लिख्यो आधो राम नाम यासों तोल दीजिये । कहा परिहास करो ढरो है दयाल देखि होत कैसो ख्याल याको पूरो करो रीझिये ॥ ल्यायो एक काटो ले च-ढायो पात सोनासंग भयो बडो रंग सम होत नाहिं छीजिये । लई सो तराजू तासों तुले मन पांच सात जाति पांतिहूको धन धर्‍यो पैं न धी-जिये ॥१४०॥ पर्‍यो शोच भारी दुःख पावें नरनारी नामदेवजू विचारी एक और काम कीजिये । जिते व्रतदान और स्नान किये तीरथमें करिये संकल्प यापै जल डारि दीजिये ॥ करेउ उपाइ पातपला भूमि छांडे नाहिं रहे वे खिसाय कह्यो इतनोई लीजिये । लेके कहां धरें सरवरहू न करें भक्ति भाव सो ले भरें हिये मति अति भीजिये ॥ ४१ ॥ कियो रूप ब्राह्मणको

दूबरो निपट अंग भयो हिये रंग व्रत परिचैको लीजिये । भई एकादशी अन्न मांगत बहुत भूंखो आजु तो न देहों भोर चाहो जितो लीजिये ॥ कर्‍यो हठ भारी मिलि दोउ ताको सोर पर्‍यो समझावे नामदेव याको कहो कीजिये । बीतें याम चारि मरि रहे यों पसारि पांव भाव पै न जाने देइ हत्या नहिं छीजिये ॥ ४२ ॥ रचिकै चिताको विप्र गोद लेकै बैठे जाइ दियो मुसकाइ मैं परीक्षा लीनी तेरी है । देखि सो सचाई सुखदाई मन भाई मे रे भये अंत्रध्यान परे पांय प्रीति हेरी है ॥ जागरणसांझ हरिभक्त-नको प्यास लगी गये लेन जल प्रेत आनि कीनी फेरी है । फेंटते निकासी ताल गायो पद ततकाल बडेई कृपाल रूप धर्‍यो छबिढेरी है ॥ ४३ ॥

छप्पय–प्रचुर भयो तिहुँ लोक गीतगोविंद उजागर ।
कोक काव्य नवरस न सरस शृंगारको सागर ॥
अष्टपदी अभ्यास करे तिहिं बुद्धि बढावे ।
राधारमण प्रसन्न सुनत निश्चय तहँ आवे ॥
संतसरोरुहखंडको, पद्मावति सुखजनक रवि ।
जयदेव कवि नृपचक्कवै, खंडमंडलेश्वर आन कवि ॥ ४४ ॥

जयदेवजूका वर्णन ।

टी० क०–किंदुबिल्वगाम तामें भये कविराज राज भरयो रसराज हियो मन मन चाखिये। दिन दिन प्रति रूख रूखतर जाइ रहे गहे एक गुदरी कमंडलुको राखिये ॥ कही देवै विप्रसुता जगन्नाथ देवजूको भयो जब समै चल्यो दैन प्रभु भाखिये । रसिक जैदेवनाम मेरो ईशरूप ताहि देवो तत-काल अहो मेरी कही साखिये ॥ ४४॥ चल्यो द्विज तहां बैठे कविराज राज अहो महाराज मेरी सुता यह लीजिये। कीजिये विचार अधिकार विस्तार जाके ताहीको निहारि सुकुवारि यह दीजिये ॥ जगन्नाथ देवजूकी आज्ञा प्रतिपाल करो ढरो मति धरो हिये नातो दोष भीजिये । उनको हजार सोहैं हमको पहार एक ताते फिरि जावो तुम कहा कहि खीजिये ॥ ४५ ॥ सुतासों कहत तुम बैठि रहो याही ठौर आज्ञा शिरमौर मेरी नहीं जाति

टारी है। चल्यो अनखाइ समझाइ हारे बातनसों मन तू समझ कहा कीजे सोच भारी है॥ बोलि द्विजबालकीसो अपनो विचार करो धरो हिये ज्ञान मोपै जात न संभारी है। बोली कर जोरि मेरो जोर न चलत कछु चाहो सोइ करो यह बारि फेरि डारी है॥ ४६॥ जानी जब भई तिया कियो प्रभु जोर मोपै तौपै एक झोपरीकी छाया करि लीजिये। भई तब छाया श्याम सेवा पधराइ सई नई एक पोथी मैं बनाऊं मन कीजिये॥ भयो जो प्रगट गीत सरस गोविंदजूको मानमें प्रसंग शीश मंडन सो दीजिये। यह एक पद मुख निकसत शोच पर्‍यो धर्‍यो कैसे जात लाल लिख्यो मति रीझिये॥ ४७॥ नीलाचल धाम तामें पंडित नृपति एक करी यहि नाम धरी पोथी सुखदाइये। द्विजन बुलाइ कही बोली लै प्रसिद्ध करो लिखि लिखि पढा देश देशनि चलाइये॥ बोले मुसकाइ विप्र क्षिप्र सो दिखाइ दई नई यह कोउ मति अति भरमाइये। धरी दोउ मंदिरमें जगन्नाथदेवजूके दीनी यह डारि वाहि हार लपटाइये॥ ४८॥ पर्‍यो शोच भारी नृप निपट खिसानो भयो गयो उठि सागरमें बूडो वही बात है। अति अपमान कियो कियो मैं बखान सोई सोई जात कैसे आंच लागी गात गात है॥ आज्ञा प्रभु दई मत बूडे तू समुद्रमांझ दूसरो न ग्रंथ ऐसो वृथा तनपात है। द्वादश सुश्लोक लिखि दीजे सर्ग द्वादशमें ताहि संग चले जाकी ख्याति सब पात है॥ ४९॥ सुता एक मालीकी जू बैंगनकी बारी मांझ तोरे वनमाली गावे कथा सर्ग पांचकी। डोलैं जगन्नाथ पाछे काछे अंग मिहीं झँगा आछे कहि घूमे शुधि आवे ब्रह्म आंचकी॥ फट्यो पट देखि नृप पूंछी अहो भयो कहा जानत न हम अब कहो बात सांचकी। प्रभुहिं जनाय मन भाय मेरे वही गाथा ल्याय यहि बलकीको पालकीमें नाचकी॥ १५०॥ फेरी नृप डौंडी यह औंडी बात जानि महा कही राजा रंक पढे नीकी ठौर जानिकै। अक्षर मधुर और मधुर स्वरनहीसों गावे जब लाल प्यारीढिग हिले मानिकै॥ सुनि यह रीति एक मुगलने धारि

लई पदै चढे घोरे आगे श्यामरूप ठानिकै। पोथीको प्रताप स्वर्ग गावत हैं देववधू आपही जू रीझ लिख्यो निजकर आनिकै ॥ ५१ ॥ पोथीकी तो बात सब कही मैं सुहात हिये सुनो और बात जामैं अति अधिकाइये । गांठिमें मुहर मग चलतमैं ठग मिले कहो कहां जात जहां तुम चलि जाइये ॥ जानि लई बात खोलि द्रव्य पकराई दियो लियो चाहो जोई जोई सोई मोको ल्याईये । दुष्टनि समुझि कहि कीनी इन विद्या अहो आवें जो नगर इन्हे बेगि पकराइये ॥ ५२ ॥ एक कहे डारो मारि भलो है विचार यहीं एक कहे मारो मत धन हाथ आयो है । जोपै ले पिछान कहो कीजिये निदान कहा हाथ पाव काटि बडे गाड पधरायो है ॥ आयो तहां राजा एक देखिकै विवेक भयो लयो उजियारो औ प्रसन्न दरशायो है । बाहिर निकासी मानो चंद्रमा प्रकाशराशि पूंछ्यो इतिहास कह्यो ऐसो तन पायो है ॥ ५३ ॥ बडेई प्रभाववान सकै को बखानि अहो सेर कोउ भूरि भाग दरशन कीजिये । पालकी बैठाइ लिये किये सब ठूंठ नीके जीके भाय भये कछु आज्ञा मोहिं दीजिये ॥ करो हरिसाधुसेवा नाना पकवान मेवा आवे जोई संत तिन्हें देखि देखि भीजिये । आए वेई ठग माला तिलक चिलक किये किलकिकै कहि बडे बंधु लेखि हीजिये ॥ ५४ ॥ नृपति बुलाय कहि हिये हरि भाय भरे ढरे तेरे भाग अब सेवाफल लीजिये । गयो ले महलमांझ टहल लगाये लोग लागे होन भोग जिय शंका तन छीजिये ॥ मांगे बार बार बिदा राजा नहिं जान देत अति अकुलाय कही स्वामी धन दीजिये। देके बहु भांति सो पठाए संग मानसहू आवो पहुँचाय तब तुमपर रीझिये ॥ ५५ ॥ पूंछे नृप नर कोउ तुह्मरी न सरवर जिते आए साधु ऐसी सेवा नहिं भई है । स्वामीजीसौ नातो कहा काहो हम खाइ हाहा रखियो दुराइ यह बात अति नई है ॥ हुते एक ठौरि नृप चाकरीमें तहां इन कीयोई बिगार मारि डारो आज्ञा दई है । राखे हम हितू जानि ले निदान हाथ पांव वाहीके इसान अब हम भरि लई है ॥ ५६ ॥ फाटि गई भूमि सब ठग वे

समाय गये भये वे चकित दौरि स्वामीजूपैं आए हैं । कही जिती बात सुनि गात गात कांपि उठे हाथ पांव मींडें भये ज्योंके त्यों सुहाए हैं ॥ अचिरज दोउ नृप सास जा प्रकाश किये जिये एक सुनि आए वाही ठौर धाए हैं। पूंछे बार सीस पांयनपै धारि रहे कहिये उघारि कैसे मेरे मन भाए हैं ॥५७॥ राजा अति अर गही कही सब बात खोलि निपट अमोल यह संतनको वेश है । कैसो अपकार करें तऊ उपकार करें ढरें रीति आपनीही सरस सुदेश है॥ साधुता न तजे कभू जैसे दुष्ट दुष्टता न यही जानि लीजे मिले रसिकनरेश है । जान्यो जब नाम ठाम रहौ इहां बलि जांव भयो मैं सनाथ प्रेमभक्ति भई देश है ॥ ५८ ॥ गये जा लिवाय लोग कविराज राज तिया कियो ले मिलाप आप रानी ढिग आई है। मारचो एक भाई वाको भई यों भौजाई सती कोऊ अंग काटी कोउ कूदि परी धाई है॥ सुनतहिं नृपवधू निपट अचंभो भयो इनके न भयो फिरि कहि समुझाई है। प्रीतिकी न रीति यह बडी विपरीति अहो छुटे तन जब प्रिया प्राण छुटि जाइ है ॥ ५९ ॥ ऐसी एक आप कही राजासो यो यूं बात कही लेके जावो बाग स्वामी नेकु देखो प्रीतिको। निपट विचारी बुरी देत मेरे गरे छूरी तिया हठ मानि करी वैसेही प्रतीतिको॥ आनि कहे आप पांय कहि यहि भांति आय बैठी ढिग प्रिया देखि लोटि गई रीतिको। बोली भक्तवधू अजू वे तो हैं बहुत नीके तुम कहा औचकहीं पावति हो भीतिको ॥ १६० ॥ भई लाज भारी पुनि फेरिकै सँवारी दिन बीति गए कोऊ जब तब वही कीनी है ।जानि गई भक्तवधू चाहति परीक्षा लियो कही अजू पाय सुनि तजी देह भीनी है॥ भयो मुख श्वेत रानी राजा आए जानि यह रचि चिता जरों मति भई मेरी हीनी है। भई सुधि आपको सु आए वेगि दौरि इहां देखि मृत्युप्राय नृप कह्यो मेरी दीनी है॥ ६१ ॥ बोल्यो नृप अजू मोहिं जरे इव तन अब सब उपदेश लेके धूरिमें मिलायो है ।कह्यो बहु भांति तौपै आवति न शांति कहूं गाई अष्टपदी सुर दियो तन ज्यायो है॥ लाजनिको मार्‍यो राजा चाहे अपघात कियो जियो नहिं जात भक्तिलेशहु न आयो है। करि समाधान

निजग्राम आये किंदुबिल्ल जैसो कछु सुन्यो यह परचो ले गायो है ॥६२॥ देवधुनीसौंत हो अठार कोस आश्रमते सदाई स्नान करें धरें योग्यताईको । भयो तन वृद्ध तऊ छांडे नहीं नित्य नेम प्रेम देखि भारी निशि कही सुखदाईको ॥ आवो जिनि ध्यान करो करो मति हठ ऐसे मानी नहीं आऊं मौही जानो कैसे आईको । फूले देखो कंज जब कीजिये प्रतीति मोरीभई वाही भांति सेवै अबलों सुहाईको ॥ ६३ ॥

छप्पय—तीनि कांड एकत्व सानि कोउ अज्ञ बखानत ।
कर्मज्ञानी ऐंचि अर्थको अनरथ ठानत ॥
परमहंससंहिता विदित टीका विस्तार्‍यो ।
षटशास्त्र अविरुद्ध वेदसंमतहि विचार्‍यो ॥
परमानंदप्रसादते, माधो स्वकर सुधारि दियो ।
श्रीधर श्रीभागवतमें, परम धर्मनिर्णय कियो ॥ ४५ ॥

श्रीधरजूका वर्णन ।

टी० क०—पंडितसमाज बडे बडे भक्तराज जेते भागवतटीका कारि आपसमें रीझिये। भयोजू विचार काशीपुरी अविनाशीमांझ सभाअनुसार जोई सोई लिखि दीजिये ॥ ताको तो प्रमाण भगवान बिंदुमाधोजू है साधो यह बात धरि मंदिरमें लीजिये। धरे सब जाइ प्रभु स्वकर बनाइ दियो कियो सर्वोपारि ले चल्यो मति धीजिये ॥ ६४ ॥

छप्पय--करुणामृत सुकवित्त उक्ति अनुचिष्ट उचारी ।
रसिकजननि जीवनि हृदै हारावलिधारी ॥
हरि पकरायो हाथ बहुरि तहँ लियो छुटाई ।
कहा भयो कर छुटे बँधो जो हियते जाई ॥
चिंतामणिसँग पाइकै, व्रजवधूकेलि वरणी अनूप ।
कृष्णकृपाको पर प्रगट, बिल्वमंगल मंगलस्वरूप ॥ ४६ ॥

बिल्वमंगलजूका वर्णन ।

टी०क०—कृष्णावेणा तीर एक द्विज मतिधीर रहै ह्वै गयो अधीर

संग चिंतामणि पाइकै । तजि लोकलाज हिये वाहीको जु राज भयो निशि दिन काज वहै रहे घर जाइकै ॥पिताको सराध नेकु रह्यो मन साधि दिन शेषमें आवेश चल्यो अति अकुलाइकै । नदी चढि रही भारी तौपै न अबारी नाव भाव भऱ्यो हियो जियो जात नँघि जाइकै ॥ ६५ ॥ करत विचार वारिधारमें न रहे प्राण याते भली धारि मित्रसनमुख जाइये । परे कूदि नीर कछु सुधि न शरीरकी है वही एक पीर कब दरशन पाइये ॥ पैयत न पार तन हारि भयो बूडिवेको मृतक निहारि मानि नाव मन भाइये । लगेई किनारे जाय चले पग धाय चाय आय पट लागे निशि आधी सो बिहाइये ॥ ६६ ॥ अजगर घूमि झूमि भूमिको परस कियो लियोई सहारो चढ्यो छातपर जायकै । ऊपर किंवार लगे पऱ्यो कूदि आंगनमें गिऱ्यो यों गरत रागि जागि सोर पायकै ॥ दीपक कराइ जू वै देखि बिल्वमंगल हैं बडोई अमंगल तू कियो कहा आयकै । जल अन्हवाय सूखे पट पहिराय हाय कैसे करों आय जल पार द्वार धायकै ॥ ६७ ॥ नवका पठाइ द्वार लाव लटकाई देखि मेरे मन भाई मैं तो तबै लई जानिकै। चलो देखें अहो यह कहा धौं प्रलाप करै देख्यो विषधर महा खीझि अपमानिकै ॥ जैसो मन मेरे हाड चामसों लगायो तैसो श्यामसों लगावे तोपै जानिये सयानिकै । मैं तो भये भोर भजों युगलकिशोर अब तेरी तुहीं जाने चाहो करो मन मानिकै ॥ ६८ ॥ खुलि गईं आंखें अभिलाखे रूप माधुरीको चाखे रस रंग औ उमंग अंग न्यारिये । बीन ले बजाइ गाइ विपिन निकुंज क्रीडा भयो सुखपुंज जोपै कोटि विषै वारिये ॥ बीति गई राति प्रात चले आप आपको जू हिये वही जाय दृग नीर भरि डारिये । सोमगिरि नाम अभिराम गुरु कियो आनि सकै को बखानि लाल भुवन निहारिये ॥ ६९ ॥ रहे सो बरस रससागर मगन भये नये २ चोजके ले श्लोक पढि जीजिये । चले वृन्दावन मन कहे सब देखों जाइ आइ मगमांझ एक ठौर मति भीजिये ॥पऱ्यो बडो सोर दृगकोरके व चाहे काह्न

तहां सर तिया न्हाति देखि आंखें रीजिये। लगे वाके पाछे काछे कांछेकी न सुध कछू गई घर आछे रहे द्वार तन छीजिये ॥१७०॥ आयो वाको पति द्वार देखे भागवत ठाढे बडो भागवत पूंछि वधू सो जनाइये । कही जू पधारो पांव धारो गृह पांवनको पावनि पखारों जल ढारों सीस भाइये ॥ चले भौनमांझ मन आरति मिटायवेको गायवेको जोई रीति सोइ कै बताइये। नारिसों कह्यो हो तू श्रृंगार कारि सेवा कीजे लीजे यूं सुहाग यामें वेगि प्रभु पाइये ॥७१॥ चली यों श्रृंगार कारि थारमें प्रसाद लैकै ऊंची चित्रसारी जहां बैठे अनुरागी हैं। झनक मनक जाइ जोरि कर ठाढि रही गही मति देखि देखि न्यून वृत्ति भागी हैं॥ कही युग सुई ल्यावो ल्याइ दई लई हाथ फोरि डारी आंखें अहो बडीए अभागी हैं। गई पतिपास श्वास भरत न बोलि आवे बोलि दुख पाय आए पांय परे रागी हैं॥ ७२॥ कियो अपराध हम साधुको दुखायो अहो बडे तुम साधु हम गाम साधु धऱ्यो है। रहो अजू सेवा करो करी तुम सेवा ऐसी जैसी नहिं काहू मांझ मेरो मन हऱ्यो है। चले सुख पाइ दृग भूतसे छुटाइ दिये हियेहीकी आंखिनसों अबै काम पऱ्यो है। बैठे वनमध्य जाइ भूंखे जानि आप आइ भोजन कराइ चलो छाया दिन ढऱ्यो है ॥७३॥ चले ले गहाई कर छाया घन तरुतर चाहत छुटायो हाथ छोडे कैसे नीको है। ज्यों ज्यों बल करे त्यों त्यों तजत न एऊ अरे लियोई छुटाइ गुह्यो गाडो रूपहीको है ॥ ऐसेही करत वृन्दावन घन आइ लियो पियो चाहे रस सब जग लागे फीको है । भई उतकंठा भारी आये श्रीविहारा लाल मुरली बजाइके सुकियो भयो जीकी है ॥ ७४ ॥ खुलि गए नयन ज्यों कंज रवि उदै भए देखि रूपराशी बाढी कोटिगुनी प्यास है। मुरली मधुर सुर राख्यो मदभरी मानो ढरी आइ काननमें आननमें भास है ॥ मानिकै प्रताप चिंतामणि मनमांझ भई चिंतामणि जेती आदि बोले रस रास है । करुणामृत ग्रंथ हृदै ग्रंथिको बिडारि

डारै बांधै रसग्रंथ पंथ युगल प्रकाश है ॥ १७५ ॥ चिंतामणि सुन्यो वनमांझ रूप देख्यो लाल व्है गई निहाल आइ नेह नातो जानिकै। उठि बहुमान कियो दियो दूध भात दोना दे पठावे नित हारि हेतुजन मानिकै ॥ लियो कैसे जाय तुम्हैं भायसों दियो जो प्रभु ले हों नाथहाथसों जो देहैं सनमानिकै । बैठे दोऊ जन कोऊ पाहे नहीं एक कन रीझे श्याम घन दीनो दूसरोहू आनिकै ॥ ७६ ॥

छप्पय–भागवतधर्म उतंग आनधर्म आनन देखा ।
पीतरपटंतर विगत निकष ज्यों कुंदनरेषा ॥
कृष्णकृपा कहि बेल फलित सत्संग दिखायो ।
कोटिग्रंथको अर्थ तेरह विरंचनमें गायो ॥
महासमुद्र भागवतते, भक्तिरत्नराजी रची ।
कलिजीव जंजाली कारणे, विष्णुपुरी बडि निधि सची ४७

विष्णुपुरीजूका वर्णन ।

टी०क०–जगन्नाथक्षेत्रमांझ बैठे महाप्रभूजू वे चहूं ओर भक्तभूप भीर अति छाई है । बोले विष्णुपुरी पुरी काशी मध्य रहे जाते जानियत मोक्ष चाह नीकी मन आई है ॥ लिखि प्रभु चीठी आप मणिगणमाला एक दीजिए पठाइ मोहिं लागत सुहाई है । जानि लई बात निधि भागवत रत्नदाम दई पठै आदि मुक्ति खोदिकै बहाई है ॥ ७७ ॥

छप्पय–नाम त्रिलोचन शिष्य सूर शशिसदृश उजागर ।
गिरा गंगउनहारि काव्यरचना प्रेमाकर ॥
आचारज हरिदास अतुल बल आनंद दायन ।
तिहिं मारग वल्लभ विदित प्रभु पद्धतिपरायन ॥
नवधा प्रधानसेवा सुदृढ, मन वच क्रम हरिचरणरति ।
विष्णुस्वामीसंप्रदाय दृढ, ज्ञानदेव गंभीरमति ॥ ४८ ॥

ज्ञानदेवजूका वर्णन ।

टी०क०–विष्णुस्वामीसंप्रदाय बडोई गंभीरमति ज्ञानदेव नाम ताकी

बात सुनि लीजिये । पिता गृह त्यागि आइ ग्रहण संन्यास कियो दिया बोल रूठ तिया नहीं गुरु कीजिये ॥ आई सुनि वधू पाछे कह्यो जान्यो मिथ्यावाद भुजनि पकरि मेरे संग करि दीजिये । ल्याई सो लिवाय जाय अतिहि रिसाय दियो पातिमेंते डारि रहे दूरि नहिं छीजिये ॥ ७८ ॥ भये पुत्र तीन तामें मुख्य बडो ज्ञानदेव जाकी कृष्णदेवजूसों हियकी सचाई है । वेद न पढावे कोऊ कहे सब ज्ञाति गई लई करि सभा अहो कहा मन आई है ॥ उनसों ब्रह्मत्व कहि श्रुतिअधिकार नाहिं बोल्यो यों निहारि पढे भैंसा ले दिखाई है । देखि भक्ति भाव चाव भयो आनि गहे पांव कियोई सुभाव वही गही दीनताई है ॥ ७९ ॥

त्रिलोचनजूका वर्णन ।

क०—भए उभै शिष्य नामदेव श्रीत्रिलोचनजू सूरशशिन्याई कियो जगमें प्रकाश है । नामाकी तो बात सुनि आए सुनो दूसरेकी सुनेई बनत भक्तकथा रसरास है ॥ उपज्यो वणिककुल सेवे कुल अच्युतको तौपै नहीं बने एक तिया रहै पास है। टहलुवा न कोइ साधु मनहीकी जानि लेत यही अभिलाष सदा दासनिको दास है ॥ १८० ॥ आए प्रभु टहलुआरूप धरि द्वारपर फटी एक कामरी पन्हैया टूटि पाई है । निकसत पूंछे अहो कहांते पधारे आप बाप महतारी और देखिये न घाई है ॥ बाप महतारी मेरे कोऊ नाहिं साची कहों गहों मैं टहल जोपै मिलत सुभाई है। अनमिल बात कौन दीजिये जनाइ वह खाऊं पांच सात शेर उठती रिसाई है॥ ८१॥ चारोंही वरनकी जु रीत सब मेरे हाथ साथ होन चाहों करो नीके मन लाइकै । भक्तनकी सेवा सो तो करत जनम गयो नयो कछु नाहीं डारे बरस बिताइकै ॥ अंत्रजामी नाम मेरो चेरो भयो तेरो हौं तो बोल्यो भक्तभाव खावो निशंक अघाइकै । कामरी पन्हैया सब नई करि दई और मीडिकै न्हवायो तन मैलको छुटाइकै ॥८२॥ बोल्यो घरदासीसों तू रहे याकी दासी होइ देखि यों उदासी देत ऐसो नहीं पावनो । खाइ सो खवावो सुख

पावो नित्त नित हिये जिये जगमाहिं जौलों मिलि गुण गावनो ॥ आवत अनेक साधु भावत टहल हिये लिये चाव दाबै पांव सबनि लडावनो। ऐसेही करत मास तेरह बितीत भए गए उठि आप नेकु बातको चलावनो ॥ ८३ ॥ एक दिन गईही परोसिनकै भक्तवधू पूंछि लई बात अहो काहेंको मलीन है । बोली मुसकाय वे टहलुवा लिवाय ल्याय क्योंहू न अघाय खोट पीसि तन छीन है ॥ काहूसों न कहो यह गहो मनमांझ एरी तेरीसों सुनैगो जोपै जात रहे भीन है। सुनि लई यही नेकु गए उठि हुती टेंक दुखहु अनेक जैसे जल बिन मीन है ॥ ८४ ॥ बीते दिन तीन अन्न जल करि हीन भये ऐसो सो प्रवीण अहो फेरि कहा पाइये । बडी तू अभागी बात काहेको कहन लागी रागी साधुसेवामें जू कैसे करी ल्याइये॥ भई नभ वानी तुम खावो पीवो पानी यह मैंही मति ठानी मोको प्रीति रीति भाइये। मैं तो हौं आधीन तेरे घरहीमें रहो लीन जोपै कहो सदा सेवा करिवेको आइये ॥ ८५ ॥ कीने हरिदास मैं तो दासहू न भयो नेकु बडो उपहास मुख जगमें देखाइये। कहे जन भक्त कहा भक्ति हम करी कहो अहो अज्ञताई रीति मनमें न आइये ॥ उनकी तो बात बनि आवे सब उनहीसौ गुनहीको लेत मेरे औगुन छिपाइये। आये घरमांझ तऊ मूढ मैं न जानि सक्यो आवै अब क्यों हूं धाय पांय लपटाइये ॥ ८६ ॥

श्रीवल्लभाचार्यजूका वर्णन।

क०—हियेमें सरूप सेवा करि अनुराग भरे ढरे और जीवनिके जीवनको दीजिये। सोइ ले प्रकाश घर घरमें विलास कियो अतिहि हुलास फल नैननको लीजिये॥ चातुरी आवधि नेकु आतुरी न होती क्यौंहू चहूं दिशि नाना राग भोग सुख कीजिये। वल्लभजू नाम लियो पृथु अभिराम रीति गोकुलमें धाम जानि सुनि मति रीझिये ॥ ८७ ॥ गोकुलके देखिवेको गयो एक साधु सूधो गोकुल मगन भयो रीति कछु न्यारिये । छोकरके वृक्षपर बढवा झुलाइ दियो कियो जाय दरशन सुख भयो भारिये ॥ देखे आइ

नाहीं प्रभु फेरि आप पास आयो चितसों मलिन देखि कहि जानि हारिये। वैसोई सरूप कैई गई सुधि बोल्यो आनि लीजिये पिछानि कह्यो सेवा नित धारिये ॥ ८८ ॥ खुलि गईं आंखें अभिलाखें पहिचानि कीजे दीजे जू बताइ मोहिं पाऊं निजरूप है । कही जावो वाही ठौर देखो प्रेम लखो हिये लिये भाव सेवा करो मारग अनूप है ॥ देखिकै मगन भयो लयो उर धारि हरि नैन भारि आये जान्यो भक्तिको स्वरूप है। निशिदिन लग्यो पग्यो जग्यो भाग पूरन हो पूरन चमतकार कृपा अनुरूप है॥८९

छप्पय—भक्तदास इक भूप श्रवण सीताहर कीनो ।
मार मार करि खड्ग वाजि सागरमें दीनो ॥
नरसिंहको अनुकरण होइ हिरनाकुस मार्‌यो ।
वहै भयो दशरथहि राम बिछुरत तन डार्‌यो ॥
कृष्णदास बांधे सुनत, तिहि छिन दीने प्रान ।
संतसाखि जाने सबै, प्रगट प्रेम कलियुग प्रधान ॥ ४९ ॥

भक्तदास भूपनाम कुलशेखरजूका वर्णन ।

क०—संतसाखि जाने कलिकालमें प्रगट प्रेम बडोई असत जाके भक्तिमें अभाव है। हुनो एक भूप रामरूप ततपर महा रामहीकी लीला गुण सुनै कारि भाव है ॥ विप्रसों सुनावें सीता चोरि कौन गावे हियो खरो भारि आवे वह जानत सुभाव है। पर्‌यो द्विज दुखी निज सुवन पठाइ दियो जाने न सुनायो भरमायो कियो धाय है ॥ १९० ॥ मारि मारि मार कारि खडग निकासि लियो दियो घोडो सागरमें सो आवेश आयो है। मारो यहि काल दुष्ट रावण बिहाल करो पावनिको देखों सीताभात्र दृढ छायो है॥ जानकीरमण दोऊ दरशन दियो आनि बोले बिन प्राण कियो नीच फल पायो है। सुनि सुख भयो गयो शोक हृदै दारुण जो रूपकी निहारनि यों फेरिकै जिवायो है ॥ ९१ ॥

लीलानुकरण तथा रतिवंती बाईजूका वर्णन ।

क०—नीलाचल धाम तहां लीलानुकरण भयो नरसिंह रूप धारि सांचे

मारि डारयो है। कोऊ कहे द्वेष कोऊ कहत आवेश तौ पै करो दशरथ कियो भाव पूरो पारयो है॥ हुती एक बाई कृष्णरूपसों लगाई मति कथामें न आई सुत सुनि कह्यो धारयो है। बांधे जसुमति सुनि और भई गति कारि दई सांची रति तन तज्यो मानो वारयो है॥ ९२॥

छप्पय—हौं कह कहौं बनाइ बात सबही जग जाने।
करते दोनों भयो श्याम सौरभ मन माने॥
छपन भोगतें पहिल खीच करमाकी भावे।
सिलपिल्लेके हेत कुँवरिपै हरि चलि आवे॥
भक्तनिहित सुत विष दियो, भूप नारि प्रभु राखि पति।
प्रसाद अवज्ञा जानिकै, पाणि तज्यो एकै नृपति॥ ५०॥

श्रीपुरुषोत्तमवासी महाराजजूका वर्णन।

टी० क०—प्रसादकी अवज्ञाते तज्यों नृप कर एक करिकै विवेक सुनो जैसे बात भई है। खेले भूप चौपरको आयो प्रभुभुक्तशेष दाहिनेमें पांसे बाएं छुयो मति गई है॥ लेगये रिसायकै फिराय महादुख पाय उठ्यो नरदेव गृह गयो सुनि नई है। लियो अनसन हाथ तज्यो एहि छिन तब सांचो मेरो पन बोलि विप्र पूंछि लई है॥ ९३॥ काटे हाय कौन मेरो रह्यो गहि मौन यातैं पूंछत सचिव कहा बिथा सो विचारिये। आवे एक प्रेत मों दिखाई नित देत निशि डारके झरोंखा कर सोर करे भारिये॥ सोऊ ढिग आइ रहो आपको छिपाइ जब डारे पानि आनि तबहींसों काटि डारिये। कही नृप भले चौकी देतमें घुमायो भूप डार्‌यो उठि आयो छेदि न्यारो कियो वारिये॥ ९४॥ देखिकै लजानों कहा कियो में अयानो नृप कही प्रेत मानो यही प्रभुसों बिगारिये। कही जगन्नाथ देव ले प्रसाद जावों उहां ल्यावो हाय बोवो बाग सोई उर धारिये॥ चले तहां धाइ भूप आगे मिल्यो आइ हाथ निकस्यो लगाइ हिये भयो सुख भारिये। ल्याय कर फूल ताके भये फूल दोनाके जू नितहि चढत अंग हरि प्यारिये॥ ९५॥

श्रीकरमाबाईजूका वर्णन ।

क०—हुती एक बाई ताको करमा सु नाम जानि विना रीति भाति भोग खीचरी लगावही । जगन्नाथ देव आप भोजन करत नीके जिते लागें भोग तामें यह अति भावही ॥ गयो तहां साधु मानि बडे अपराध करे भरे बहु श्वास सदाचार लै सिखावहीं । भई यों अबार देखे खोलिकै किंवार जोपै जूंठनि लगी है मुख धोए विना आवहीं ॥ ९६ ॥ पूंछे प्रभु भयो कहा कहिये प्रगट खोलिहू न आवे हमैं देखि नई रीति है। कर्मा सुनाम एक खीचरी खवावै मोहिं मैंहू नित्य पाऊ जाइ जानि सांची प्रीति है ॥ गयो नेरो संत रीति भीतिसो सिखाइ आओ मत सो अनंत विन जाने यों अगीति है । कही वाही साधुसों जु साधि आओ वही बात जाइकै सिखाई हिये आई बडी भीति है ॥ ९७ ॥

श्रीसिलपिल्ले कुंवरि उभय बाईजूका वर्णन ।

क०—सिल्लपिल्ले भक्त उभै बाई सोई कथा सुनो एक नृपसुता एक सुता जिमीदारकी।आए गुरु घर देखि सेवाढिग बैठी जाइ कही ललचाइ पूजा कीजै सुकुमारकी ॥ दियो शिला टूक लेके नाम कहि दियो वही कीजिये लगाइ मन मति भवपारकी । करत करत अनुराग बढि गयो भारी बडिये विचित्र रीति यही शोभासारकी ॥ ९८ ॥ पाछिले कवित्तमांझ दुहुंनिकी एक रीति अब सुनो न्यारी न्यारी नीके मन दीजिये । जिमीदारसुता ताके भये उभै भाई रहे आपसमें वैर गांव मार्‍यो सबै छीजिये ॥ तामें गई सेवा इन बडोई कलेश कियो जियो नहिं जात खानपान कैसे कीजिये । रहे ससुझाइ याहि कछु न सुहाइ तब कही जाइ ल्यावो ते रे दोऊ समघीजिये ॥ ९९ ॥ गई वाही गांव जहां दूसरो जु भाई रहै बैठे हो आथाईमांझ कही वही बात है।लेवो जु पिछानि तहां बैठे एक ठौर प्रभु बोलि उठ्यो कोउ बोलि लीजे प्रीति गात है ॥ भई आंखि राती लगी फटवेको छाती सो पुकारी स्वर आरतसों मनो तनपात है । हिये आइ लागे

दुख सब दूरि भागे कोऊ बडे भाग जागे घर आई न समात है ॥२००॥ सुनो नृपसुता बात भक्ति गात गात पगी भगी सब विषै वृत्ति सेवा अनुरागी है। व्याहीहि विमुखघर आयो लेन वहै वर खरी अरबरी कोइ चित्त चिंता लागी है॥ कारि दई संग भरी आपनेही रंग चली अलीहू न कोऊ एक वही जासों रागी है। आयो ढिग पति बोलि कियो चाहै रति याकी और भई गति मति आवो विथा पागी है ॥ १ ॥ कौन वह विथा ताको कीजिये जतन वेगि बडो उदवेग नेकु बोली सुख दीजिये। बोलिवो जो चाहो तोपै चाहो हरिभक्ति हिये बिन हरिभक्ति मेरो अंग जिनि छीजिये ॥ आयो रोस भारी अब मनमैं विचारी वा पिटारीमें जु कछु सोई लेके न्यारो कीजिये। करी वही बात मूसि जलमांझ डारि दई नई भई ज्वाला जियो जात नहिं खीजिये ॥ २ ॥ तज्यो जल अन्न अब चाहत प्रसन्न कियो होत क्यों प्रसन्न जाको सरवसु लियो है। पहुँचे भवन आइ दई सो जताइ बात गात अति छीन देखि कहा हठ कियो है ॥ सास समझावै कछू हाथसों खवावे योको बोल्योहू न भावे तब धरकत हियौ है। कहे सोई करें अब परें पांइ ते रे हम बोली जब वेई आवें तोही जात जियो है ॥ ३ ॥ आए वाही ठौर भौंर आइ तनु भूमि गिस्यो ढस्यो जल नैन सुर आरति पुकारी है। भक्ति वश श्याम जैसे कामवश कामी नर धाइ लगे छातीसों जु संगसों पिटारी है॥ देखि पति सासु आदि जगतविवाद मिट्यो वादिही जनम गयो नेक न संभारी है। कियें सब भक्त हरि साधु सेवमांझ पगे जगे कोऊ भाग घर वधू यों पधारी है ॥ ४ ॥

भक्तन हित सुत विष दियो इन उभय बाईजीका वर्णन।

टी० क०—भक्तनिके हित सुत विष दियो एउ उभै बाई बात नीके कारि खोलिकै बताइये। भयो एक भूप ताके भक्तहू अनेक आवें आयो भक्त भूप तासों लगनि लगाइये॥ नितहि चलत तोपै चलन न देत राजा बितयो वरष मास कहे भोर जाइये। गई आस टूटि तन छूटिवेकी रीति भई लई

बात पूंछी रानी सब ले जनाइये ॥५॥ दियो सुत विष रानी जानी नृप जीवे नाहिं संत हैं स्वतंत्र सोई इन्हें कैसे राखिये । भये विन भोर वधू सोर करि रोई उठी भोइ गई रावलेमें सुनि साधु भाखिये ॥ खोलि डारि कटिपट भवन प्रवेश कियो लियो देखि बालकको नीलतनु साखिये । पूंछयो भूप तियासों जु सांच कहो कियो कहा कही तुम चल्यो चाहो नैन अभिलाखिये ॥ ६ ॥ छाती खोलि रोयो क्योंहू बोलिहू न आवे मुख सुख भयो भारी भक्तिरीति कछु न्यारिये । जानिउ न बात जापि पांतिको विचार कहा अहो रससागर सो सदा उर धारिये ॥ हरिगुण गाय साखि संतनि बताय दियो बालक जिवाय लागी ठौर वह प्यारिये । संगकै पठाय दिगे रहे जेवे भीजे हिये बोले आप जाऊं जो न मारिकै बिडारिये ॥ ७ ॥ सुनों चित लाय बात दूसरी सुहाय हिये जिये जगमाहिं जौलौं संतसंग कीजिये । भक्त नृप एक सुता व्याही सो अभक्त मह जाके घरमांझ जन नाम नहिं लीजिये ॥ पल्यो साधु सीधेसों शरीर दृग रूप पले जीभ चरणामृतके स्वादहीसों भीजिये रह्यो कैसे जाय अकुलाय व बसाय कछु आवे पुर प्यारे तब विष सुत दीजिये ॥ ८ ॥ आये पुर संत आय दासीने जनाय कही सही कैसे जात सुत विष लेके दियो है । गए वाके प्राण रोइ उठी किलकानि सब भूमि गिरे आनि टूक भयो जात हियो है ॥ बोलि अकुलाय एक जीवेको उपाय जोपै कियो जाय पिता मेरे केऊ बार कियो है । कहे सोई करे दृग भरे ल्यावो संतनको कैसे होत संत पूंछो चेरी नाम लियो है ॥ ९ ॥ चली ले लिवाय चेरी बोलिवो लिखाय दियो दिखिकै धरणि परि पांय गहि लीजिये कीनी वही रीति दृग धारा मानो प्रीति संत करी यों प्रतीति गृह पावनको कीजिये ॥ चले सुख पाय दासी आगेही जनाय जाय आय ठाढी पौरि पांय गहे मति भीजिये । कही हरे बात मेरे जानो पितु मात मैं तो अंगमें न मात आजु प्राण वारि दीजिये ॥ २१० ॥ रीझि गये संत प्रीति देखिकै अनंत कही होयगी जु वही सो प्रतिज्ञा तैं जु करी है । बालक निहारि जानि विष

निरधार दियो दियो चरणामृतको प्राणसंज्ञा धरी है॥ देखत विमुख जाय पाय ततकाल लिये किये तब शिष्य साधुसेवा मति हरी है। ऐसे भूपनारी पति राखि सब साखि जन रहे अभिलाषि जौपै देखो याहि घरी है ॥११॥

छप्पय--रंगनाथको सदन करन बहु बुद्धि विचारी।
कपटधर्म रचि जैन द्रव्यहित देह विसारी॥
हंस पकरवे काज वधिक बानो धरि आए।
तिलक दामकी सकुच जानि तिहिं आप बँधाए॥
सुतवध हरिजन देखिकै, दै कन्या आददियो।
आशय अगाध दुहुँ भक्तको, हरितोषण अतिशय कियो।५१।

दोऊ मामा भानजेजूका वर्णन।

क०—ऐसे सो अगाध दोऊ भक्त मामा भाजनेको दियो प्रभु तोष ताकी बात चित धारिये। घरते निकसि चले वनको विवेक रूप मूरति अनूप बिन मंदिर निहारिये॥ दक्षिणमें रंगनाथ नाम अभिराम जाको ताको ले बनावे धाम काम सब टारिये। धनको जतन फिरे भूमिपै न पायो कहूं चहूं दिशि हारि देख्यो भयो सुख भारिये ॥ १२ ॥ मंदिर सरावगीको प्रतिमा सुपारसकी आरस न कियो वेद न्यूनहू बतायो है। पावें प्रभु सुख हम नर्कही गये तो कहा धरक न आय जाय कानले फुकायो है॥ ऐसे कारि सेवा जासे हरि मति केवराज्यों सेवरासमाज सब नीकेकै रिझायो है। दियो सौंपि भार तब लेवेको विचार करे हरै कौन राह भेद राजानिपै पायो है ॥ १३ ॥ मामा रह्यो भीतर औ ऊपरसों भानजो है कलशभँवरकली हाथसो फिरायो है। जेवरा ले फासी दियो मूरतिसो खेंचि लई और बार बहु आप नीके चढि आयो है॥ कियो हो हो जु द्वार तामैं फूलि तन फँसि बैठ्यो अति-सुख पाय तब बोलिकै सुनायो है काटि लेवो सील ईश भेषकी न निंदा करे भरे अंकवार मन कीजिये सवायो है ॥ १४ ॥ काटि लियौ सीस ईश इच्छाको विचार कियो जियो नहीं जात तऊ चाह मति पागी है। जो पै

तनत्याग करों कैसे आशसिंधु तरों ढरों वाही ओर आयो तहां नीम खुदी लागी है ॥ भयो शोक भारी हमैं है गई अबारी काहूं औरने विचारी देखें वही बडभागी है । भरि अँकवारी मिले मंदिर सँवारी झिले खिले सुख पाइ नैन जाने जोई रागी है ॥ १५ ॥

हंसप्रसंगजूका वर्णन ।

क०–कोढी भयो राजा किये जतन अनेक तोपै एकहू न लागै कह्यो हंसनि मँगाइये । वधिक बुलाय कही बेगही उपाय करो जहां तहां ढूंढि अहो इहां लगि लाइये ॥ कैसे करि ल्यावें वे तौ रहें मानसरमांझ ल्यावोगे छुटोगे तब जना चारि जाइये । देखतही उडिजात जातिको पिछानि लेत साधुसों न डरें जानि भेख ले बनाइये ॥ १६ ॥ गए जहां हंस संतबानो सो प्रशंस देखि जानिकै बंधाये राजापास लेके आये हैं । मानि मतिसार प्रभु वैद्यको स्वरूप धारि पूंछिकै बजार लोग भूपढिग लाये हैं ॥ काहेको मँगाय पक्षी आछी हम करें देह छोडि दीजे इन्हें कही नीठि करि पाए हैं। औष-धी पिसाय अंगनि मलाइ किये नीके सुख पाइ कहीं उनिको छुटाए हैं ॥ १७ ॥ लेवो भूमि गांव बलि जाउं या दयालुताके भाल भाग जाके ताको दरशन दीजिये। पायो हम सब अब करो हरिसाधुसेवा मानुस जनम ताकी सफलता कीजिये ॥ करि ले निदेश देश भक्तिको विस्तार भयो हंस-हित सार जानि हिये धरि लीजिये । वधिक न जानि जासों खगनि प्रतीति कीनी ऐसो भेष छोंडिये न राख्यो मति भीजिये ॥ १८ ॥

महाजन सदाव्रतीजूका वर्णन ।

क०–महाजन सुनो सदाव्रती ताके भक्तपण मनमें विचार सेवा कीजे चित लाइकै । आवत अनेक साधु निपट अगाध मत साधि लेत जैसा आवे सुबुद्धि मिलाइकै ॥ संत सुख मानि रहि गयो घरमांझ सदा सुतसो सनेह नित खेले संग जाइकै । इच्छा भगवान मुख्य गौन लोभ जानि मार्‍यो डार्‍यो धूरि गाडि गृह आयो पछिताइकै ॥ १९ ॥ देखे महतारी मग बेटा कहां रह्यो पग बीते याम चारी तऊ धाममें न आयो है। फेरी पुर

डौंडी ताके संग संग आप लौंडी कह्यो यों पुकारी सुत कौने बिरमायो है ॥ वेगिही बताय दीजे अभरण हियो लीजे कही सो संन्यासी एहि मारयो मन लायो है । दई ले दिखाइ देह बोल्यो याको गहि लेह याहीने हमारो पुत्र हत्यो नीके पायो है ॥ २२० ॥ बोल्यो अकुलाय मैं तो दियो है बताय मोहिं देवो जू छुडाय नहिं झूंठ कछु भाखिये । लेवो मति नाम साधु जो उपाधि मेट्यो चाहौ जावो उठि और कहूं मानि छोरि नाखिये ॥ आयकै विचार कियो जानि सकुचायो संत बोलि उठी तिया सुत देके नीके राखिये । पर्‍यो वधू पांय तेरी लीजिये बलाय पुत्र शोकको मिटाय और खरी अभिलाखिये ॥ २१ ॥ बोलि लियो संत सुता कीजिये जु अंगीकार दुखसो अपार काहू विमुखको दीजिये । बोल्यो मुरझाय मैं तो मारयो सुत हाय मोपै जियो हू न जाय मेरो नाम नहिं लीजिये ॥ देखो साधुताइ धरी सीसपै बुराई जहां राई हू न दोष कियो मेरुसम रीझिये । दई बेटी ब्याहि कही मेरो उर दाह मिटे कीजिमे निबाह जगमाहि जौलों लीजिये ॥ २२ ॥ आए गुरु घर सुनि दीजे कौन सर बडे सिद्ध सुखदाई साधुदेवा ले बताई है । कह्यो सुत कहां आजु पायो कही कैसी भांति भांतिको बखाने मीच जग लपटाई है ॥ प्रभुने परीक्षा लई सोई हमैं आज्ञा दई चलिये दिखावों जहां देहको जराई है । गये वाही ठौर शिरमोर हरी ध्यान कियो जिवो चल्यो आयो दासकीरति बढाई है ॥ २३ ॥

छप्पय–दारुमयी तरवार सारमै रची भुवनकी ।
देवाहित सितकेश प्रतिज्ञा राखी जनकी ॥
कामध्वजके कपि चारु चितापर काष्ठ जु ल्याए ।
जैमलके युद्धमाहिं अश्व चढि आपुन धाए ॥
घृतसहित भैंस चौगुनी, श्रीधर संग सायक धरन ।
चारों युग चतुर्भुज सदा, भक्तगिरा सांची करन ॥ ५२ ॥

भुवनचौहानजूका वर्णन ।

क०–सुनो कलिकाल बात और है पुराणख्यात भुवन चौहान जहां

रानाकी दुहाई है। पट्टा जुग लाख खात सेवा अभिलाष साधु चल्यो सो सिकार नृप संग भीर छाई है॥ मृगी पाछे परे करे टूक हुती गर्भिणी यों आइ गई दया कही काहेको लगाई है। कहें मोको भक्त किया करों मैं अभक्तनिकी दारुतरवार धारों यही मन भाई है॥ २४॥ और एक भाई तानें देखी तरवार दारु सक्यो न सँभारि जाइ रानाको सुनाई है। नृप न प्रतीति करे करे यह सौंह नाना बाना प्रभु देखि तेज बात न चलाई है॥ ऐसेही वरष एक कहत बितीत भयो कह्यो मोहिं मारि डारो जोपै मैं बनाई है। करी गोंठ कुंड जाय पायके प्रसाद बैठे प्रथम निकासि आप सबनि दिखाई है॥ २५॥ क्रमोंसों निहारि कही भुवन विचारी कहा कह्यो चाहे दारु मुख निकसत सार है। काढिकै दिखाई मानों बिजुरी चमचमाई आई मनमांझ बोल्यो याको मारो भार है॥ भक्त कर जोरिकै बचायो आजु मारिये क्यों कही बात झूंठ नहिं कीन्ही करतार है। पटा दूना दून पावो आवो मति मुजराको मैंही घर आऊं होई मेरो निसतार है॥ २६॥

देवा पंडाजूका वर्णन।

क०–दरशन आयो राना रूप चतुर्भुजजूके रहे प्रभु पौढि हार सीस लपटाए हैं। बेगि दे उतारि कारि लैकै गरे डारि दियो देखि धौरो बार कह्यो धौरे बार आए हैं॥ कहत तो कहिगई सही नहीं जात अब महिपति डारे मारि हरिपद ध्याए हैं। अहो हृषीकेश करो मेरे लिये श्वेतकेश लेशहु न भक्ति कही किये देखो छाए हैं॥ २७॥ मानि राजात्रास दुखरास सिंधु बढ्यो हुतो सुनिकै मिठास बानी मानो फेरि जियो है। देखे श्वेत बार जानि कृपा मो अपार करी भरी आंखें नीरसेवा लेश मैं न कियो है॥ बडेई दयाल सदा भक्तप्रतिपाल करें मैं तो हों अभक्त तौपै सकुचायो हियो है। झूंठे सनबंध हुते नांव लाजे मेरोई जू ताते सुख साजे यह दरसाइ दियो है॥ २८॥ आयो भोर राजा श्वेत बारसों निहारि रह्यो कह्यो केश काहूके ले पंडाने लगाए हैं। ऐंचि लियो एक तामें खैंचिकै चढाई नाक रुधिरकी

धारा नृपअंग छिरकाए हैं ॥ गिरयो भूमि मूरछा व्है तनकी न सुधि कछु जाग्यो याम बीते अपराध कोटि गाए हैं । यही अब दंड राज बैठे सो न आवे इहां अबलोहूं आनि मानि करे जो सिखाए हैं ॥ २९ ॥

कामध्वजजूका वर्णन ।

क०—भए चारि भाई करें चाकरी वे रानाजूकी तामें एक भक्ति करे वनमें बसेरो है । आयके प्रसाद पावे फेरी उठि जाय तहां कहे नेकु चलो तो महीना लीजे तेरो है ॥ जाके हम चाकर हैं रहत हजूर सदा मेरे तो जरावै कौन वही जाको चेरो है । छूट्यो तन वन राम आज्ञा हनुमान आय कियो दाह धुवां लागे प्रेत पार नेरो है ॥ ३० ॥

जैमलजूका वर्णन ।

क०—मेरो तो प्रथम वास जैमल नृपति ताको सेवा अनुराग नेकु खटको न भावही । करे घरी दश तामें कोऊ जो खबर देत लेत नहीं कान और ठौर मरवावही ॥ हुतो एक भाई वैरी भेद यह पाई लियो कियो आनि घेरो माता जाईके सुनावही । करें हरि भली प्रभु घोरा असवार भए मारी फौज सब कहें लोग सचुपावहीं ॥ ३१ ॥ देखें हांके घोरा अहो कौन असवार भयो गयो आगे जब देखे वही वैरी परयो है । बोल्यो सुख पाई आज सांवरो सिपाई को है एकलेही फौज मारि मेरो मन हर्यो है ॥ ताहिको दिखाइ देइ मेरे तरसत नैन बैननिसों जानि वही श्याम प्रभु ढरयो है। पूंछिकै पठाइ दियो वानें पन यहै लियो कियोई निदेश करे भली बुरो करयो है ॥ ३२ ॥

ग्वालभक्तजूका वर्णन ।

क०—भयो एक ग्वाल साधुसेवा सो रसाल करै परै जोई हाथ लेके संतनि खवावही । पायो पकवान मध्य गयो तब खायवेकों आयवेकी ढील चोर भैंस सो चुरावही ॥ जानिकै छिपाई बात मातासों बनाय कही दई विप्र भूंखो घृत संग फेरि आवही । दिन है दिवारीको सु उनि पहिरायो हांस आइ घर जाम लिये रांभके सुनावही ॥ ३३ ॥

श्रीधरस्वामीजूकी आद्यावस्थावर्णन

भागवतटीका करी श्रीधर सुजानि लेहु गेहमें रहत करें जगतव्योहार हैं। चलेजात मग ठग लगे कहैं कौन संग संग रघुनाथ मेरे जीवनअधार हैं। जानि इन कोऊ नाहिं मारिवो उपाय करे धरे चाप बाण आवें वही सुकुमार हैं। आए गर ल्याए पूंछे श्याम सो स्वरूप कहां जानि वे तो पार किये आप डार्‌यो भार हैं॥ ३४॥

छप्पय–निष्किंचन इक दास तासुके हरिजन आए।
विदित बटोही रूप भये हरि आप लुटाए॥
साखि देनको श्याम खुदै प्रभु आप पधारो।
रामदासके सदन राय रणछोर सिधारे॥
आयुधछत तन अनुगके, बलि बंधन अपु वपु धरे।
भक्तिनिसंग भगवान नित, ज्यों गउ बछगोहन फिरे॥ ५३॥

निष्किंचनभक्तजूका वर्णन।

क०–भक्तनके संग भगवान ऐसे फिर्‌यो करें जैसे वत्स संग फिरै नेहवती गाई है। हरिपाल नाम विप्रधाममें जनम लियो कियो अनुराग साधु दई श्रीलुटाई है॥ केतिक हजार ले बजारके करज आए गरज न सरै कियो चोरीको उपाई है॥ विमुखको लेत हरिदासको न दुःख देत आए संत द्वार तियासंग बतराई है॥ ३५॥ बैठे कृष्ण रुक्मिणी महल तहां सोच पर्‌यो हर्‌यो मन साधु सेवा साहरूप कियो है। पूंछी चले कहां कही भक्त है हमारो एक मैंहूं आऊं आवो आय जहां पूंछि लियो है॥ अजू मग चल्यो जात बडो उतपात मधि कोऊ पहुँचावै देवो ले रुपैया दियो है। करो समाधान संत मैं लिवाइ जाऊं इन्हैं जाइ वनमांझ देखि बहु धन जियो है॥ ३६॥ देखै जो निहारि माला तिलक न सदाचार होयँगे भंडार धन जोपै इतो ल्यायो है। लीजिये छिनाय याहि बार कहै डारि देवौ दियो सब डारि छला छिगुनीमें छायो है॥ अंगुरी मरोरि कही बडो तू कठोर

अहो तोको कैसे छोडों संत जैवे मोको भायो है । प्रगट दिखायो रूप सुंदर अनूप वह मेरो भक्त भूप लेके छातीसों लगायो है ॥ ३७ ॥

साखी गोपालजूका वर्णन ।

क०—गौडदेशवासी उभै विप्र ताकी कथा सुनो एक वैश्य वृद्ध जाति-वृद्ध छोटो संग है । और और ठौर फिरि आप फिरि आए वन तब भयो दुखी कीन्ही टहल अभंग है ॥ रीझ्यो बडो द्विज निजसुता तोको दई अहो रहो नाहिं चाह मेरे लई बिनै रंग है। साखी दे गोपाल अब बात प्रतिपाल करौ ढरो कुलग्राम भाम पूंछ्यो सो प्रसंग है ॥ ३८ ॥ बोल्यो छोटो विप्र क्षिप्र दीजिये कही जो बात तिया सुत कहें अहो सुता याके योग है। द्विज कहे नाहिं कैसे करों मैं तो देन कही कहीं कहों भूलि भयो बिथाको प्रयोग है ॥ भई सभा भारी पूंछ्यो साखी नर नारी श्रीगोपाल वनवारी और कौन तुच्छ लोग है। लेवो जु लिवाइ जोपै साखी भरे आइ तोपै व्याहि बेटी दीजे लीजे करौ सुखभोग है ॥ ३९ ॥ आयो वृंदावन वनवास श्रीगोपालजूसों बोल्यो चलो राखी देवो लई है लिखाइकै। बीते कैऊ याम तब बोले श्याम सुंदर जू प्रतिमा न चले तोपै बोले क्यों जु भाइकै ॥ लागे जब संग युग सेर भोग धरो रंग आधे आध पावें चले नूपुर बजाइकै । ध्वनि तेरे कान परै पाछे जिनि दीठ करे करे रहौ वाही ओर कही मैं सुनाइकै ॥ २४० ॥ गए ढिग गांव कही नेकु तौ चिंता उर है चितएते ठाडे दियो मृदु मुसकायके । ल्यावो जूं बुलाय कह्यो आय देखो आय आप सुनतहि चौकी सब ग्राम आयो धायके॥बोलिकै सुनाई साखी पूजि हिये अभिलाषी लाख लाख भांति रंग भर्यो उर भायके । आयो न सरूप फेरी बिनै कारि राख्यो घेरी भूप सुखढेरि दियो अबलों बजायके ॥४१॥

रामदास भक्तजूका वर्णन ।

क०—द्वारिकाके ढिगही डाकौर एक गांव रहे रहै रामदास भक्त भक्ति याको प्यारिये। जागरण एकादशी करै रणछोरजूके भयो तन वृद्ध आज्ञा

दई नहिं धारिये॥ बोले भरि आय तेरो आयवो सह्यो न जाय चलौं घर धाय ते रे ल्यावो गाडी भारिये। खिरकी जू मंदिरके पाछे तहां ठाढी करौ भरौ अंकवारी मोको बेगही पधारिये॥ ४२॥ करि वाही भांति आयो जागरण गाडी चढि जानी सब वृद्ध भयो थकी पांवगति है। द्वादशीकी आधी रात लेके चल्यो मोदगात भूषण उतारि धरे जाकी सांची रति है॥ मंदिर उघारि देखें परी है उजारि तहां दौरी पाछे जानि देखें करी कौन मति है। बापी पधराय होय जाय सुख पाय रह्यो गह्यो चल्यो जाय आनि मार्‍यो धाव अति है॥ ४३॥ देखें चहूं दिशि गाडी कहूं पै न पाये हरि पछतावो करि कहैं भक्तके लगाई है। बोलि उठ्यो एक इहिओर यह गयो हुतो जाय देखें बावरीको लोह लपटाई है॥ दासको जू डारि चोट ओट लई अंगमेंही नहीं मैं तो जाऊं विजैमूरति बताई है। मेरी सम सोनो लेहु कही जन तोलि देहु मेरे कहां बोल्यो वारी तियाको जिताई है॥ ४४॥ लगे जब तोलिवेको बारी पाछे डारि दई नई गति भई पल उठे नाहिं बारीको। तब तो खिसाने भए भए सबै उठि घर गए कैसे सुख पावें फिर्‍यो मतिहि मुरारीको॥ घरही विराजे आप कह्यो भक्तिको प्रताप जाय करें जोपै फुरे रूप लाल प्यारीको। बलिबंध नाम प्रभु बांधे बलि भयो तब आयुधको छत सुनि आए चोट मारीको॥ ४५॥

छप्पय—जसुस्वामीके वृषभ चोरि व्रजवासी लाये।
तैसेई दिये श्याम बरष दिन खेत जुताये॥
नाभिज्यों नंददास मुई इक बच्छि जिवाई।
अंब अल्हको नये प्रगट जग गाथा गाई॥
वारमुखीके मुकुटको, श्रीरंगनाथको शिर नयो।
बच्छहरण पीछे विदित, सुनो संत अचरज भयो॥ ५४॥

जसूस्वामीजूका वर्णन।

क०—जसूनाम स्वामी गंगायमुनाके मध्य रहै गहै साधुसेवा ताको खेती

उपजावही। चोरि गये बैल ताकी इनको न सुधि कछू तैसे श्याम हल जुते बैल मन भावही ॥ आए व्रजवासी पैठ वृषभ निहारि कही इन्हैं कौन ल्यायो घर जाय देखि आवही। ऐसे बार दोय चार फिरेहु न ठीक होत पूंछी पुनि ल्याय आय उन्हैं पै न पावही ॥ ४६ ॥ बडाई प्रभाव देख्यो तैसे प्रभु बैल दियो भयो हिये भाव जाय पांयनिमें परे हैं। निपट अधीन दीन भाषी अभिलाषी जानि दयाके निधान स्वामी शिष्य लेके करे हैं ॥ चोरी त्यागि दई अति शुद्ध बुद्धि भई नई रीति गहि लई साधुपंथ अनुसरे हैं। अन्न पहुँचावे दूध दही ले लडावे आवे संतगुण गावे वे अनंत सुख भरे हैं ॥ ४७ ॥

अथ नंददासजूका वर्णन ।

टी० क०–निकट बरेली गांव तामें सो हवेली रहै नंददास विप्र भक्त साधुसेवारागी है। करें द्विज द्वेष तासों मुई एक बछिया ले डारि दई खेतमांछ गारी जक लागी है ॥ हत्याको प्रसंग करै संतजनहूसों लरै हिंदू सो मारें यह बडोई अभागी है। खेतपर जाय वाहि लई है जिवाय देखि देखि परि पांय भक्ति भाये मति पागी है ॥ ४८ ॥

अह्लजूका वर्णन ।

टी० क०–चले जात अह्ल मग लागो बाग दीठ पर्‍यो कारि अनुराग हरिसेवा विसतारिये। पके रहैं आंब मांगे मालीपास भोग लिये कहो लीजै कही झुँकि आंई सब डारिये ॥ चलो दौरि राजा जहां जाइकै सुनाई बात गात भई प्रीति अलुटत पांव धारिये। आवतही लौटि गयो मैं तो जू सनाथ भयो दयो ले प्रसाद भक्तिभाव ले संभारिये ॥ ४९ ॥

वारमुखीजूका वर्णन ।

टी० क०–वेश्याको प्रसंग सुनो अति रसरंगभर्‍यो मार्‍यो घर धन अहो तौपै कौन कामको। चले मग जात जनु ठौर स्वच्छ आई मन छाई भुमि आसनसों लोभ नहीं दामको ॥ निकसी झमकि द्वार हंससे निहारि सब कौन भाग जागे भेद नहीं मेरे नामको। मोहरनि पात्र भरि ले महंत आगे

धर्यो ढर्यो दृग नीर कही भोग करो श्यामको॥ २५०॥ पूंछी तुम कौन काके भौनमें जनम लियो कियो सुनि मौन महाचिंता चित्त धरी है। खोलिकै निशंक कहौ शंका जिनि आनौ मन कही वारमुखी तौपै आय पांय परी है॥ भर्यो है भंडार धन करो अंगीकार अब करिये विचार जोपै तोपै यह मरी है। एक है उपाय हाथ रंगनाथजूको अहो कीजिये मुकुट जामें जाति मति हरी है॥ ५१॥ विप्रहू न छुवैं जाको रंगनाथ कैसें लेत देह हम हाथ तोको रहै इहां कीजिये। कियोई बनाय सब घरको लगाय धन बगि ठनि चली हाथ मधि करि लीजिये॥ संगआज्ञा पायके निशंक गई मंदिरमें फिरी यों सशंक दृग तिया धर्म भीजिये। बोले आप याको ल्याय आय पहिराय जाय दियो पहिराय नयो सीस मति रीझिये॥ ५२॥

छप्पय—बीच दिये रघुनाथ भक्तसंग ठगिया लागे।
निर्जन वनमें जाय दुष्टक्रम कियो अभागे॥
बीच दिये सो कहां राम कहि नारि पुकारी।
आये शारंगपाणि शोकसागरते तारी॥
दुष्ट किये निर्जीव सब, दासप्राणसंज्ञा धरी।
और युगनते कमलनयन, कलियुग बहुत कृपा करी॥५५॥

टी० क०—विप्र हरिभक्त कारि गौनो चल्यो तियासंग जाके दूनो रंग ताकी बात ले जनाइये। मन ठग मिले द्विज पूंछे अहो कहा जात जहा तुम जावो यामें मन न पत्याइये॥ पंथको छुटाय चाहैं वनमें लिवाय जाय कहैं अति सूधो पैडो उरमें न आइये। बोले बीच राम तऊ हिये नेकु धकधकी कही उही भाम श्यामनाम कहां पाइये॥ ५३॥ चले लागि संग अब रंगको कुरंग करौ तियापर रीझे भक्ति सांचि इन जानी है। गये वनमध्य ठग लोभलगि मार्यो विप्र क्षिप्र लेके चले वधू अति बिलखानी है॥ देखै फिरि फिरि पाछे कहै कहा देखै मार्यो तब तो उचार्यो हेर्यो वाहि बीच प्रानी है। आये राम प्यारे सब दुष्ट मारि डारे साधु प्राण दे उबारे हित रीति यों बखानी है॥ ५४॥

छप्पय–तिलकदाम धरि कोय ताहि गुरुगोविंद जानै ।
षटदर्शनी अभाव सर्वथा घटकरि मानै ॥
भांड भक्तको भेष हांसिहित भंडकुल ल्याये ।
नरपतिके दृढ नेम ताहिपै पांव धुवाये ॥
भांडभेष गाढे गह्यो, दरश परश उपजी भगति ।
एक भूप भागवतकी, कथा सुनत हरि होइ रति ॥ ५६॥

टी०क०–राजा भक्तराज डोम भांड कौन काज होय भोग गई याके धन हरिको न दीजिये । आय भेष धारि ले पुजाय नाचैं देके तारि नृपति निहारि कही यों निहाल कीजिये॥ भोजन कराय भारि मोहरनि थार ल्याय आगे धरि विनै करी अजू यह लीजिये । भई भक्तिराशि बोले आवै वास भावै नाहिं बाह गहे कैसे रहै चलै मति भीजिये ॥ ५५ ॥

छप्पय–हरिसुमिरण हरिध्यान आन काहू न जनावै ।
अलगानि इहि विधि रहै अंगना मरम न पावै ॥
निद्रावश सो भूप वदनते नाम उचाऱ्यो ।
रानी पतिपै रीझि बहुत वसु तापर वाऱ्यो ॥
ऋषिराज शोचि कह्यो नारिसों, आजु भक्ति मेरी कुजी ।
अंतरनिष्ठ नरपाल इक, परम धर्म नाहिन धुजी ॥ ५७ ॥

टी०क०–तिया हरिभक्त कहै पति मैं न भक्त पायो रहै मुरसायो मन शोच बढ्यो भारी है । मरम न जान्यो निशि सोवत पिछानो भाव विरह-प्रभाव नाम निकस्यो बिहारी है ॥ सुनतहि रानी प्रेमसागर समानी भोर संपति लुटाई मान्यो नृपति जियारी हैं । देखि उतसाह भूप पूंछ्यो सो निचाह कह्यो रह्यो तन ठौर नाम जीव यों विचारी है ॥ ५६ ॥ देखि तन त्याग पति भई और गति याकी ऐसे रतिवान मैं न भेद कछु पायो है। भयो दुःख भारी शुद्धि बुद्धि सब टारी तब नेकु न विचारी भावराशि हियो छायो है॥ निशि दिन ध्यान विरह प्रबल तजे प्रान भक्तिरसखान रूप कापै

जात गायो है। जाके यह होय सोय जानै रस भाये सब डारै मति खोय यामैं प्रगट दिखायो है ॥ ५७ ॥

छप्पय-अनुचर आज्ञा मांगि कह्यो कारजको जैहों ।
आचारज इक बात तोहिं आयेते कैहों ॥
स्वामी रह्यो समाय दास दर्शनको आयो ।
गुरुकी गिरा विश्वास फेर सब घरमैं ल्यायो ॥
शिषपन सांचो करनको, विभु सब सुनत सोई कह्यो ।
गुरुगदित वचन शिष्य सत्य अति, दृढ प्रतीति गाढो गह्यो ५८

गुरुनिष्ठाका वर्णन ।

टी० क०-बडो गुरुनिष्ठ कछु घटी साधु इष्ट जाने स्वामी संत पूज्य माने कैसे समझाइये। नित्यही विचारी पुनि टारे पै उचारै नाहिं चल्यो जब रामतिको कही फिरि आइये॥ शपथ दिवाई न जराइवेको दियो तन लायो यों फिराइ वहै बात जू जनाइये। सांचो भाव जानि प्रान आइ सो बखान कियो करो भक्तसेवा करी वर्षलों दिखाईये ॥ ५८ ॥

छप्पय-सदाचार श्रुति शास्त्रवचन अविरुद्ध उचार्‍यो ।
नीर क्षीर विवरन्न परमहंसनउर धार्‍यो ।
भगवत्कृपाप्रसाद परमगति इहि तन पाई ।
राजसिंहासन बैठि ज्ञाति परतीति दिखाई ॥
वर्णाश्रमअभिमान तजि, पदरज वंदहिं जासुकी ।
संदेहग्रंथखंडननिपुण, वाणी विमल रैदासकी ॥ ५९ ॥

रैदासजूका वर्णन ।

टी०क०-राजनंदजूको शिष्य ब्रह्मचारी रहे एक गहे वृत्ति चूकटीकी कहे तासों बानियो। करो अंगीकार सीधो कही दश वीस वार बरषै प्रबल धार तामें वापै आनियो॥ भोगको लगावे प्रभु ध्यान नहीं आवे अरे कैसे कारि ल्यावे जाइ पूंछी नीच मानियो। दियो श्राप भारी बात सुनी न हमारी

घटि कुलमें उतारी देह सोई याको जानियो ॥ ५९ ॥ माता दूध प्यावे याको छुयोउ न भावे सुधि आवे सब पाछिली सुसेवाको प्रताप है। भई नभ वानी रामानंद मन जानी बडो दंड दियो मानी बेगि आयो चल्यो आप है ॥ दुखी पिता माता देखि धाय लपटाय पांय कीजिये उपाय कि शिष्य गयो पाप है। स्तनपान कियो जियो लियो उन्हें ईश जानि निपट अज्ञान फेरी भूले भयो ताप है ॥ २६० ॥ बडेई रैदास हरीदासनसों प्रीति करी पिता न सुहाइ दई ठौर पिछवारही। हुतो धन माल कन दियो हू न हाल तिया पति सुखजाल अहो किये जब न्यारही ॥ गाठे पग दासी कहू बात न प्रकाशी ल्यावे खाल करे जूती साधु संतको सँभारही। डारि एक छानी कियो सेवाको सुस्थान रहे चौंडे आप जानि बांटि पावे यहै बारही ॥ ६१ ॥ सहे अति कष्ट अंग हिये सुख शील रंग आए हरि प्यारे लियो भक्तभेष धारिकै। कीनो बहुमान खानपानसों प्रसन्न व्हैकै दीनो कह्यो पारस है राखियो सँभारिकै ॥ मेरे धन राम कछु पाथर न सरे काम दाम मैं न चाहों चाहों वारों तन डारिके। रायी एक सोनो दियो करि कृपा राखो राख्यो वह छांनिमांझ लेहुगो निकारिकै ॥ ६२ ॥ आये फिरि श्याम मास तेरह वितीत भये प्रीति करि बोले कहो पारसकी रीतिको। वाही ठौर जीजे मेरे मन न पतीजे वह चाहो सोई कीजे मैं तो पावत हों भीतिको ॥ लेके उठि गये नये कौतुक सो सुनो पावें सेवत मुहर पांच नितही प्रतीतिको। सेवाहू करत डर लाग्यो निशि कह्यो हरि छोंडो अरि अपनी औ राखो मेरी जीतिको ॥ ६३ ॥ मानि लई बात नई ठौर ले बनाय वाय संतनि बसाय हरिमंदिर चुनायो है। विविध वितान तान गनो जो प्रमान होइ भोर गई भक्ति पुरी जग यश गायो है॥ दरशन आवें लोग नानाविधि राग भोग रोग भयो विप्रनको तन सब छायो है। बडेई खिलारी वे रहे हैं छानि डारी करि घर पै अँटारी फेरि द्विजन सिखायो है ॥ ६४ ॥ प्रीतिरस-राशि सो रैदास हरि सेवत हैं घरमें दुराइ लोकरंजनादि टारी है । प्रेरि दिये

ह्दै जाइ द्विजनि पुकार करि भरी सभा नृप आगे कह्यो मुख गारी है॥ जनको बुलाइ समझाइ न्याइ प्रभु सौंपि कीनो जग यश साधुलीला मनुहारी है। जिते प्रतिकूल मैं तो मानों अनुकूल याते संतनप्रभाव मणिकोठरीकी तारी है॥६५॥ बसत चितोरमांझ रानी एक झाली नाम नाम बिन काम खाली आनि शिष्य भई है। संग हुते विप्र सुनि क्षिप्र तन आगि लागी भागि मति नृप आगे भीर सब गई है ॥ बैसेही सिंहासनपै आइके विराजे प्रभु पढे वेदवाणी पै न आये यह नई है। पतित पावन नाम कीजिये प्रगट आजु मायो पद गोद आइ बैठे भक्ति लई है ॥ ६६ ॥ गई घर झाली पुनि बोलिकै पठाये अहो जैसे प्रतिपाली अब तैसे प्रतिपालिये। आपहू पधारे उन बहु धन पट वारे विप्र सुनि पांव धारे सीधो दे निबारिये ॥ करिकै रसोई द्विज भोजन करन बैठे द्वै द्वै माधि एक यों रैदासको निहारिये। देखि भई आंखें दीन भाषैं शिष्य लाखों भये स्वर्णको जनेऊ काढ्यो त्वचा कीनी न्यारिये ॥ ६७ ॥

छप्पय–भक्तिविमुख जो धर्म सुसब अधरमकरि गाये।
योग यज्ञ व्रत दान भजन बिन तुच्छ दिखाये ॥
हिंदु तुरकप्रमाण रमैनी सबदी साखी।
पक्षपात नहिं वचन सबनके हितकी भाखी ॥
आरूढ दशा है जगतपर, मुख देखी नाहिंन भनी।
कबीर कानि राखी नहीं, वर्णाश्रम षटदर्शनी ॥ ६० ॥

कबीरसाहेबजूका वर्णन।

टी० क०–अतिहि गँभीर मत सरस कबीर हियो लियो भक्ति भाव जाति पांति सब टारिये। भई नभवानी देह तिलक खानी कह्यो करो गुरु रामानंद गरे माला धारिये॥ देखें नहिं मुख मेरो मानिकै मलेच्छ मोको जात न्हान गंगा कही मग तन ढारिये। रजनीके शेषमें आवेशसों चलत आप परे पग राम कहे मंत्र सो विचारिये॥ ६८ ॥ कीनी वही बात माला

तिलक बनाई गात मानि उतपात मात सोर कियो भारियै । पहुँची पुकार रामानंदजूके पास आनि कही कोऊ पूंछे तुम नाम ले उचारियै ॥ ल्यावो जू पकारि वाको कब हम कियो शिष्य ल्याये कारि परदामें पूंछि कहि डारियै । रामनाम मंत्र यही लिख्यो सब तंत्रनमे खोलि पट मिले सांचो मति उर धारियै ॥ ६९ ॥ बुने तानो बानो हिये राम मडरानो कहि कैसेकै बखानों वह रीति कछु न्यारियै । उतनोई करें जामें तन निरवाह होइ भोइ गई औ रै बात भक्ति लागि प्यारियै ॥ ठाढे मंडीमाझ पट बेंचन लै जन कोऊ आयो मोको देहु देह मेरी है उघारियै । लग्यो देन आधो फारि आधेसों न काम होत दियो सब लेवो जुपै यहै उर धारियै ॥ २७० ॥ तिया सुत मात मग्ग देखें भूखे आवें कब दबि रहे हाटनमें ल्यावें कहा धामको । सांचो भक्तिभाव जानि निपट सुजान वे तो कृपाके निधान गृह शोच पर्‍यो श्यामको ॥ बालद ले धाये दिन तीनि यों बिताये जब आये घर डारि दई लेई है अरामको। माता करे सोर कोउ हाकिम मरोर बांधे डारो बिन जाते सुत लेत नहीं दामको ॥ ७१ ॥ गये जन दोई चारि ढूंढिकै लिवाय लाये आये घर सुनि बात जानि प्रभु पीरको । रहे सुख पाइ कृपा करी रघुराइ दई छिनमें लुटाइ सब बोलि भक्तभीरको ॥ दियो लौंडि तानो बानो सुख सरसानो हिये किये रोष धाये सुनि विप्र तजि धीरको । क्योंरे ते जुलाहे धन पायो न बुलाये हमें शूद्रनको दियो जावो कहें यों कबीरकों ॥ ७२ ॥ क्यों जु उठि जाऊं कछु चोरी धन लाऊं नित हरिगुण गाऊं कोऊ राहमें न मारी है । उनको ले मान कियो वाहीमें अमान भयो दयो जोपै जाइ हमें तोहिं तो जियारी है ॥ घरमें तो नाहिं मंडी जांहि तुम रहो बैठे नीठिकै छुटायो पैंडो छिपे व्याधि टारी है । आय प्रभु आप द्रव्य लाय समाधान कियो लियो सुख होइ भक्तिकीरति उजारी है ॥ ७३ ॥ ब्राह्मणको रूप धारि आए छपि बैठे जहां काहेको मरत भूख जावो जू कबीरके । कोउ जाइ द्वार ताहि देत है अढाई सेर बेर जिनि लावो लेच

जैये यों बहीरके ॥ आये घरमांझ देखि निपट मगन भये नये नये कौतुक ए कैसे रहे धीरके । वारमुखी लई संग मानों वाही रंग रँगे जानो यह बात करी डर अति भीरके ॥ ७४ ॥ संत देखि दुरे सुख भयोई असंतनिको तब तो विचार मनमांझ और आयो है । बैठि नृपसभा जहां गएपै न मान कियो कियो एक चीज उठि जल ढरकायो है ॥ राजा जिय शोच परयो करयो कहा कह्यो तब जगन्नाथ पंडा पांव जरत बचायो है । सुनि अचरज भरे नृपते पठाए गर ल्याए सुधि कही अजू सांचही सुनायो है ॥ ७५॥ कही राजा रानीसों जु बात वह सांच भई आंच लागि हिये अब कहो कहा कीजिये । चलेही बनत चले सीस तृण बोझ भारी गरेसों कुल्हारी बांधि तिया संग भीजिये ॥ निकसे बजार ह्वैके डारि दई लोकलाज कियो मैं अकाज छिन छिन तन लीजिये । दूरिते कबीर देखि ह्वै गए अधीर महा आये उठि आगे कह्यो डारि माति रीझिये ॥ ७६ ॥ देखिकै प्रभाव फेरि उपज्यो अभाव द्विज आयो बादशाह सो सिकंदर सु नांव है । विमुखसमूह संग मातन्ह मिलाय लई जायके पुकारे जू दुखायो सब गांव है ॥ ल्यावो रे पकरि वाको देखों मैं मकर कैसो अकर मिटाऊं गाढे जकर तनाव है । आनि ठाढे किये काजी कहत सलाम करो जानो न सलाम जानों राम गाढे पांव है ॥ ७७ ॥ बांधिकै जंजीर गंगानीरमांझ बोरि दियो जियो तीर ठाढो कहें जंत्र मंत्र आवही । लकरिनमांझ डारि अगनि प्रजाहि दई गई मानो भई देह कंचन लजावही ॥ विफल उपाय भये तऊ नहिं आये नये तब मतवारो हाथी आनिकै झुकावही । आवत न ढिग औ चिघारी हाय भाजि जाइ आप आगे सिंहरूप बैठो सो भगावही ॥ ७८ ॥ देख्यो बादशाह भाव कूदि परयो गहे पांव देखि करामात मात भये सब लोग हैं। प्रभुपै बचाय लीजे हमें न गजब कीजे लिये जोई चाहो गांव देश नाना भोग हैं ॥ चाहै एक राम जाको जपैं आठौं याम और दामसों न काम जामें भरे कोटि रोग हैं । आये घर जीति साधु मिले करी

प्रीति जिन्हें हरिकी प्रतीति वेई गायवेके योग हैं ॥ ७९ ॥ होयके खि-
साने द्विजजन चारि विप्रनिके मुंडानि मुंडाइ भेष सुंदर बनाए हैं। दूर
दूर गांवनिमें नांवनिको पूंछि २ नांव ले कबीरजूको झूंठे न्योति आए हैं॥
आए सब साधु सुनि एतो दूरि गए कहूं चहूं दिशि संतनके लिये हरि
धाए हैं ॥ इनहीको रूप धरि न्यारि न्यारी टौर बैठे एऊ मिलि गए नीके
पोखिकै रिझाए हैं ॥ ८० ॥ आई अपछरा छरिवेको लिये वेष किये
हिये हेखि गाढे फिरि गई नाहिं लागी है। चतुर्भुज रूप प्रभु आनिकै
प्रगट कियो लियो फल नैननको बडो बडभागी है ॥ सीस धरे हाथ तन
साथ मेरे धाम आवो गावो गुन रहो जौलों तेरी मति पागी है ॥ मगहमें
जाइ भक्तिभावको दिखाइ बहु फूलन मँगाइ पौढी मिल्यो हरि रागी है ॥८१॥

छप्पय–प्रथम भवानीभक्त मुक्ति मांगनको धायो।
सत्य कह्यो तिहिं शक्ति सुदृढ हरिशरण बतायो।
रामानंद पद पाय भए अति भक्तिकि सींवा।
गुण असंख्य निर्मोल संत राखत धरि ग्रीवा॥
परस प्रणाली सरस भइ, सकलविश्वमंगल कियो।
पीपा प्रताप जगवासना, नाहरको उपदेश दियो॥ ६१॥

पीपाभक्तजूका वर्णन।

टी०क०–गांगरोल गढ बडो पीपानाम राजा भयो लयो पण देवीसेवा
रंग चढ्यो भारिये। आए पुर साधु सीधो दियो जोई सोई लियो कियो
मनमांझ प्रभु बुद्धि फेरि डारिये ॥ सोयो निशि रोयो देखि सुपनो विहाल
अति प्रेत विकराल देह धरिकै पछारिये। अब न सुहाय कछु बहु पाय
परी गई नई रीति भई याहि भक्ति लागी प्यारिये ॥ ८२ ॥ पूंछ्यो हरि
पायवेको मग जब देवी कही सही रामानंद गुरु करि प्रभु पाइये। लोग
जाने बौरो भयो गयो यह काशीपुरी फुरी मति अति आए जहां हरि गाइये॥
द्वारमें न जान देत आज्ञा ईश लेत कही राजासिनहेत सुनि सबही लुटा-

इयो कह्यो कुवां गिरो चले गिरन प्रसन्न हिये जिये सुख पायो ल्यायो दरश दिखाइये ॥ ८३ ॥ किये शिष्य कृपा कारि धरि हरिभक्ति हृदै कही अब जावो गेह सेवा साधु कीजिये । बितये वरष जब सरस टहल जानि संत सुख मानि आवें घरमधि लीजिये ॥ आय आज्ञा पाय धाम कीनी अभिराम रीति प्रीतिको न पारावर चीठी लिखि दीजिये । हूजिये कृपालु वही बात प्रतिपाल करो चले युग वीस जन संग मति रीझिये ॥ ८४ ॥ कबीर रैदास आदि दास सब संग लिये आए पुरपास पीपा पालकी ले आयो है । करिहि साष्टांग न्यारी न्यारी बिनै साधुनको धनको लुटाय सो समाज पधरायो है ॥ जैसी कीनी सेवा बहु मेवा नाना राग भोग बाणीके न योग भाग कापै जात गायो है । जानि भक्तिरीति घर रहो कै अतीति होउ करिकै प्रतीति गुरुपग लगि धायो है ॥ ८५ ॥ लागी संग रानि दस दोइ कही मानी नहिं कष्टको बतावे डर पावे मन ल्यावहीं । कामरीन फारि मधि मेखला पहारि लेवो देवो डारि आभरण जोपै नहिं भावहीं ॥ काहूपै न होय दियो रोय भोय भक्ति आई छोटी नाम सीता गरे डरी न लजावहीं । यहू दूरि डारो करो तनको उघारो कियो दयो रामानंद हियो पीपा न सुहावही ॥ ८६ ॥ जोपै यापै कृपा करी दीजे काहू संग करी मे रे नहीं रंग यामें कही बार बार है । सौंहको दिवाय दई लई तब कर धरी चले ढरी चले ढरी विप्र एक छोडे न विचार है ॥ खायो विष ज्यायो पुनि फेरिकै पठायो सब आयो यों समाज द्वारावती सुखसार है । रहे कैउ दिन आज्ञा मांगी इन रहिवेकी कूदे सिंधुमांझ चाह उपजी अपार है ॥ ८७ ॥ आये आगे लेन आप दियो है पठाय जन देखि द्वारावती कृष्ण मिले बहु भायकै । महल महलमांझ चहल पहल लेखि रहे दिन सात सुख सकै कौन गायकै ॥ आज्ञा दई जायवेकी जायवो न चाहै हिये पिये वह रूप देखि मोहिंको जु जायकै । भक्त बूडि गयो यह बडोई कलंक भयो मेटो तम अंक शंक गहि अकुलायकै ॥ ८८ ॥ चले पहुँचायवेको प्रीतिके आधीन आप बिन जल मीन जैसे

ऐसे फिरि आये हैं। देखि नई बात गात सूखे पट भीजे हिये लिये पहिं-चानि आनि पग लपटाये हैं॥ दई लेके छाप पाप जगतके दूरि करो ढरो कहूं और कहि सीता समझाये हैं। छठेई मिलान वनमें पठान भेंट भइ लई छीनि तिया कियो चैन प्रभु धाये हैं॥ ८९॥ अभूलगि जावो घर कैसे २ आवें डर बोली हरि जानिये न भावपै न आयो है। लेत हों परीक्षा मैं तो जानों तेरी शिक्षा तौपै सुनि दृग बात कान अति सुख पायो है॥ चले मग दूसरे सु तामें एक सिंह रहे आयो वास लेत शिष्य कियो सम-झायो है। आए और गांव शेषशायी प्रभु नाम रहे करे वास हरे ढरे चींघर सुहायो है ॥ २९०॥ दोउ तिया पति देखे आए भागवत तौपै घरकी कुगति रति सांची लें दिखाई है। लहँगा उतारि बेंचि दियो ताको सीधो लियो करौ अजू पाक वधू कोठीमें दुराई॥ है करि लै रसोई सोई भागे लगि बैठे कह्यो आवो मिलि दोउ लेउ पाछे शीत भाई है। बाहूको बुलावो ल्यावो आनिकै जेंवावो तब सीता गई वाही ठौर नगन लखाई है॥९१॥ पूंछे कहो बात ए उघारे क्यों हैं गात कही ऐसेही बिहात साधुसेवा मन भाई है। आवें जब संत सुख होत है अनंत तन ढक्यो कै उघारो कहा चरचा चलाई है॥ जानि गई प्रीति रीति देखि एक इनहींमें हमको कहावे तौपै छटाहू न पाई है। दियो पट आधो फारि गहिकै निकारि लई भई सुख सेल पाछे पीपासों सुनाई है॥ ९२॥ करें वेश्याकर्म अब धर्म है हमारो यही कही जाइ बैठी जहां नाजनकी ढेरी है। घेरि आए लोग जिन्हें नैननको रोग लखि दूरि भयो सोग नेकु नीकेहु न हेरी है॥ कहें तुम कौन वारमुखी नहिं भौन संग भरुवा सु गहै मौन सुनि परी बेरी है। करी अन्न-राशि आगे मुहरें रुपैया पागे पठै दई चींघरके तबहीं निबेरी है॥ ९३॥ आज्ञा मांगी टोडें आए कभू भूखे कभू धाए औंचकही दास पाए गयो हो सनानको। मुहरनिभांडो भूमि गाड्यो देखि छोंडि आयो कही निशि तिया बोलि जावो सर आनको॥ चोर चाहे चोरी करे टरे सुनि वाही ओर देखी

जो उघारि सांप डारै हते प्रानको । ऐसे आय परी गनी सात सतवीस भई तोले पांच वांट करे एकके प्रमानको ॥ ९४ ॥ जोई आवे द्वार ताहि देत है अहार और बोलिकै अनंत संत भोजन करायो है। बीते दिन तीन धन ख्वाय प्याय कियो लियो सुनि नाम नृप देखिवेको आयो है ॥ देखिकै प्रसन्न भयो नयो देवो दीक्षा मोहिं दीक्षा है अतीत करें आयसु सुहायो है। चाहो सोई करो है कृपालु मोको ढरो अजू डरो आनि संपति औरानिजाय ल्यायो है ॥ ९५ ॥ कारिकै परीक्षा दई दीक्षा संग रानी दई भई ए हमारी करो परदा न संतसों। दियो धन घोरा कछु राख्यो दे निहोरा भूप मान तन छोरा बडो मान्यो जीव जंतसों ॥ सुनि जारि बारि गए भाई सैन सूरजके ऊरज प्रताप कहा कहे सीताकंतसों । आयो बनजारो मोल लियो चाहै खेलनको दियो वह काय कहो पीपाजू अनंतसों ॥ ९६ ॥ बोल्यो बनजारो दाम खोलि खेला दीजिये जु लीजिये जु आनि गांव चरण पठाए हैं । गये उठि पाछे बोलि संतनि महोछो कियो आयो वाही समै कही लेहु मन भाए हैं ॥ दरशन करि हिये भक्ति भाव भर्‍यो आनि आनिकै वसन सब साधु पहिराये हैं। और दिन न्हान गए घोरा चढि छोडि दियो लियो बांध्यो दुष्टनिने आप मानो ल्याए हैं ॥ ९७ ॥ गए हैं बुलाय आप पाछे घर संत आए अन्न कछु नाहीं कहूं जाय करि ल्याइ-ये । विषयी वणिक एक देखिकै बुलाइ लई दई सब सोंज कही सही निशि आइये ॥ भोजन करत मांझ पीपाजू पधारे पूंछि वारे तन प्राण तब कहिकै जनाइये । करिकै श्रृंगार सीता चली झुंकि मेह आयो कांधेपै चढायो वपु बानिया रिझाइये ॥ ९८ ॥ हाटपै उतारि दई द्वार आप ठाढे रहे चहे सूके पग माता कैसे करि आई हौ । स्वामिजू लिवाय ल्याय कहां हैं निहारों जाय आय पांय पर्‍यो ढर्‍यो राखो सुखदाई हौ ॥ मानो जिनि शंक काज कीजिये निशंक धन दियो बिन अंक जापै लरें मरें भाई हौ । मर्‍यो लाज भार चाहे धर्‍यो भूमि फारि दृग बहै नीर धार देखि दई दीक्षा पाई हौ

॥ ९९ ॥ चलत चलत बात नृपति श्रवण परी भरी सभा विप्र कहें बडी विपरीति हे। भूपमन आई यह निपट घटाई होत भक्ति सरसाई नाहिं जाने घटी प्रीति है॥ चले पीपा बोध देन द्वारहिते सुधि दई लई सुनि कारि आवो करों सेवारीति है। बडो मूढ राजा मोजा गाठे बैठ्यो मोची घर सुनि दौरि आयो रहे ठाढे कौन नीति है॥ ३०० ॥ हुती घरमांझ बांझ रानी एक रूपवती मांगी वही ल्यावो वेगि चल्यो सोच भारी है। डग मग पांव धरे पीपा सिंहरूप करे ठाढै देखि डरे इत आवे आप ख्वारी है ॥ जाय तो बिलाव गयो तियाढिग सुत भयो नयो भूमिपर कला जानि न तिहारी है। प्रगट्यो स्वरूप निज खीझिकै प्रसंग कह्यो कहां वह रंग शिष्य भयो लाज टारी है ॥ १॥ कियो उपदेश नृप हृदैमें प्रवेश कियो लियो वही पन आप आयो निजधाम है। बोल्यो एक नाम साधु एक निशि देहु तिया लेहु कहि भागो संग भागी सीता वाम है ॥ प्रात भए चलै नाहिं रानिहिकी आज्ञा प्रभु चल्यो हारि आगे घर घर देखि ग्राम है। आय वाही ठौर चल्यो माता पहुँचाय आऊं आये गहे पांव भाव भयो गयो काम है ॥ २ ॥ विषयी कुटिल चारि साधुभेष लियो धारि कीनी मनोहारि कही तिया निज दीजिये। कारिकै श्रृंगार सीता कोठेमांझ बैठी जाय चाहे मग आतुर है अजू जाहूँ लीजिये ॥ गये जब द्वार उठि नाहरी सुफारिवेको फारे नहिं बानो जानि आय अति खीझिये। आपनो विचारो हियो कियो भोग भावनाको मानि सांच भये शिष्य प्रभु मति धीजिये॥ ३ ॥ गूजरीको धन दियो पायो दही संतनिने ब्राह्मणको भक्त कियो देवी दीन कारिकै। तेलीको जिवायो भैंस चोरनपै फेरी लायो गाडी भारि आयो तन पांच ठौर जारिकै ॥ कागद ले कोरयो करो बनियाको सोग हरयो भरयो घर त्यागि डारी हत्याहू उतारिकै। राजाको औसेर भई संतको जु विभो दई लई चीठी मानि गये श्रीरंग उदारिकै॥ ४॥ श्रीरंगके चित्त धरयो तिये हिये भाव हऱ्यो ब्राह्मणको शोक हऱ्यो राजापै पुजायकै। चंदवा बुंझाय

लियो तेलीको ले बैल दियो दियो पुनि घरमांझ भयो सुख आयकै ॥ बडोई अकाल पर्‍यो जीव दुख दूरि कर्‍यो हर्‍यो भूमि गर्भ धन पायो दे लुटायकै। अतिबिसतर लिये किये हैं विचार यह सुने एक बार फेर भूल नाहिं गायकै ॥ ५ ॥

छप्पय–घर आये हरिदास तिनहिं गोधूम खवाये।
तात मात डर थोथ खेत लांगूल बुवाये ॥
आसपास कृषिकार खेतकी करत बडाई।
भक्त भजे कीरती प्रगट परतीत जु पाई ॥
अचरज मानत जगतमें, कहो निपज्यो कहुँ बेवयो।
धन्य धनाके भजनको, विनहि बीज अंकुर भयो ॥ ६२ ॥

धनाभक्तजूका वर्णन।

टी०क०–खेतकी तो बात कही प्रगट कवित्तमांझ सुनो एक और भई प्रथम जु रीति है। आयो साधु विप्रधाम सेवा आभिराम करै ढर्‍यो ढिग आय कही मोहूं दीजे प्रीति है ॥ पाथर ले दियो अति सावधान कियो यह छाती लाय जियो सेवे जैसी नेह नीति है। रोटी धरी आगे आखि मूंदि लियो परदाकै छुयो नाहिं टूक देखि भई बडी भीति है ॥ ६ ॥ बार बार पांव परे अरे भूख प्यास तजि धरे हिये सांचो भाव पाई प्रभु प्यारिये। छाक नित आवे नीके भोगको लगावे जोई छोडे सोई पावे प्रीति रीति कछु न्यारिये ॥ जाको कोउ खाय ताकी टहल बनाय करे ल्यावत चराय गाय हरि उर धारिये। आयो फिरि विप्र नेह खोजेहू न पायो कहूं सरसायो वाते ले दिखायो श्याम जारिये ॥ ७ ॥ द्विज लखि गायनिमें चायनि समात नाहिं भायनिकी चोट दृग लागी नीर झरी है। जायके भवग सीतारवन प्रसन्न करे बडे भाग मानि प्रीति देखि जैसी करी है। धनाको दयालु हैकै आज्ञा प्रभु दई ढरो करो गुरु रामानंद भक्ति मति हरी है। भए शिष्य जाय आय छातीसों लगाय लिये किये गृहकाम सबै सुनि जैसी धरी है ॥ ८ ॥

छप्पय–प्रभुहिं दासके काज रूप नापितको कीनो ।
क्षिप्र छुरहडी गही पाणि दर्पण तहँ लीनो ॥
ताद्दश है तिहिं काल भूपके तेल लगायो ।
उलटि राव भयो शिष्य प्रगट परचो जब पायो ॥
श्याम रहत सन्मुख सदा, ज्यों बच्छाहित धेनके ।
विदित बात जन जानिये, हरि भए सहायक सेनके ॥६३॥

सेनाभक्तजूका वर्णन ।

टी०क०–बांधो गढवास हरि साधु सेवा आस लगी पगी मति अति प्रभु परचो दिखायो है। करि नित नेम चल्यो भूपके लगाऊं तेल भयो मग मेल संत फिरि घर आयो है ॥ टहल बनाय करी नृपकी न शंक धरी धरी उर श्याम जाइ भूपति रिझायो है । पाछे सेन गयो पंथ पूंछे हिये रंग छयो भयो अचरज राजा वचन सुनायो है ॥ १ ॥ फेरि कैसे आय सुनि अतिही लजाय कही सदन पधारे संत भई यों अबार है । आवन न पायो वाहि सेवा उरझायों राजा दौरि शिर नायो देखि महिमा अपार है॥ भीजि गयो हियो दासभाव दृढ लियो पियो भक्तिरस शिष्य ह्वैकै जान्यो जोई सार है । अबलोंहू प्रीति सुत नाति उहि रीति चलें होइ जो प्रतीति प्रभु पावे निरधार है ॥ २१० ॥

छप्पय–सुखसागरकी छाप राग गौरी रुचि न्यारी ।
पदरचना गुरुमंत्र मनो आगमअनुहारी ॥
निशिदिन प्रेमप्रवाह द्रवत भूधर ज्यों निर्झर ।
हरिगुणकथा अगाध भाल राजत लीलाभर ॥
संतकंजपोषण विमल, अतिपियूष सरसीसरस ।
भक्तिदान भै हरन भुज, सुखानंद पारस परस ॥ ६४ ॥
एक समै अध्वा चलत बरावा कच्छल पाए ।
देखा देखी शिष्य तिनहुँ पीछेते खाए ॥

तिनपर स्वामी खिझे वचन करि बिन विश्वासी ।
तिन तैसे परतक्ष भूमिपर कीनी रासी ॥
सुरसरी सुवर पुनि उदक ले, पुष्परेणु तुलसी हरी ।
महिमा महाप्रसादकी, सुरसुरानंद सांची करी ॥ ६५ ॥
अतिउदार दंपत्ति त्यागि गृह वनको गवने ।
अचरज भयो तहँ एक संत सुनि जिनि हो विमने ॥
बैठे हुते एकांत आय असुरनि दुख दीयो ।
सुमिरे शारंगपाणिरूप नरहरिको कीयो ॥
सुरसुरानंदकी घरनिको कीयो ॥
सुरसुरानंदकी घरनिको,सुत राख्यो नरसिंह ज्यों ।
महासती शत ऊपमा, त्यों सत सुरसरिको रह्यो ॥ ६६ ॥
झर घर लकरी नाहिं शक्तिको सदन विदारै ।
शक्तिभक्तसों बोलि दिनहि प्रति बरही डारै ॥
लगी परोसिन होन भवानी भैंसो मारै ।
बदलेकी बेगार मूंडवाके शिर डारै ॥
भरतप्रसंग ज्यौं कालिका, लई देखि तनमें तई ।
निपट नरहरियानंदके, कर दाता दुर्गा भई ॥ ६७ ॥
नाम महानिधि मंत्र नामही सेवा पूजा।
जप तप तीरथ नाम नाम विन और न दूजा ॥
नाम प्रीति नाम वैर नाम कहि नामी बोले
नाम अजामिल साखि नाम बंधनते खोले ॥
नाम अधिक रघुनाथते, रामनिकट हनुमत कह्यो ॥
कबीरकृपाते परमतत्त्व, पद्मनाभ परचो लह्यो ॥ ६८ ॥

पद्मनाभजूका वर्णन ।

टी०क०–काशीवासी साह भयो कोढी सो निबाह कैसे पारि गए कृमि चल्यो बूडिबेको भीर है। निकसे पदम आय पूंछि ढिग जाय कही गही

देह खोलो गुण ह्नाय गंगानीर है ॥ रामनाम कहे बेर तीनमें नवीन होत भयोई नवीन कियो भक्तिमति धीर है । गये गुरुपास तुम महिमा न जानि अहो नामाभास काम करै कही यों कबीर है ॥ ११ ॥

छप्पय–भक्तिसुधाजलसमुद्र भयो बेलावलि गाढी ।
पूरबजा ज्यों रीति प्रीति उत्तरोत्तर बाढी ॥
रघुकुलसदृश स्वभाव सृष्टि गुण सदा धर्मरत ।
शूर धीर उदार दयापर दक्ष अनन्यव्रत ॥
पद्मखंड पद्मा पद्धति, प्रफुलित कर सविता उदित ।
तत्वा जीवा दक्षिणदेश, वंशीधर राजत विदित ॥ ८९ ॥

तत्त्वाजीवाजूका वर्णन ।

टी०क०–तत्त्वा जीवा भाई उभै विप्र साधु सेवा पन मन धरी बात ताते शिष्य नहीं भये हैं। गाड्यो एक ठूंठ द्वार होइ अहो हरी डार संतचरणामृतको लेके डारि नये हैं ॥ जबहिं हरित देखें ताको गुरु कारि लखें गये श्रीकबीर पूजी आस पांव लये हैं । नीठि नीठि नाम दियो परचाय धाम काम कोउ होय जोपै आवो कहि गये हैं ॥ १२ ॥ काना कानी भई द्विज जानी जाति गई पाति न्यारी करि दई कोऊ बेटी नहीं लेत है चल्यो एक काशी जहां बसत कबीर धीर जाय कही पीर जब पूंछ्यो कौन हेत है ॥ दोऊ तुम भाइ करो आपमें सगाई होइ भक्ति सरसाई न घटाई चित चेत है । आय व्है करी परी ज्ञाति खरबरी कहैं कहा उर धरी कछु मतिहू अचेत है ॥ १३ ॥ करैं यही बात हमैं और न सुहात आये सबै हाहा खात यह छांडि हठ दीजिये । पूंछिवेको फेरि गये करो ब्याह जोपै नये दंड कारि नाना भांति भक्ति दृढ कीजिये ॥ तब दई सुता लई पांतिन प्रसन्न ह्वैकै प्रीति हरिभक्तनसों सदा रस पीजिये । विमुखसमूह देखि समुख बडाई करै धरै हियेमांझ कहै पनपर रीझिये ॥ १४ ॥

छप्पय–पहिले वेद विभाग कथित पुराण अष्टादश ।

भारतादि भागवत मथित उद्धाऱ्यो हरियश ॥
अब सोधे सब ग्रंथ अर्थभाषा विस्ताऱ्यो ।
लीलाजयजयजयति गाय भवपार उताऱ्यो ॥
जगन्नाथ इष्ट वैराग्यसींव, करुणारस भीज्यो हियो ।
विनय व्यास मनो प्रगट व्है, जगको हितमाधवकियो ॥७०॥

माधवदासजूका वर्णन ।

टी०क०—माधोदास द्विज निज तिय तिन त्याग कियो लियो इन जानि जग ऐसोई ब्योहार हे । सुतकी बढन योग लियो नित चाहत हों भई यह और ले दिखाई करतार है ॥ ताते तजि दियो गृह वेई सब पालें देह करे अभिमान सोई जानिये गँवार हैं । आये नीलगिरिधाम रहे गिरि सिंधुतीर अति मतिधीर भूंख प्यास न विचार है ॥ १५ ॥ भये दिन तीन वे तो भूंखके अधीन नाहिं रहे हरिलीन प्रभु शोच परयो भारिये । दियो सैन भोग आप लक्ष्मीजू ले पधारी हाटककी थारी झनझन पांव धारिये ॥ बैठे हैं कुटीमें पीठि दिये रूप रँगे बिजुरीसी कौंधि गई नीके न निहारिये । देखि सो प्रसाद बडो मन अहलाद भयो लयो भाग मानि पात्र धरयोई विचारिये ॥ १६ ॥ खोले जो किंवार थार देखिये न शोच पऱ्यो कऱ्यो ले यतन ढूंढि वाही ठौर पायो है । ल्याये बांधि मारी बेतधारी जगन्नाथ देव भेव जब जान्यो पीठि चिन्ह दरसायो है ॥ कही पुनि आपमेंही दियो जब लियो याने मानि अपराध पांव गाहिकै क्षमायो है। भई यों प्रसिद्ध बात कीरति न मात कहूं सुनिकै लजात साधुशील यहै गायो है ॥ १७ ॥ देखत स्वरूप सुधि तमकी विसारि जात रहि जात मंदिरमें जाने नहीं कोई है । लग्यो शीत गात सुनो बात प्रभु कांपि उठे दई सकलात आनि प्रीति हिये भोई है॥ लागे जब वेगि वेगि जाय परे सिंधुतीर चाहै जब नीर लियो ठाढे देह धोई है । कारिकै विचार औ निहारि कही जाने मैं तो देत हो अपार दुःख ईशता ले खोई है ॥ १८ ॥ कहा करों अहो मोपैं रह्यो नहीं जात नेकु मेटो विथा गात मोको विथा बहु भारी है । रहै भोग शेष और

सनमें प्रवेश करै ताते नहीं दूरि करो ईशता ले टारि है॥ वहू बात सांच याकी गास एक और सुनो साधुको न हँसे कोऊ यह मैं विचारी है। देखतहि देखतमें पीडा सो विलाय गई नई नई कथा कहि भक्ति बिसतारी है ॥ १९ ॥ कीरति अभंग देखि भिक्षाको आरंभ कियो दियो काहू बाई पोता खीझत चलायकै। देवो गुण लियो नीके जलसों प्रछालि करि करी दिव्य बाती दई दियेमें बरायकै ॥ मंदिर उजारो भयो हियको अँधारो गयो गयो फेरि देखिवेको परी पांय आयकै। ऐसे हैं दयालु दुःख देत मैं निहाल करैं करि ले जो सेवा ताको सकै कौन गायकै॥ २० ॥ पंडित प्रबल दिगविजै करि आयो आप वचन सुनायो जु विचारि मोसों कीजिये। दई लिखि हारि काशी जायकै निहारि पत्र भयो अति ख्वार लिखि जीति वाकी खीझिये ॥ फेरि मिलि माधोजूसों वैसेही हरायो एक खरको मँगायो कही चढो जब धीजिये। बोल्यो जूनि बांधो कान गयो सुनि न्हान आन जगन्नाथजीते लै चढायो वाको रीझिये ॥ २१ ॥ व्रजहीकी लीला सब गावें नीलाचलमांझ मन भई चाह जाइ नैननि निहारिये। चले वृंदावन मग लगे एक गांव जहां बाई भक्त भोजनको ल्याई चाव भारिये ॥ बैठे ए प्रसाद लेत लेत दृग भरे अहो कहो कहा बात दुख हियेको उघारिये। सावरे कुँवर यह कौनको भुराय ल्याये माय कैसे जीवे सुन मति ले बिसारिये ॥ २२ ॥ चले और गांव जहां महाजन भक्त रहे गहे मनमांझ आगे विनतीहू करी है। गये वाके घर वह गयो काहू और घर भावभारि तिया आनि पांयनिमें परी है ऊपर महंत कही अबै एक संत आयो इहां तो समाई नाहिं आई अरबरी है। कीजिये रसोई जोई सिद्ध सोई ल्यावो दूध नीकेकै पिवायो नाम माधो आश भरी है ॥ २३ ॥ गये उठि पाछे भक्त आयो सो सुनायो नाम सुनि अभिराम दौरे संगही महंत है। लिये जाय पांय लपटाय सुख पाय मिले झिले घरमांझ तिया धन्य तोसों कंत है ॥ संतपति बोले मैं अनंत अपराध किये जिये अब

कही सेवो शीत मानि जंत है। आवत मिलाप होय यही राखो बात गोय आये वृंदावन जहां सदाई वसंत है॥ २४॥ देखि देखि वृंदावन मनमें मगन भये गये श्रीविहारीजूके चना तहां पाये हैं। कहि रह्यो द्वार-पाल नेकु मैं प्रसाद लाल यमुना रसाल तट भोगको लगाये हैं॥ नाना-विध पाक धरे स्वामी आप ध्यान करै बोले हरि भावे नाहिं वेई ले खवांये हैं। पूंछ्यो सो जनायो ढूंढि ल्यायो आगे गायो सब तुम तौ उदार हास रस समझाये हैं॥ २५॥ गये व्रज देखिवेको झाडिरमें खेल रहे निशिको दुराय पाय क्रम ले दिखाये हैं। लीला सुनिवेको हरियाने गांव रहे जाय गोबरहु पाथ पुनि नीलाचल धाये हैं। घरहूको आये सुत सुखी सुनि मातबानी मारगमें स्वप्न देके वणिक मिलाये हैं। याही विधि नाना भांति चरित अपार जानो जिते कछु जाने तिते गायकै सुनाये हैं॥२६॥

छप्पय–शीतकाल सकलात विदित पुरुषोत्तम दीनी।
शौच गए हरिसंग कृत्य सेवककी कीनी॥
जगन्नाथपद प्रीति निरंतर करत खवासी।
भगवतधर्मप्रधान प्रसन्न नीलाचलवासी॥
उत्कलदेश उडीसा नगर, वैनतेय सब कोउ कहै।
श्रीरघुनाथ गुसांई गरुड ज्यों, सिंहपौरि ठाढे रहैं॥ ७१॥

टी० क०–अतिअनुराग घर संपत्तिसों रह्यो पागि ताहू कारि त्याग नीलाचल कियो वास है। धनको पठावै पिता तौपै नहीं भावै कछु देखिवो सुहावै महाप्रभुजूको पास है॥ मंदिरके द्वार रूप सुंदर निहार्‍यो करै लग्यो शीत गात सकलात दई दास है। शौच संग जायवेकी रीतिको प्रमान वहै वैसे सब जानौ माधोदास सुखरास है॥२७॥ महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी आज्ञा पाइ आए वृंदावन राधाकुंडवास कियो है। रहनि कहनि रूप चहनि न कहि सके थके सुनि तन भाव रूप कारि लियो है॥ मानसीमें पायो दूध भात सरसात हिये लिये रस नारी देखि वैद कहि दियो है। कहांलों प्रताप

कहों आपुही समुझि लेहु देहु वही रीझि जैसो आगे पाय जियो हैं ॥ २८ ॥

छप्पय—गौडदेश पाखंड मेंटि कियो भजनपरायण ।
करुणासिंधु कृतज्ञ भये अगतिन गतिदायन ॥
दशधारस आक्रांत महतजनचरण उपासे ।
नाम लेत निष्पाप दुरित तिहि नरके नासे ॥
अवतार विदित पूरब मही, उभै महत देही धरी ।
श्रीनित्यानंद कृष्णचैतन्यकी, भक्तिदशोंदिशिविस्तरी ॥७२

श्रीनित्यानंदजूका वर्णन ।

टी०क०—आप बलदेव सदा वारुणीसो मत्त रहै चहै मन मानो प्रेम मत्तताई चाखिये । सोई नित्यानंद प्रभु महंतकी देह धरी भरी सब आनि तऊ पुनि अभिलाखिये ॥ भयो बोझ भारी क्योंहूं जात न संभारी जब ठौर ठौर पारषदमांझ धरी राखिये । कहत कहत और सुनत सुनत जाके भये मतवारे बहु ग्रंथ ताकी साखिये ॥ २९ ॥

श्रीकृष्णचैतन्यजूका वर्णन ।

क०—गोपिनके अनुराग आगे आप हारे श्याम जान्यो यह लाल रंग कैसे आवे तनमें । एतो सब गौर तन नख शिख बनी ठनी खुल्यो यो सुरंग अंग अंग रंगे वनमें ॥ श्यामताईमांझ सो ललाईहू समाई जाहि तासे मेरो जान फिरि आई यह मनमें । जसुमतिसुत सोई शचीसुत गौर भये नये नये नेह चोज नाचे निजगनमें ॥ ३३० ॥ आवे कभू प्रेम हेमापिंडवत तन होत कभू संधि संधि छूटि अंग बढि जात है । और एक न्यारी रीति अश्रु पिचकारी मानौ उभै लाल प्यारी भावसागर समात है । ईशता बखानि कहा करो सो प्रमान याको जगन्नाथ क्षेत्र नेत्र निरखि साक्षात है । चतुर्भुज षट्भुज रूप ले दिखाय दियो दियो जो अनूप हित बात पात पात है ॥ ३१ ॥ कृष्ण चैतन्य नाम जगत प्रगट भयो अति अभिराम ले महंत देही करी है । जितो गौडदेश भक्तिलेशहू न जाने कोऊ

सोऊ प्रेमसागरमें बोर्यो कहि हरी है ॥ भये शिरमोर एक एक जग तारिवेको धारिवेको कौन साखि पोथिनमें धरी है। कोटि कोटि अजा-मील वारि डारे दुष्ट तापै ऐसेहू मगन किये भक्ति भूमि भरी है ॥ ३२ ॥

छप्पय-उक्ति चोज अनुप्रास वरन अस्थिति अति भारी ।
वचन प्रीति निर्वाह अर्थ अद्भुत तुक धारी ॥
प्रतिबिंबित दिवि दृष्टि हृदय हरिलीला भासी ।
जन्म कर्म गुण रूप सबै रसना जु प्रकासी ॥
विमल बुद्धि गुनि औरकी, जो वह गुण श्रवणनि धरै ।
सूरकवित्त सुनि कौन कवि, जो नहिं शिरचालनकरै ॥७३॥
पौगंड बाल किशोर गोपलीला सब गाई ।
अचरज कह यह बात हुतौ पहिलो जु सखाई ॥
नयननि नीरप्रवाह रहत रोमांच रैन दिन ।
गद्गद गिरा उदार श्यामशोभा भीज्यो तन ॥
शारंग छाप ताकी भई, श्रवण सुनत आवेश देत ।
व्रजवधूरीति कलियुगविषे, परमानंद भयो, प्रेम केत ॥७४॥
काशमीरकी छाप पाप तापन युग मंडन ।
दृढ हरिभक्ति कुठार आन धर्म विटपविहंडन ॥
मथुरामध्य मलेच्छ वाद करि ववरबट जीते ।
काजी अजित अनेक देखि परचौ भै भीते ॥
विदित बात संसार सब, संत साखि नाहिन दुरी ।
श्रीकेशवभट नरमुकुटमणि, जिनकी प्रभुता विस्तरी ॥७५॥

केशवभट्टजूका वर्णन ।

टी०क०-करी दिगविजै सब पंडित हराय दिये लिये बडे बडे जीति भीति उपजाई है। फिरत चंडोल चढे गज वाजि लोल संग प्रतिमाको रंग आये नदिया प्रभाई है॥ डरे द्विज भारी महाप्रभु जू विचारी तब लीला

विसतारी गंगातीर सुखदाई है। बैठे ढिग आय बोले नम्रता जनाय रह्यो जग यश छायनेकु सुने मनभाई है ॥ ३३ ॥ लरकानि संग पढो बातें बडी बडी गढो तौपै रढो कहों सोई शीकतापै रीझिये। गंगाको सरूप कहो चहो दृग आगे सोइ नये सो श्लोक किये सुनि मति भीजिये ॥ तामें एक कंठ करि पढिकै सुनायो अहो बडो अभिलाष याकी व्याख्या करी दीजि- ये। अचरज भारी भयो कैसे तुम सीखि लयो दयो ले प्रभाव तुम्हें ताने दियो जीजिये ॥ ३४ ॥ दूषण और भूषणहु कीजिये बखान याके सुनि दुख मानि कही दोष कहां पाइये। कवित्त प्रबंध मध्य रहे खोटी गंध अहो आज्ञा मोको देहु कह्यो कहिकै सुनाइये ॥ व्याख्या करि दई नई औगुन सगुन भई आय निजधाम भोर मिले समझाइये। सरस्वतीध्यान कियो आइ ततकाल बोले बालपै हरायो सब जग जित वाइये ॥ ३५ ॥ बोली सरस्वती मेरे ईश भगवान वे तो मान मेरो कैसो सनमुख बतरा- इये। भयो दरशन तुम्हैं मन परशन होत सुनि सुख सोत वाणि आये प्रभु पाइये ॥ विनै बहु करी करी कृपा आप बोले अजू भक्तिफल लीजे काहूं भूलि न हराइये। हिये धरि लई भीर भार छोडि दई पुनि नई यहैं भई सुनि दुष्ट मरवाइये ॥ ३६ ॥ आप काश्मीर सुनि वसत वि- श्राम तीर तूरकसमूह द्वार यंत्र एक धारिये। सहज सुभाय कोउ निक- सत आय ताको पकरत जाय ताके सुनत निहारिये ॥ संग ले हजार शिष्य भरे भक्ति रंग महा अरे वाही ठौर बोले नीच पट टारिये। क्रोध भरि झारे आय सूबापै पुकारे वे तो देखि सबै हारे मारे जल बोरि डारिये ॥ ३७ ॥

छप्पय—मधुरभाव रस मिलित ललित लीला सुवलित छबि।
निरखत हरषत हृदय प्रेम वरषत सुकलित कवि ॥
भव निसतारन हेत देत दृढ भक्ति सबानि नित।
जासु सुयश शशि उदै हरत अति तम भ्रम श्रम चित ॥
आनंदकंद श्रीनंदसुत, श्रीवृषभानुसुता भजन।

श्रीभट सुभट प्रगट्यो अघट, रसरसिकनिमनमोदघन ॥७६॥
खेचरि नरकी शिष्य निपट अचरज यह आवै ।
विदित बात संसार संत मुख कीरति गावै ॥
वैरागिनके वृंद रहत संग श्याम सनेही ।
ज्यों योगेश्वरमध्य मनहुँ शोभित वैदेही ॥
श्रीभटचरणरजपरसते, सकल सृष्टि जाको नई ।
श्रीहरिव्यास तेज हरिभजनके, देवीको दीक्षा दई ॥७७॥

श्रीभटजूका वर्णन ।

टी० क०—चंद्रथावल गांव बाग देखि अनुराग भयो लयो नित नेम करि चाहे पाक कीजिये। देवीको अस्थान काहू बकरा ले मार्‍यो आनि देखत गिलानि इहां पानी नहीं पीजिये ॥ भूंखे निशि भई भक्ति तेज मिटि गई नई देह धारि लई आई लखि माति भीजिये। करो जू रसोई कौन करे कछु और भोई सोई मोको दीजे दान शिष्य करि लीजिये॥ ३८॥ करि देवी शिष्य सुनि नगरको सट कियो पटकी ले खाट जाकी बडो सरदार है । चढि मुख बोले हौं तो भई हरिव्यासदाजी जो न दास होइ तो पै अभी डारो मार है॥ आये सब भृत्य भये मानो नये तन लये गये दुःख पाप ताप किये भवपार है। कोऊ दिन रहे नाना भोग सुख लहे एक श्रद्धा कै श्वपच आयो पायो भक्तिसार है ॥ ३९ ॥

छप्पय--उपदेशे नृप सिंह रहत नित आज्ञाकारी ।
पक्क वृक्ष ज्यों नाय संतपोषक उपकारी ॥
वानी भोलाराम सुहृद सबहिनिपर छाया ।
भक्तचरणरज जांचि विशद राघवगुण गाया ॥
करमचंद कश्यपसदन, बहुरि आय मनों वपु धर्‍यो ।
अज्ञानध्वांत अंतहकरन, द्वितीय दिवाकर अवतर्‍यो॥७८॥
राग भोग नित विविध रहत परिचर्यातत्पर ।

शय्या भूषण वसन रचित रचना अपने कर ॥
वह गोकुल वह नंदसदन दीखितको जो है ।
प्रगट विभो जहँ घोषद देखि सुरपति मनमोहै ॥
वल्लभसुत बल भजनके, कलियुगमें द्वापर कियो ।
श्रीविठ्ठलनाथ ब्रजराज ज्यों, लाड लडायकैसुखलियो ॥७९॥

टी०क०—कायथ तिपुरदास भक्तिसुखराशि भर्‌यो कर्‌यो ऐसो पन सीत दगला पठाइये । निपट अमोल पट हिये हित जटि आवे ताते अति भावे नाथअंग पहिराइये ॥ आयो कोऊ काल नरपतिने बिहाल कियो भयो ईशख्याल नेकु घरमें न पाइये । वही ऋतु आई सुधि आई आंखि पानी भरि आई एक खाति दीठि यही बेंचि ल्याइये ॥ ३४० ॥ बेंचिकै बजार यों रुपैया एक पायों ताको ल्यायो मोटो थान मात्र रंगलाल गाइये । भीज्यो अनुराग पुनि नैन जलधार भीज्यो भीज्यो दीनताई धरि राख्यो और आइये ॥ कोऊ प्रभुजन आये सहज दिखाई दई भई मन दियो ले भडारी पकराइये । काहू दास दासीके न काम कापै जाऊं लेके विनती हमारीं जू गुसांई ना सुनाइये ॥ ४१ ॥ दियो ले भंडारी कर राखे धरि पट-वापै निपट सनेहीं नाथ बोले अकुलायकै । भये हैं जडाय कोऊ वेगिहिं उपाय करो विविध उढाय अंग वसन सुहायकै ॥ आज्ञा पुनि दई यों अँ-गीठी बारि दई फेरि वही भई सुनि रहै अतिहि लजायके । सेवक बुलाय कहि कौनकी कबाय आई सबै सो सुनाई एक बहली बचायकै ॥ ४२ ॥ सुनी न तिपुरदास बोल्यो धननाश भयो मोटो एक थान आयो राख्यो है छिपायकै । ल्यावो वेगि याही छिन मनकी प्रवीन जानि ल्यायो दुख मानी ब्योंति लई सो सिवायकै ॥ अंग पहिराई सुखदाई कापै जाति गाई कही तब बात जाडो गयो भरमायकै । नेह सरसाई ले दिखाई उर आई सबै ऐसी रसिकाई हृदै राखी है बसायकै ॥ ४३ ॥

छप्पय—श्रीगिरिधरजू सरस शील गोविंदजू साथहिं ।

बालकृष्ण जस वीर धीर श्रीगोकुलनाथहिं ॥
श्रीरघुनाथजू महाराज श्रीयदुनाथहिं भजि ।
श्रीघनश्यामजू पगे प्रभु अनुरागी सुधि साधि साजि ॥
ए सात प्रगट विभु भजन जग, तारन तस जस गाइये ।
श्रीविठ्ठलेशसुत सुहृद, श्रीगोवर्धनधर ध्याइये ॥ ८० ॥
श्रीवल्लभ गुरुदत्त भजनसागर गुनआगर ।
कवित नोख निर्दोष नाथसेवामें नागर ॥
वाणी विदित विदुःख सुयश गोपाल अलंकृत ।
व्रजरज अतिआराध्य वहै धारी सर्वसु चित ॥
सांनिध्य सदा हरिदासवर्य, गौर श्याम दृढ व्रत लियो ।
गिरिधरने रीझि कृष्णदासको, नाममांझ साझो दियो॥८१॥

श्रीविठ्ठलजूका वर्णन ।

टी०क०–प्रेमरसराशि कृष्णदासजू प्रकाश कियो लियो नाथ मानि सो प्रमाण जग गाइये । दिल्लीके बजारमें जलेबी सो निहारी नैन भोग ले लगाई लागी विद्यमान पाइये ॥ राग सुनि भक्तनको भयो अनुरागवश शशिसुख लालजूको जाईकै सुनाइये । देख रिझवार रिझि निकट बुलाय लई लई संग चले जग लाजको बडाइये ॥ ४४ ॥ नीके अन्हवाय पट अभरन पहिराय सोंधौहूं लगाय हरिमंदिरमें ल्याये हैं । देखि भई मतवारी कीनी ले अलापचारी कह्यो लाल देखे बोलि देखे मैंहीं भाये हैं ॥ नृत्य गान तान भावभरी मुसकान दृग रूपलपटान नाथ निपट रिझाये हैं। ह्वैके तदाकार तन छुट्यो अंगीकार करी धरी उर प्रीति मन सबके भिजाये हैं ॥ ४५ ॥ आये सूरसागर सो कही बडे नागर हो कोउ पद गावो मेरी छाया न मिलाइये । गाये पांच सात सुनि जान मुसकात कही भलेजू प्रभाती आनि करिकै सुनाइये ॥ पऱ्यो शोच भारी गिरिधारी उर धारी बात सुंदर बनाय सेज धऱ्यो यों लखाइये । आयकै सुनायो सुख पायो पछपात ले बतायोहु

मनायो रंग छायो अभू गाइये ॥ ४६ ॥ कुवांमें खिसली देह छूटि गई नई भई यों अशंका कछु और उर उर आई है । रसिकन मम दुख जानि सो सुजान नाथ दियो दरसाय तन ग्वाल सुखदाई है। गोवर्धन तीर कहि आगे बलवीर गये श्रीगुसाई धीरसों प्रमाण यों जनाई है। धनहु बतायो खोदि पायो विसवास आयो हिये सुख छायो शंक पंक ले बहाई है ॥ ४७ ॥

छप्पय—श्रीभागवत बखानि अमृतमय नदी बहाई ।
अमल करी सब अवनि तापहारक सुखदाई ॥
भक्तनसों अनुराग दीनसों परमदयाकर ।
भजन यशोदानंद संत संघटको आगर ॥
भीषम भट अंगज उदार. कलियुग दाता सुगतिके ।
वर्धमान मंगल गंभीर, उभै थंभ हरि भक्तिके ॥ ८२ ॥
रघुनंदनको दास प्रगट भूमंडल जानै ।
सर्वसु सीताराम और कछु उर नहिं आनै ॥
धनुषबाणसों प्रीति स्वामीके आयुध प्यारै ।
निकट निरंतर रहत होत कबहूं नहिं न्यारै ॥
सूर धीर हनुमतसदृश, परमउपासके प्रेमभर ।
रामरामपरतापते खेमगुसांई खेमकर ॥ ८३ ॥
तिलक दामसों प्रीति गुनहिं गुन अंतर धार्‍यो ॥
भक्तनको उत्कर्ष जन्मभरि रसन उचार्‍यो ॥
सरल हृदय संतोष जहां तहँ परउपकारी ।
उत्सवमें कत दान कियो कर्म दुष्कृत भारी ॥
हरिगोविंद जय जय गोविंद, गिरा सदा आनंदकृत ।
विठ्ठलदास माथुरमुकुट, भये अमानिय मानदत ॥ ८४ ॥

टी०क०—भाई उभै माथुर सुरानाके पुरोहित हैं लरि मरे आपसमें जियो एक जाम है । ताको सुत विठ्ठल सुदास सुखराशि हिये लिये वैस

थोरी भयो बडो सेवै श्याम है। बोल्यो नृपसभामध्य आवत न विप्रसुत क्षिप्र लेके आवो कही कह्यो पूजि काम है। फेरिकै बुलायो करो जागरण याही ठौर काहू समझायो गावे नाचे प्रेमधाम है ॥ ४८ ॥ गये संग साधु मिले विनै रंगरँगे सब राना उठि आदर दे नीके पधराये हैं। किये जा बिछौना तीन छातनके ऊपर ले नाच गाय आई प्रेम गिरे नीचे आये हैं ॥ राजामुख भयो श्वेत दुष्टनको गारी देत संत भरि अंक लेत घरमध्य ल्याये हैं। भूप बहु भेंट करी देह वाही भांति परी पाछे सुधि भई दिना तीसरे जगाये हैं ॥ ४९ ॥ उठे जब मातने जनाय सब बात कही सही नहीं जात निशि निकसे विचारिकै। आये यों छठी करामें गरुड गोविंदसेवा करत मगन हिये रहत निहारिकै ॥ राजाके जे लोग सुतो ढूंठि करि रहे बैठि तिया माता आई करै रुदन पुकारिकै। किये ले उपाय रही कितौ हाहा खाइये तौ रहे मंडराय तब बसी मनहारिकै ॥ ३५० ॥ देख्यो जब कष्ट तन प्रभुजू सुपन दियो जावो मधुपुरी ऐसे तीन बार भाखिये। आये जहां जातिपांति छायो कछु और रंग देख्यो एक खाती साधु संग अभिलाखिये ॥ तिया रहे गर्भवती सती मति सोचरती खोदित भू पाई प्रतिमाको धन राखिये। खातीको बुलाय कही लही यहु लेहु तुम उन पांय परि कह्यो रूप सुख चाखिये ॥ ५१ ॥ करे सेवा पूजा और काम नहीं दूजा जब फैलि गई भक्ति भये शिष्य बहु भायकै। बडोई समाज होत मानो सिंधुसोत आये विविध बधाये गुणि जन उठे गायकै ॥ आई एक नटी गुण रूप धनजटी अहै गावै तान कटी चटपटीसी लगायकै। दिये पट भूषण ले भूषण मिटत कहूं चहूं दिशि हेरी पुत्र दियो अकुलायकै ॥ ५२ ॥ रँगी राय नाम ताकी शिष्य एक राना सुता भयो दुख भारी नेकु जलहू न पीजिये। कहिकै पठाई वासों चाहो सोई धन लीजे मेरो प्रभुरूप मेरे नैननको दीजिये ॥ द्रव्य तो न चाहों रीझि चाहो तन मन दियो फेरिकै समाज कियो विनतीको कीजिये। जिते गुनी जन तिन्हैं दिये अनगन दाम पाछे

नृत्य करो आप देत सो न लीजिये ॥ ५३ ॥ ल्याई एक डोलामें बैठाई रंगी रायजूको सुंदर श्रृंगार कही वार तेरी आइये । कियो नृत्य भारी जो विभूति सो तो वारि लियो भरि अंकवारि भेंट कियो द्वार गाइये ॥ मोहन न्योछावरमें भयो मोहिं लेहु मति लियो उठि शिष्य तन तज्यो कहा पाइये । कह्यो जू चारित्र बडे रसिक विचित्रनको जोपै लाल मित्र कियो चाहो हियो ल्याइये ॥ ५४ ॥

छप्पय–उग्रतेज सुउदार सुघर सुथराई सींवा ।
प्रेमपुंज रसराशि महागद्गद स्वर ग्रीवा ॥
भक्तनको अपराध करे ताको फल गायो ।
हिरण्यकश्यप प्रह्लाद परम दृष्टांत दिखायो ॥
स्फुट वक्ता जगतमें, राजसभा निधरक हियो ।
हरिराम हठीले भजनबल, रानाको उत्तर दियो ॥ ८५ ॥

टी०क०–रानासों सनेह सदा चौपरको खेल्यो करे ऐसो सो संन्यासी भूमि संतकी छिनाई है ॥ जायकै पुकार्‌यो साधु झिरकी बिडार्‌यो पर्‌यो विमुखके वश बात सांच ले झुँठाई है ॥ आये हरिरामजूपै सबही जनाई रीति प्रीति करि बोले चलो आगे आवो भाई है । गये बैठे आयो जनमनमें न ल्यायो नृप तब समुझायो झार्‌यो फेरि भू दिवाई है ॥ ५५ ॥

छप्पय–पंडित कलाप्रवीण अधिक आदर तेहि आरज ।
संप्रदायशिर क्षेत्र द्वितीय मनो मध्वाचारज ॥
जेतिक हरिअवतार सबै पूरण करि जाने ।
परिपाटि ध्वज विजैसदृश भागवत बखाने ॥
श्रुतिस्मृतिसंमत पुराण, तप्तमुद्रा धारी भुजा ।
कमलाकरभट्ट जगतमें, तत्ववाद रोपी ध्वजा ॥ ८६ ॥
गोप्यस्थल मथुरामंडल जिते वाराह बखाने ॥
किये नारायण प्रगट प्रसिद्ध पृथ्वीमें जाने ॥

भक्तिसुधाको सिंधु सदा सत्संग समाजन ।
परमरसज्ञ अनन्य कृष्णलीलाको भाजन ॥
ज्ञान स्मारत पक्षको, नाहिन कोउ खंडन वियो ।
व्रज भूमिउपासक भट्ट सो, रचि पचि हरि एकै कियो॥८७॥

टी०क०—भट्ट श्रीनारायणजू भये व्रजपारायण जाय जाही ग्राम तहां व्रत करि ध्याये हैं । बोलिकै सुनावैं इहां अमुको स्वरूप है जू लीला-कुंडधाम श्याम प्रगट दिखाये हैं॥ठौर ठौर रासके विलास लै प्रगट किये जिये यों रसिक जन कोटि सुख पाये हैं। मथुराते कही चलो बेनी पूंछे बेनी कहां ऊंचे गाव आये खोदि सोतको लखाये हैं॥ ५६ ॥

छप्पय—नृत्यगानगुणनिपुण रासमैं रस वरषावत ।
अब लीला ललितादि वलित दंपतिहिं रिझावत॥
अति उदार निस्तार सुयश व्रजमंडन राजत ।
महामहोत्सव करत बहुत सबही सुख साजत ॥
श्रीनारायणभट्ट प्रभु, परम प्रीति रसवश किये ।
श्रीव्रजवल्लभ वल्लभ, दुर्लभ सुख नयनन दिये ॥ ८८ ॥
गौडदेश बंगाल हुते सबही अधिकारी ।
हय गज भवन भंडार विभव भूभुजअनुहारी ॥
यह सुख अनित विचार वास वृंदावन कीनो ।
यथालाभ संतोष कुंजकर वामन दीनो ॥
व्रजभूमि रहस्य राधाकृष्ण, भक्ति तोष उद्धार कियो ।
संसारस्वाद सुख वांतज्यों, दुहुँरूपसनातनत्यागिदियो ।८९।

टी०क०—कहत वैराग गए पागि नाभास्वामी जू वे गई यों निबरि तुक पांच लागी आंच है । रही एकमांझ धऱ्यो कोटिक कवित्त अर्थ याही ठौर ले दिखायो कवितको सांच है ॥ राधाकृष्ण रसकी अचारजता कही यामें सोई जीवनाथभट्ट छपै बानी नाच है। बडे अनुरागी ये तो

कहिये बडाई कहा अहो जिन कृपादृष्टि प्रेमपोथी बाच है॥ ५७॥ वृंदावन व्रजभूमि जानत न कोऊ प्राय दई दरसाय जैसी शुकमुख गाई है। रीतिहू उपासनाकी भाग यह अनुसार लियो रससार सो रसिक सुखदाई है॥ आज्ञा प्रभु पाय पुनि गोपीश्वर लगे आय किये ग्रंथ भाव भक्ति भांति सब पाई है। एक एक बातमें समात मन बुद्धि जब पुलकित गात दृग झरीसी लगाई है॥ ५८॥ रहे नंदगाव रूप आये श्रीसनातनजू महासुखरूप भोग खीरको लगाइये। नेकु मन आई सुखदाई प्रिया लाडलीजू मानो कोऊ बालकी सुसौंज सब ल्याइये। करिकै रसोई सोई ले प्रसाद पायो भायो अमलसो आयो चढि पूंछी सो जनाइये। फेरि जिनि ऐसी करो यही दृढ हिये धरो ढरो निजचाल कहि आंखें भरि आइये ॥५९॥ रूपगुण गान होन कान सुनि सभा सब अति अकुलात प्राण मूरछासी आई है। बडे आप धीर रहे ठाढे न शरीरसुधि बुद्धिमें न आवे ऐसी बात ले दिखाई है॥ श्रीगुसांई कर्णपूरि पाछे आये देखे आछे नेकु ढिग भये श्वास लाग्यो तब पाई है। मानों आगि आंच लागी ऐसो तन चिह्न भयो नयो यह प्रेमरीति कापै जात गाई है॥ ३६०॥ श्रीगोविंदचंद आय निशिको स्वपन दियो दियो कहि भेद सब जासों पहिंचानिये। रवों मैं खरिकमांझ पोखै निशि भोरसांझ सींचे दूध धार गाय जाय देखि जानिये॥ प्रगट ले कियो रूप अतिही अनूप छबि कवि कैसे कहे थकि रहे लखि मानिये। कहांलों बखानो भरे सागर न गागरमें नागर रसिक हिये निशिदिन आनिये॥ ६१॥ रहे श्रीसनातनजू नंदगांव पावनपै आवन दिवस तीनि दूध लेके प्यारिये। सांवरो किशोर आप पूंछे किहि ओर रहो कहे चोरि भाई पिता रीतिहू उचारिये। गये ग्राम बूझि घर हेरिये न पाये कहूं चहूं दिशि हेरि हेरि नैन भरि डारिये। अबके जो आवे फेरि जान नहिं पावे सीस लाल पाग भावे निशिदिन उर धारिये॥ ६२॥ कही व्याली रूप बेनी निरखि स्वरूप नैन जानी श्रीसनातनजू काव्य अनुसारिये। राधासरतीर द्रुम डार

गहि झूले फूले देखत लफ लफान गति मति वारिये ॥ आये यों अनुजपास फिरी आस पास देखि भयो अति त्रास गहे पांव उर धारिये । चरित अपार उभै भाई हित सार पगे जगे जगमाहिं मति मनमैं उचारिये ॥ ६३ ॥

छप्पय—श्रीराधाचरण प्रधान हृदय अति सुदृढ उपासी ।
कुंजकेलि दंपती तहांकी करत खवासी ॥
सर्वसु महाप्रसाद प्रसिद्ध ताके अधिकारी ।
विधिनिषेध नहिं दास अनन्य उत्कट व्रतधारी ॥
व्यासस्रुवन पथ अनुसरे, सोइ भले पहिंचानि है ।
श्रीहरिवंश गुसांई भजनकी, रीतिसुकृत कोउ जानिहै॥९०॥

टी०का०—हितकी जू रीति कोऊ लाखनिमें एक जाने राधाई प्रधान मानें पाछे कृष्ण ध्याइये । निपट विकट भाव होत न सुभाव ऐसो उनहीकी कृपादृष्टि नेकु क्योंहूं पाइये ॥ विधि औ निषेध छेद डारे प्राणप्यारे हिये जिये निजदास निशि दिन वहै गाइये। सुखद चरित्र सब रसिक विचित्र नीके जानत प्रसिद्ध कहा कहिकै सुनाइये ॥ ६४ ॥ आए गृह त्याग राग बढ्यो प्रिया प्रीतमसों विप्र बडभाग हरिज्ञान दई जानिये । तेरी उभै सुता व्याहि देवो लेवो नाम मेरो इनको जो वंश सो प्रशंस जग मानिये ॥ ताही द्वार सेवा विसतार निज भक्तनकी अगतिन गति सो प्रसिद्धि पहिंचानिये । मानि प्रिय बात गृह गह्यो सुख लह्यो सब कह्यो कैसे जात यह मनमें न आनिये ॥ ६५ ॥ राधिकावल्लभ लाल आज्ञा सो रसाल दई सेवामों प्रकाश औ विलास कुंजधामको । सोई विसतार सुखसार दृगरूप पियो दियो रसिकनि जन लियो पक्ष वामको ॥ निशि दिन गान रसमाधुरीको पान उर अंतर सिंहात एक काम श्यामा श्यामको । गुणसों अनूप कहि कैसेकै स्वरूप कहैं लहै मन मोद जैसे और नहीं नामको ॥ ६६ ॥

छप्पय—युगल नामसों नेम जपत नित कुंजविहारी ।
अवलोकत रहे केलि सखी सुखको अधिकारी ॥

गानकला गंधर्व श्याम श्यामाको तोषै ।
उत्तम भोग लगाय मोर मर्कट नित पोषै ॥
नृपतिद्वार ठाढे रहे, दर्शनआशा जासकी ।
आस धीर उद्योत कर, रसिकछाप हरिदासकी ॥ ९९ ॥

टी०का०—स्वामी हरिदास रसरास को बखान सकै रसिकता छाप जोई जाय मधि पाइये । ल्यायो कोउ चोवा वाको अति मन भोवा यामें डार्‍यो ले पुनीत यह खोवा हिये आइये । जानिकै सुजान कहि ले दिखावो लाल प्यारे नेसुक उघारे पट सुगंध बुडाइये । पारस बखान करि जल डरवाइ दियो कियो जब शिष्य ऐसे नानाविधि गाइये ॥ ६७ ॥

छप्पय—काहूके आराध्य मच्छ कच्छ सूकर नरहरि ।
वामन फरसाधरन सेतुबंधन सुशैलकरी ।
एकनिके इह रीति नेम नवधासों लाये ।
सकल समोखन सुवन अच्युतगोत्री जु लडाये ॥
नौगुन तोरि नूपुर गुह्यो, महतसभामधि रासके ।
उत्कर्ष तिलक अरु दामको, भक्त इष्ट अति व्यासके ॥ ९२ ॥

टी०का०—आय गृह त्यागि वृंदावन अनुराग करि गयो हियो पागि होइ न्यारो तासों खीजिये । राजा लेन आयो तौपै जायवो न भायो श्री-किशोर उरझायो मन सेवा मति भीजिये ॥ चीरा जरकसी सीस चीकनो खिसल जाय लेहु जू बँधाय नहीं आप बांधि लीजिये । गये उठि कुंज सुधि आई सुखपुंज आय देख्यो बँध्यो मंजु कही कैसे मोपै रीझिये ॥ ६८ ॥ संत सुखदेन बैठे संगहि प्रसाद लेन परोसति तिया सब भांतिन प्रवीन हैं । दूध बरताई ले मलाई छिटकाई निज खीझि उठे जानि पोखति नवीन हैं ॥ सेवा सो छुटाइ दई अति अनमानी भई भूख बीते दिन तीन तन छीन हैं । सब समझावें तब दंडको मनावै अंग आभरण बेंचि साधु जेवें यों अधीन हैं ॥ ६९ ॥ सुताको विवाह भयो ब्रडो उत्साह कियो नाना पकवान

सब नीके बनि आये हैं। भक्तनकी सुधि करी खरी अरबरी मति भावना करत भोग सुखद लगाये हैं। आय गये साधु सो बुलाय कही पावो जाय पोटनि बँधाय चाय कुंजनि पठाये हैं। वंशी पहिराई द्विजभक्ति ले दृढाई संत संपुटमें चिरिया है हितसों बसाये हैं॥ ३७०॥ शरदउज्यारी रास रच्यो पिय प्यारी तामें रंग बढ्यो भारी कैसे कहिकै सुनाइये। प्रिया अति गति लई बीजुरीसी कौंधि गई भई चकचौंधि छविमंडलमें छाइये॥ नूपुर सो टूटि छूटि पऱ्यो खरबऱ्यो मन तोरिकै जनेऊ कऱ्यो वाही भांति भाइये। सकलसमाजमें यों कह्यो आज काम आयो ढोयो है जनम ताकी बात जिये आइये॥ ७१॥ गायो भक्त इष्ट अति सुनिकै महंत एक लेनको परीक्षा आयो संग संतभीर है। भूंखको जनावे बानी व्यासको सुनावे सुनि कही भोग आवे यहां माने हरि धीर है॥ तब न प्रमाण करी शंक ले धरी प्रसाद ग्रास दोय चार उठे मानो भई पीर है। पातर समेटि लई शीत कर मोको दई खावो तुम और पावो लियो दृग नीर है॥ ७२॥ भये सुत तीनि बाट निपट नवीन कियो एक ओर सेवा एक ओर धन धऱ्यो है। तीसरी जु ठौर शयामवंदनी औ छाप धरी करी ऐसी रीति देखि बडो सोच पऱ्यो है॥ एकने रुपैया लये एकने किशोरजूको श्रीकिशोरदास भाल तिलक ले कऱ्यो है। छापे दिये स्वामी हरिदास निशि रास कीनो वही रास ललितादि गायो मन हऱ्यो है॥ ७३॥

छप्पय—वेला भजन सुपक्क कषायन कबहुँ न लागी।
वृंदावन दृढ वास युगलचरणनि अनुरागी॥
पोथी लेखन पानि अघट अक्षर चित दीनों।
सद्ग्रंथनको सार सबै हस्तामल कीनो॥
संदेहग्रंथछेदनसमर्थ, रसरासउपासक परम धीर।
श्रीरूपसनातन भक्ति जल, श्रीजीव गुसांई सर गंभीर॥९३॥

टी०क०—किये नाना ग्रंथ हदै ग्रंथि दृढ छेद डरी डारे धन यमुनामें

आवें चहूं ओरतैं । कही दास साधुसेवा कीजे कहैं पात्र जान करो नीके करी बोल्यो कटु कोप जोरतैं ॥ तब समझायो संत गौरव बढायो यह सबको सिखायो बोलै मीठो निशि भोरतैं। चरित अपार भाव भक्तिको न पारावार कियोहू वैराग सार कहे कौन छोरतैं ॥ ७४ ॥

छप्पय--सर्वसु राधारमण भट्ट गोपाल उजागर ।
हृषीकेश भगवान विपुल विठ्ठल रससागर ॥
थानेश्वरी जगन्नाथ लोकनाथ महामुनि मधु श्रीरंग ।
कृष्णदास पंडित उभै अधिकारी हरिअंग ॥
घमंडी युगलकिशोर भृत्य, भूगर्भ जीव दृढव्रत लियो ।
श्रीवृंदावनकी माधुरी, इन मिलि आस्वादन कियो ॥ ९४॥

श्रीगोपालभट्ट गुसांईजूका वर्णन ।

टी०क०--श्रीगोपालभट्टजूके हिये वे रसाल बसे लसे यों प्रगट राधारमणस्वरूप हैं । नाना भोग राग करे अतिअनुरागपगे जगे जगमांहि हित कौतुक अनूप हैं ॥ वृंदावनमाधुरी अगाधको सवाद लियो जियो जिन पायो शीत भयो रसरूप हैं । गुणहीको लेत जीव अगुणको त्यागि देत करुणानिकेत धर्मसेतु भक्तभूप हैं ॥ ७५ ॥

अलिभगवानजूका वर्णन ।

क०--अलिभगवान रामसेवा सावधान मन वृंदावन आये कछु और रीति भई है । देख रासमंडलमें विहरत रसरास बाढी छबि प्यास दृग सुधि बुधि गई है ॥ नाम धरि रास औ विहारीसेवा प्यारी लगी पगी हियेमांझ गुरु सुनि बात नई है । विपिन पधारे आप जाय पग धारे सीस ईश मेरे तुम सुख पायो कहि दई है ॥ ७६ ॥

विठ्ठलविपुलजूका वर्णन ।

क०--स्वामी हरिदासजूके दास नाम विठ्ठल हैं गुरुके वियोग दाह उपज्यो अपार है। रासके समाजमें विराज सब भक्तराज बोलिकै पठाये आये आज्ञा बडो भार है ॥ युगलस्वरूप अवलोकि नाना नृत्यभेद गान तान

कान सुनि रही न सँभार है। मिलि गये वाही ठौर पायो भाव तन और कहे रससागर सो ताको यों विचार है॥ ७७॥

जगन्नाथथानेश्वरीजूका वर्णन।

क०—महाप्रभुपारषद थानेश्वरी जगन्नाथ नाथको प्रकाश धर दिन तीन देख्यो है। भये शिष्य जान आप नाम कृष्णदास धर्‍यो कृष्णजू कहत सब आदर विशेख्यो है॥ सेवा मनमोहनजू कूपमें जताइ दई बाहर निकास करि लाउ उर लेख्यो है। सुत रघुनाथजूको स्वपनमें श्लोकदान वयके निदान पुत्र दियो प्रेमपोख्यो है॥ ७८॥

श्रीलोकनाथगुसांईजूका वर्णन।

क०—श्रीमहाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूके पारषद लोकनाथ नाम अभिराम सब रीति है। राधाकृष्णलीला सो नवीनमें रंगीन मन जल मीन जैसे तैसे निशि दिन प्रीति है॥ भागवतगान रसखान सो तो प्राणतुल्य अतिसुख मानि कहे गावै जोई भीति है॥ रसिकप्रवीण मग चलत चरण लागी कृपा कै जताय दई जैसी नेहनीति है॥ ७९॥

श्रीमधुगुसांईजूका वर्णन।

क०—श्रीमधुगुसांई आये वृंदावन चाह बढी देखे इन नैननसों कैसे धों स्वरूप हैं। ढूंढत फिरत वन बन कुंज लता द्रुम मिटी भूंख प्यास नहीं जानै छांह धूप हैं॥ यमुना चढत काट करत करारे जहां वंशीवटतट डीठि परे वे अनूप हैं। अंक भरि लिये दौरि आजहुलों शिरमोर चाहे भाग भालसाथ गोपीनाथरूप हैं॥ ३८०॥

श्रीकृष्णदासब्रह्मचारीजूका वर्णन।

क०—गुसांई सनातनजू मदनमोहनरूप माथे पधराये कही सेवा नीके कीजिये। जानौ कृष्णदास ब्रह्मचारी अधिकारी भयो भट्ट श्रीनारायणजू शिष्य किये रीझिये॥ करिकै शृंगार चारु आपही निहारि रहें गहें नहीं चेत भाव महामति भीजिये। कहांलों बखान करौं राग भोग रीति भांति अबलों विराजमान देखि देखि जीजिये॥ ८१॥

श्रीकृष्णदासपंडितजूका वर्णन ।

क०—श्रीगोविंदचंद्र रूपराशि दास कृष्णदास पंडित ये दूसरे यों जानि ले । सेवा अनुराग अंग अंग मति पागि रही पाग रही मति जोपै तोपै यह मानि ले ॥ प्रीति हरिदासनसों विविध प्रसाद देत हिये लाय लेत देखि पद्धति प्रमानि ले । सहजकी रीतिमें प्रतीतिसों विनीत करे ढरे वाही ओर मन अनुभव आनि ले ॥ ८२ ॥

भूगर्भगुसांईजूका वर्णन ।

क०—गुसाई भूगर्भ वृंदावन दृढवास कियो लियो सुख बैठि कुंज गोविंद अनूप हैं । बडेई विरक्त अनुरक्त रूपमाधुरीमें ताहीको सवाद लेत मिले भक्तभूप हैं ॥ मानसी विचार हिये हारसों निहारि रहे गहे मनवृत्ति वेई युगलस्वरूप हैं । बुद्धिके प्रमान उनमानमें बखान कर्‍यो भर्‍यो बहुरंग जाहि जाने रस रूप हैं ॥ ८३ ॥

छप्पय—तन मन धन परिवारसहित सेवत संतन कहँ ।
दिव्य भोग आरती अधिक हरिहूते हियमहँ ॥
श्रीवृंदावनचंद्र श्याम श्यामा रँग भीने ।
मग्न प्रेमपीयूष पयधि परचै बहु दीने ॥
श्रीहरिप्रिय श्यामानंदवर, भजन भूमि उद्धार किय ।
श्रीरसिकमुरारि उदार अति, मत्तगजहिं उपदेश दिय॥९५॥

टी० क०—रसिक मुरारि साधुसेवा विसतार कियो पावै कौन पार रीति भांति कछु न्यारिये । संतचरणामृतके माठ गृह भरे रहें ताहीको प्रणाम पूजा करि उर धारिये ॥ आवें हरिदास तिन्हें देत सुखराशि जीभ एक न प्रकाश सके थके सो विचारिये । करें गुरुउत्सव ले दिन मान सबै कोउ द्वादश दिवस जन घटा लागी प्यारिये ॥ ८४ ॥ संतचरणामृतको ल्यावो जाइ नीकी भांति जीकी भांति जानिवेको दास ले पठायो है । आनिकै बखान कियो लियो सब साधुनको पान करि बोले सो सवाद नहीं आयो

है॥ जिते सभाजन कही चाखो देवो मन कोऊ महिमा न जाने कन जानी छोंडि आयो है। पूंछि कह्यो कोढी एक रह्यो आनो ल्यायो पियो दियो सुख पाय नैन नीर ढरकायो है ॥ ८५ ॥ नृपतिसमाजमें विराज भक्तराज कहे गहे वे विवेक कोऊ कह न प्रभाव है। तहां एकठौर साधु भोजन करत रोज देवो दूजी सोंटा संग कैसे आवे भाव है॥ पातरि उठाय श्रीगुसांई पर डारि दई दई गारि सुनी आप बोले देख्यो दाव है। सीतासों विमुख मैं तो आनि मुखमध्य दियो कियो दास दूर संतसेवासें न चाव है॥ ८६॥ बागमें समाज संत चले आप देखिवेको देखत दुरायो जन हुक्का सोच पर्‍यो है। बडो अपराध मानि साधु सनमान चाहे घूमि तन बैठी कही देखो कहूं धर्‍यो है ॥ जायकै सुनाई दास काहूके तमाकू पास सुनिकै हुलाय बढ्यो आगे आनि कर्‍यो है। झूंठेही उसांसभरि सांचे प्रेम पाय लिये किये मन भायो ऐसे शंका दुख हर्‍यो है ॥ ८७ ॥ उपजत अन्न गांव आवे साधुसे-वा ठांव नयो नृप दुष्ट आप कांव कांव कियो है। ग्राम सो जबत कर्‍यो कर्‍यो ले विचार आप श्यामानंदजू मुरारि पत्र लिखि दियो है ॥ जाही भांति होहि ताही भांति उठि आवो इहां आये हाथ बांधि करि आचेहु न लियो है। पाछे सु साष्टांग करि करी ले निवेदन सो भोजनमें कही चले आये भीज्यो हियो है ॥ ८८ ॥ आज्ञा पाय अँचयो ले दे पठाये वाही ठौर दुष्ट शिरमोर जहां तहां आप आये हैं। मिलेही मुसद्दी शिष्य आयकै सुनाई बात जावो उठि प्रात यह नीच जैसे गाये हैं॥ हमहीं पठावें काम करि समझावें सब मनमें न आवें जानी नेह डरपाये हैं। चिंता जनि करो हिये धरो निहचिंतताई भूप सुधि आई दिन तीन कहां छाये हैं ॥ ८९ ॥ सुनि आये गुरुवर कही ल्यावो मे रे घर देखों करामात बात यहै ले सुनाई है। कह्यो आनि अभू जावो चल्यो उनमान देखो चले सुख मानि आयो हाथी धूम छाई है॥ छोंडिकै कहार भाजि गये न निहारि सके आप रस-सार वाणी बोले जैसी गाई है। बोलो हरे कृष्ण कृष्ण छांडो गज तम तन

सुनि गयो हिये भाव देह सो नवाई है ९० ॥ बहै दृग नीर देखि ह्वैगयो अधीर आप कृपा करि धीर कियो दियो भक्ति भाव है । कानमें सुनायो नाम नाम दे गोपालदास माल पहिराई गरे प्रगट्यो प्रभाव है ॥ दुष्टशिरमोर भूप लखि उहि ठौर आयो पांय लपटायो भयो हिये अतिचाव है । निपट अधीन गाव केतिक नवीन दिये लिये कर जोरी मेरो फैल्यो भाग्यदाव है ॥ ९१ ॥ भयो गजराज भक्तराज साधु सेवा साज संतनि समाज देखि करत प्रणाम है । आनि डारै गौन बनजारनकी वारिनसों आए ई पुकारन वे जहां गुरुधाम है ॥ आवत महोछोमध्य पावत प्रसाद शीथ बोले आप हाथीसों यो निंद्य वह काम है । छोंडि दई रीति तब भक्तनिसों प्रीति बडी संगही भमूह फिरे फैल गयो नाम है ॥ ९२ ॥ संत सात पांच सात संग जित जात तित लेग उठि धावें ल्यावें सीधे बहु भीर है । चहुँ दिशि परी हुई सुवा सुनी चाह भई हाथपै न आवत सो आने कोऊ धीर है ॥ साधु एक नायो गहि लयो भेष दास तन मनमें प्रसाद नेम पीवे नहीं नीर है । बीते दिन तीन चारि जल ले पिवावे धार गंगाजू निहारि मधि तज्यों यों शरीर है ॥ ९३ ॥

छप्पय–सोझा सींव अधार धीर हरिनाम त्रिलोचन ।
आशाधर द्योराज नीर सधना दुखमोचन ॥
काशीश्वर अवधूत कृष्ण किंकर कट हरिया ।
सो भू ऊदाराम नाम डुंगरव्रत धरिया ॥
पद्म पदारथ रामदास, विमलानंद अमृत स्त्रये ।
भवप्रवाह निसतार हित, अवलंबन ये जन भये ॥ ९६ ॥

सधनाभक्तजूका वर्णन ।

टी० क०–सधना कसाई ताकी नीकी कस आई जैसे वारवानी सोनेकी कसौटी कस आई है । जीवको न वध करै तौपै कुलाचार ढरै बेंचै मांस ल्याय प्रीति हरिसों लगाई है ॥ गंडकीको सुत विन जाने तासों तोल्यो

करे भरै दृग साधु आनि पूजै दै न भाई है। कही निशि सुपनेमें वाही ठौर मोको देवो सुनो गुणगान रीझ्यो हियकी सचाई है ॥ ९४ ॥ लेके आयो साधु मैं तो बडो अपराध कियो कियो अभिषेक सेवा करी पै न भाई है। एतो प्रभु रीझैं तोपै जोई चाहौ सोई करौ गरौ भारि आयो सुनि मति बिसराई है ॥ वेई हरि उर धारि डारि दियो कुलाचार चले जगन्नाथ देव चाह उपजाई है। मिल्यो एक संग संगे जावे सुगात सब तब आपु दूरि दूरि रहै जान पाई है ॥ ९५ ॥ आयो मग गांव भिक्षा लेन एक ठांव गयो नयो रूप देखि कोऊ तिया रीझ परी है। बैठो याही ठौर करौ भोजन निहोरी कह्यो रह्यो निशि सोयो आई सोई मति हरी है ॥ लेवो मोको संग गरो काटो तौ न होय रंग बूझी और काटी पति ग्रीवपै न डरी है। कही अब पागो मोसो नातौ कौन तोसों मोंसों सोर करि उठी इन मार्‍यो भीर करी है ॥ ९६ ॥ हाकिम् पकरि पूंछे कहे हँसि मार्‍यो हम डार्‍यो सोच भारी कही हाय काटि डारिये। काट्यो कर चले हरि रंगमांझ झिले मानी जानी कछु चूक मेरी यहै उर धारिये ॥ जगन्नाथ देव आगे पालकी पठाई लेन सधनासों भक्त कहा चढै न विचारिये। चढे आये प्रभु-पास सुपनासो मिट्यो त्रास बोले दै कसौटी हूपै भक्ति विसतारिये ॥९७॥

श्रीगुसांईकाशीश्वरजूका वर्णन।

क०—श्रीगुसाई काशीश्वर आगे अवधूतवर करि प्रीति नीलाचल रहे लाग्यो नीको है। महाप्रभु कृष्ण चैतन्यजूकी आज्ञा पाय आय वृंदावन देखि भायो भयो हीको है ॥ सेवा अधिकार पायो रसिक गोविंदचंद चाहत मुखारविंद जीवन जो जीको है। नितही लडावे भावसागर छुडावे कौन पारावार पावे सुनै लागै जग फीको है ॥ ९८ ॥

छप्पय—यती राम रावल्य श्याम खोजी संतसीहा।
दल्हा पद्म मनोरथ रांका द्योगू जप जीहा ॥
जाडा चाचा गुरू सवाई चांदा नाथा।

पुरुषोत्तमसों सांच चतुरकी तामनयो जिहिं मेट्यो काया ॥
मतिसुंदरधी धागै श्रम, संसारचालि नाहिन नचे ।
करुणा छाया भक्तिफल, ए कलियुग पादप रचे ॥ ९७ ॥

खोजीजूका वर्णन ।

टी०क०—खोजीजूके गुरु हरिभावना प्रवीणमहा देह अंतसमे बांधि घंटा सो प्रमानिये। पावैं प्रभु जब तब बाजि उठे जानौ यही पायेपै न बाजी बडी चिंता मन आनिये॥ तन त्यागी बेर नहीं हुते फिरि पाछे आये वही ठौर पौढि देख्यो आंब पाक्यो मानिये । तोरि ताके टूक किये छोटो एक जंतु मध्य गयो सो बिलाइ बाजि उठी जग जानिये ॥ ९९ ॥ शिष्यकी तो योग्यताई नीके मन आई अजू गुरुकी प्रबल ऐपै नेकु घटि क्यों भई । सुनौ याकी बात मन बातवत गति कही सही ले दिखाई और कथा अतिरसमई ॥ वे तौ प्रभु पाय चुके प्रथम प्रसिद्ध पाछे आच्छो फल देखि हरि योग्य उपजी नई । इच्छा सो सफल श्याम भक्त वश करी लही वही पूर पछ सब विथा उरकी गई ॥ ४०० ॥

रांकावांकाजूका वर्णन ।

क०—रांकापति वांका तिया बसे पुर पंढरमें उरमें न चाहे नेकु रीति कछु चारिये। लकरीन बीन कारि जीविका नवीन करे धरे हरिरूप हिये ताहीसों जियारिये॥ विनती करत नाम देव कृष्ण देवजूसों कीजै दुख दूर कही मेरी मति हारिये । चलो ले दिखाऊं तब तेरे मन भाऊं रहे वन छिपि दोउ थैली मगमांझ डारिये ॥ १ ॥ आये दोऊ तियापति पाछे वधू आगे स्वामी औंचकही मगमांझ संपति निहारिये । जानी यों युवती जाति कभू मन चलि जात याते वेगि संभ्रमसों धूरि वापै डारिये ॥ पूंछी आजु कहा कियो भूमिमें निहारि तुम कही वही बात बोली धनहू विचारिये । कहे मोसों रांका ऐपै बांका आजु देखी तुही सुनि प्रभु बोले बात सांची है हमारिये ॥२॥ नामदेव हारे हरि देव कही और बात जोपै दाह गात चलो लकरी सकेरिये । आये दोऊ बीनवेको देखी एक ठौरी ढेरी द्वेहु मिलि पावे तऊ हाथ नहीं

छेरिये॥ तब तो प्रगट श्याम ल्याये यों लिवाय घर देखि मुंड फोरो कह्यो ऐसे प्रभु फेरिये। विनती करत कर जोरि अंग पट धारो भारो बोझ पर्‍यो लियो चीर मात्र हेरिये ॥ ३ ॥

छप्पय—लक्ष्मण लफरा लड्डू संत जोधपुर त्यागी।
सूरज कुंभनदास विमानी खेम वैरागी॥
भावन विरही भरत नफर हरिके सो लुटेरा।
हरिदास अयोध्या चक्रपाणी दियो सरयूतट डेरा॥
तिलोक पुरुष ररी बीजुरी, उद्धव वनचर वंशजे।
परअर्थपरायण भक्त ये, कामधेनु कलिजूगकै॥ ९८॥

लड्डूभक्तजूका वर्णन।

टी०क०--लड्डू भक्तनाम जाय निकसे विमुख देश लेशहू न संत भाव जाने पाप पागे हैं। देवीको प्रसन्न करे मानुसको मारि धरे ले गये पकरि तहां मारिवेको लागे हैं॥ प्रतिमाको फारि विकराल रूप धारि आई लेके तरवार मुंड काटे भीजे बागे हैं। आगे नृत्य करे दृग भरे साधु पांव धरे ऐसे रखवारे जानि जनु अनुरागे हैं॥ ४॥

श्रीसंतभक्तजूका वर्णन।

क०—सदा साधुसेवा अनुराग रंग पागि रह्यो गह्यौ नेम भिक्षा व्रत गाव गांव जायकै। आये घर संत पूंछे तियासो यों संत कहां संत चूल्हे मांझ कही ऐसे अलसायकै॥ बानी सुनि जानी चलै मग सुखदानी मिले कहौ कितहूते सो बखानी उर आयकै। बोली यहै साच वाही आंचहीको ध्यान मेरे आनि गृह फेरि किये मगन जिवायकै॥ ५॥

त्रिलोकभक्तजूका वर्णन।

क०—पूरवमें ओकसों तिलोक हो सुनार जाति पायो भक्तिसार साधु-सेवा उर धारिये। भूपके विवाह सुता जोरा एक जेहरिको गढिवेको दियो कह्यो नीकेकै सँवारिये॥ आवत अनंत संत अवसर पावे कहूं रहे दिन होय भोय रोस यों सँभारिये। ल्यावो रे पकरि ल्याये छांडिये मकर कही

नेकु रह्यो काम आवें नातो मारि डारिये ॥ ६ ॥ आयो वाही दिन कर छुयोहूं न इन नृप करे प्राण विन वनमांझ छिप्यो जायके । आये लर चारि पांच जानी प्रभु आंच गाढै लियो सो दिखायो सांच चले भक्त भायके ॥ भूपको सलाम कियो जेहारिको जोरा दियो लियो कर देखि नैन छोंडे न अघायके । भई रीझ भारी सब चूक मेटि डारि धन पायो ले मुरारी ऐसे बैठे घर आयके ॥ ७ ॥ भोरही महोछो कियो जोई मांगे सोई दिना नाना पकवान रस खान स्वाद लागे हैं। संतको स्वरूप धरि ले प्रसाद गोदमरि गये तहां पावो जू तिलोक गृह पागे हैं ॥ कौनसो तिलोक अरे दूसरा ति लोकीमें बैन न सुनि चैन भयो आये निशि रागे हैं । चहल पहल धन भऱ्यो घर देखि ढऱ्यो प्रभु पदकंज जानि मेरे भाग जागे हैं ॥ ८ ॥

छप्पय–सोम भीम सोमनाथ विकोविसाखा लखमन ध्याना ।
महदा मुकुंद गनेश त्रिविक्रम रघु जग जाना ॥
बालमीक वृद्ध व्यास जगन झांझू विठ्ठल अचारज ।
हरिभूलाला हरिदासबांह्व बल राघौ आरज ॥
लाखाछितर उद्धव कपूर, घंटमधूरा कियो प्रकार ।
अभिलाष अधिकपूरणकारण, ये चिंतामणिचतुरदास॥९९॥
देवानंद मुकुंद महीपति संतराम तंबोरी ।
खेम श्रीरंग नंदविनसन बिदा बाजू सुत जोरी ॥
छीतमद्वारिकादा माधव मांडन रूपा दामोदर ।
भल नरहरि भगवान बाल कान्हर केशव सोहैं धर ॥
दास प्रयाग लोहंग गोपाल, नागू सुत यह भक्त भीर ।
भक्तपाल दिग्गज भगत, ए थानापति शूर धीर ॥ १०० ॥
केशव पुनि हरिनाथ भीम खेता गोविंद ब्रह्मचारी ।
बालकृष्ण बडभरत अच्युत अपया व्रतधारी ॥
पंडा गोपीनाथ मुकुंद गजपत्ति महायश ।

गुणनिधि यश गोपाल दये भक्तनिको सरवस ॥
श्रीअंग सदा सानिधि रहे, कृतपुण्यपुंज भल भाग भर ।
बद्रीनाथ उडीसाद्वारिका, सेवक सब हरिभजनपर ॥ १ ॥

श्रीप्रतापरुद्रगजपतिजूका वर्णन ।

टी० क०—श्रीप्रतापरुद्रगजपतिको बखान कियो लियो भक्ति भाव महा प्रभुपै न देखही । कियेहू उपाय कोटि ओट ले संन्यास दियो हियो अकुलायो अहो कहूं मोको पेखही ॥ जगन्नाथरथ आगे नृत्य करे मत्त भये नीलाचल नृप पांय पर्‍यो भाग लेखही । छातीसों लगायो प्रेमसागर बुडायो भयो अतिमन भायो दुःख देत ए निमेखही ॥ ९ ॥

छप्पय—विद्यापति ब्रह्मदास बहोरन चतुरबिहारी ।
गोविंद गंगाराम लाल वरसनियां मंगलकारी ॥
प्रिय दयालु परशुराम भक्त भाई खाटीको ।
नंदसुवनकी छाप कवित केशवको नीको ॥
आसकरण पूरण नृपति, भीषम जन दयालुगुणन हिनपार ।
हरि सुयश प्रचुर कर जगत्में, येकविजनअतिशयउदार॥२॥

टी०क०—गोवर्द्धननाथ साथ खेले सदा झेले रंग अंग सख्यभाव हिये गोविंद सुनाम है। स्वामी करि ख्यात ताकी बात सुनि लीजे नीके सुने सरसात नैनरीति अभिराम है। खेलत हो लाल संग गयो उठि दांव लेके मारी खैंचि गिल्ली देखि मंदिरमें श्याम है । मानि अपराध साधु धका दे निकारि दियो मत सो अगाध कैसे जाने यह वाम है ॥ ४१० ॥ बैठ्यो कुंडतीर जाय निकसैगो आय बन दिये हैं लगाय ताको फल भुगताइये । लाल हिये सोच पर्‍यो कैसे भर्‍यो जात यह अड्यो मगमांझ भोग धर्‍यो पै न खाइये ॥ कही श्रीगुसांईजूसों मोको ये न भाई कछु चाहो जो खवायो तोपै वाको जा मनाइये । वाके हुतो दांव मोपै सो तौ भाव जान्यो नहीं कही मोसों बातैं सो कुमारै वेगि ल्याइये ॥ ११ ॥ वन वन खेले बिन बनत न मोको नेकु भनत

जुगाही अनगनत लगावैगो। सुधि बुद्धि मेरी गई भई बडी चिंतामोहिं ल्या-
इये जू ढूंढि कहूं चैन ढिग आवैगो॥ भोग जे लगाये मैं तो तनक न पाये रिस
वाकी जब जाय तब मोहूं कछु भावैगो। चले उठि धाये नीठि नीठिकै म-
नाये ल्याये मंदिरमें खाये मिलि कही गरे लावैगौ ॥ १२॥ गये हैं बाहिर
भूमि तहां कृष्ण झूमि आये करी बडी धूमि आक बोढनिसों मारिकै । इनहूं
निहारि उठि मारि दई वाहीसों जु कौतुक अपार सख्य भावरस सारिकै ॥
माता मग चई बडी बेर भई आई तहां कहां बार लाई औट पाई उर धा-
रिकै। आयो यों विचार अनुसार सदाचार कियो लियो प्रेम गाढ कभू
करत सँभारिकै ॥ १३ ॥ आवत हो भोग महासुंदर सुमंदिरको रह्यो मग
बैठि कही आगे मोहिं दीजिये। भयो कोप भारीं थार डारि जा पुकार
करी भरी न अनीति जात सेवा यह लीजिये॥ बोलिकै सुनाई अहो कहो
मन आई तब खोलिकै बताई अजू बात कान कीजिये । पहिले जु खाय
वनमांझ उठि जाय पाछे पाऊं कहां धाय सुनि माति रस भीजिये ॥ १४॥

छप्पय—रघुनाथ गोपीनाथ रामभद्रदास स्वामी ।
गुंजामाली चितु उत्तम विठ्ठल मरहट निष्कामी ॥
यदुनंदन रघुनाथ रामानंद गोविंद मुरली सोती ।
हरिदास मिश्र भगवान मुकुंद केशौ दंडोती ॥
चतुर्भुज चरित्र विष्णुदास, वेणीपद मो शिर धरौ ।
जेवसे बसत मथुरा मंडल, ते दयादृष्टि मोपर करौ ॥ ३ ॥

गुंजामालीजूका वर्णन ।

टी॰क॰—कही नाभास्वामी आप गायो मैं प्रताप संत वसे व्रज वास
सो तौ महिमा अपार है। भये गुंजामाली गुंजहार धारी नाम पर्यो कर्यो
वास लाहोरमें आगे सुनो सार है। सुत वधू विधवा सो बोलिकै सुनायो
लेहु धनपति गृह श्रीगोपाल भरतार है । देवो प्रभुसेवा मांगे नारि बार बार
यह डारै सब वारी यापै गने जग छार है ॥ १५ ॥ दई सेवा वाहि और

धर धन तिया दियो लियो व्रजवास वाकी प्रीति सुनि लीजिये। ठाकुर विराजे जहां खेलें सुत औरनके डारे ईट खोहा पऱ्यो प्रभुपर खीजिये॥ दिये वे बिडारि धऱ्यो भोगपै न खात हरि पूंछी कही वेई आवें तबहीं तौ जीजिये। कह्यो रिसभरि धूरि नीकी भोर डारै भरि खावें हम हाहा करि पायो ल्याइ रीझिये॥ १६॥

छप्पय--सीताझाली सुमति शोभा प्रभुता उमा भटियानी।
गंगा गौरी कुँवरि उबीटा गुपारी गणेश दे रानी॥
कला लखाकृत गढौ मानमति शुचि सतभामा।
यमुना कोली राम मृगा देवीदे भक्तनि विश्रामा॥
युगजीवाकी कमला देवकी हीरा, हरिचेरी पोषै भगत।
कलियुग युवतीजन भक्तराज, महिमा सब जानै जगत॥४॥

गणेशदेराणीजूका वर्णन।

टी० क०—मधुकरसाह भूप भयो देश ओडछेको राणी सो गणेशदे सुकाम वाको कियो है। आवें बहु संत सेवा करत अनंत भांति रह्यो एक साधु खन पान सुख लियो है॥ निकट अकेली देखि बोल्यो धनथैली कहां होय तो बताऊं सब तुम जानो हियो है। मारी जांघ छूरी लखि लोहू वेगि भागि गयो भयो सोच जाने जिन राजा बंदि दियो है॥ १७॥ बांधि नीकी भांति पौढि रही कही काहूसों न आयो ढिग राजामति आवो तियाधर्म है। बीते दिन तीन जानी वेदन नवीन कछु कहिये प्रवीन मोसों खोलि सब मर्म है॥ टारी बार दोय चारि नृपके विचार पऱ्यो समाधान कियो जिन आनो जिये भर्म है। फिऱ्यो आस पास भूमि परत न रासि करी भक्तिको प्रभाव छांडि तिया पति शर्म है॥ १८॥

छप्पय—नरवाहन वाहन बरी सजा पूजे मल बिदावत।
जयंत धारा रूप अनभई उदारावत॥
गंभीरे अर्जुन जनार्दन गोविंद जीता।

दामोदर सांपि ले गदा ईश्वर हेम विदीता ॥
मयानंदमहिमा अनंत, गुढी ले तुलसी दास ।
हरिके संमत जे भगत, ते दासनके दास ॥ ५ ॥

नरवाहनजूका वर्णन ।

टी० क०—रहे भैगांव नाव नरवाहन साधु सेवा लूटि लई नाव जाकी बंदी खानो दियो है । लौंडी आवे दैन कछु खायवेको आय दया अति अकुलाय ले उपाय यहै कियो है ॥ बोली राधावल्लभ औ लेवो हरिवंश-नाम पूंछे शिष्य नाम कहो पूंछि वाम लियो है । दई मँगवाय वस्तु राखियो दुराय बात आप दास भयो कही राजपद दियो है ॥ १९ ॥

छप्पय—यहै वचन परमान दास गांवरी जटियाने भाऊ ।
बुंदी बनिया रामदास मंडोते मोहनवारी दाऊ ॥
माडौठी जगदीश दास लछमन चट थावल भारी ।
सुन पथमें भगवान् सबै सलखान गुपाल उधारी ॥
जो बनेर गोपालके, भक्तइष्टता निरवही ।
श्रीसुखपूजा संतकी, आपुनते अधिक कही ॥ ६ ॥

गोपालजूका वर्णन ।

टी० क०—जो बनरेवास सो गोपाल भक्त इष्ट ताको कियो निरवाह बात मोको लागी प्यारिये । भयो हो विरक्त कोउ कुलमें प्रसंग सुन्यो आयो यों परीक्षा लैन द्वारपै विचारिये ॥ आय पर्यो पांव पांव धारो निज-मंदिरमें सुंदरि न देखो मुख पण कैसे टारिये । चलो निज टारो तिया रहेगी किनारो कारि चले सब छपि नेकु देखि याके मारिये ॥ ४२० ॥ एकपै तमाचो दियो दूसरेने रोस कियो देवो या कपोलपै यो बानी कही प्यारी है । सुनि आंसू भरि आय जाय लपटाय पाय कैसे कही जाय यहै रीति कछु न्यारी है ॥ भक्त इष्ट सुन्यो मेरे बडो अचरज भयो लई मैं परीक्षा भई शिक्षा मोको भारी है । बोल्यो अकुलाय अजू पै ये कहां भाय तोपै सांधु सुख पाय कहे यही मेरी जारी है ॥ २१ ॥

छप्पय—मुरधरखंडनिवास भूप सब आज्ञाकारी ।
राम नाम विश्वास भक्तपदरजव्रतधारी ॥
जगन्नाथके द्वार दंडोतनि प्रभुपै धायो ।
दई दासकी दापि हुंडी करि फेरि पठायो ॥
सुरधुनीओघ संसर्गते, नाम बदल कुछि नत धरो ।
परमहंस वंशनिमें, भयो विभागी वानरो ॥ ७ ॥

टी०क०—लाखा नाम भक्त ताको वानरो बखान कियो कहे जग डोम जासों मेरो शिरमोर है। करै साधुसेवा बहु पाक डारि सेवा संत जेंवत अनंत सुख पावें कौर कौर है॥ ऐसेमें अकाल पर्‍यो आवै धरि माल जाल कैसे प्रतिपाल करे ताकी और ठौर है । प्रभुजू सुपन दियो कियो मैं जतन एक गाडी भरी गेहूं भैंसि आवै करो गौर है॥ २२॥ गेहूं कोठी डारि मुह मूंदि नीचे देवो खोलि निकसें अतोल पीसि रोटी ले बनाइये। दूध जितो होय सो जमायके बिलोय लीजे दीजे यों चुपारि संग छांछ दे जिमाइये ॥ खुलि गई आंखें भांखें तियासों जू आज्ञा दई भई मनभाई अजू हरिगुण गाइये। भोर भये गाडी भैंसि आई वही रीति करी करी साधुसेवा नानाभांतिन रिझाइये ॥ २३॥ आई कौन रीति वाकी प्रीतिहू बखान कीजै लीजै उर धारि सार भक्ति निरधार है । रहै ढिग गांव तहां सभा एक ठांव भई ढूंढि गये भाई सो उगाहीको विचार है॥ बोलि उठ्यो कोऊ यो व्यौहारको तो भर चूक्यो लीजिये सँभारि लाखा संत भव पार है। लाज दबि गयो दियो गेहूं ले पचास मन दई निज भैंस संग सब सरदार हैं॥ २४॥ मारवाड देशते चल्योई सांष्टाग किये हिये जगन्नाथ देव याही पन जाइये। नेह भरि भारी देव वारि फेरि डारी कैसे करे तन धारी नेकु श्रम मुरझाइये। पहुँच्यो निकट जाय पालकी पठाय दई कहे लाखा भक्त कौन वेगि दे बताइये । काहू कहि दियो जाय कर गहि लियो अजू चलो प्रभुपास इहि छिनही बुलाइये ॥२५॥ कैसे चढों पालकीमें पन प्रतिपाल कीजै दीजै मोको दान याही भांति जानि

हारिये। बोले प्रभु कही भाय स्मरनी बनाय ल्याय अब पहिराय मोहिं सुनि उर धारिये ॥ चले चढि बैठि कियो चाहै यह यानमें तो पढि २ पोथी प्रेम मोपै विसतारिये। जायकै निहारे तन मन प्राण वारे जगन्नाथ देवजूके प्यारे मेकु ढिगते न टारिये ॥ २६ ॥ बेटी एक कांरि व्याह देत न विचारी मन धन हारि साधुनको कैसेकै लगाइये। कीजै वाको काज कही जगन्नाथ देवजूने लीजै मोपै द्रव्य उन नेकहू आइये ॥ विदापै न भये चले दृग भरि लगे गये आने नृप भक्त मग चौकी अटकाइये। दियो है सुपन प्रभु जिनि हठ करो अजू हुंडी लिख दई लई बिनैके जताइये ॥ २७ ॥ हुंडी सो हजार कियो लैके गृहद्वार आय तामें ते लगाय सौक बेटी व्याह कियो है। और सब संतन बुलायकै खवाय दिये लिये पग दास सुखराशिपन लियो है ॥ ऐसेही बहुत दाम वाहीके निमित्त ले ले संतभुगताय अति हरषित हियो है । चरित अपार कछु मति अनुसार कह्यो पायो जिन स्वाद सो तो पायो निधि जियो है ॥२८ ॥

छप्पय–महासमारत लोग भक्ति लौलेश न जानें।
माला मुद्रा देखि तासुकी निंदा ठानें ॥
ऐसे कुल उत्पन्न भयो भागवतशिरोमणि ।
ऊसरते सर कियो खंड दोषहु खोयो जिनि ॥
बहुत ठौर परचो दियो, रसरीति भक्ति हृदये धरी ।
जगत विदित नरसी भगत, गुज्जरधर पावन करी ॥ ८ ॥

टी०क०–जूनागढवास पिता मात तन नाश भयो रहै एक भाई औ भौजाई रिसभरी है। डोलत फिरत आय बोलत पियावो नीर भाभीपै न जानी पर बोली जरी बरी है॥ आवत कमाये जल प्याये बिन सरै कैसे पियो यों जबाब दियो देह थर थरी है । निकसे विचारि कहूं दीजै तन डारि मानो शिवपै पुकार करी रहे चित धरी है॥ २९॥ बीते दिन सात शिवधामते न जात बार परै काहू तुच्छ द्वार सोउ सुधि लेत है। इतनी विचारि भूंख प्यास

दई टारि लियो प्रगट स्वरूप धारि भयो हिये हेत है॥ बोले वर मांगि आजु मांगि मैं न जानत हों तुम्हैं जोइ प्यारो सोई देवो चित चेत है। पऱ्यो सोच भारी मेरी प्राणप्यारी नारी तासों कहत डरत वेद कहे नेति प्रीति है॥ ४३०॥ दियो मैं वृकासुरको वर डर भयो तहां वैसे डर कोटि २ यापै बारि डारे हैं। बालक न होय यह मालक है लोकनको मनको विचार कहा दीजै प्राण प्यारे हैं॥ जोपै नहीं देत मेरो बोलिवो अचेत होत दियो निजहेत तन अ-लिनिके धारे हैं। ल्याये वृंदावन रासमंडल जटित मणि प्रिया अनगत बीचि लालजू निहारे हैं॥ ३१॥ हीरनि खचित रासमंडल नचत दोऊ रचित अपार नृत्य गान तान न्यारियै। रूप उजियारी चंदचांदनी न सम तारी देत करतारी लालगति लेत व्यारियै॥ ग्रीवाकी दुरनि कर आंगुरी मुरनि मुख मधुर सुरनि सुनि श्रवण तयारियै। बजत मृदंग मुहचंग संग अंग अंग उठत तरंग रंग छबि जीकी जारियै॥ ३२॥ दई ले मसाल हाथ निरखि निहाल भई लाल डीठि परी कोऊ नई यह आई है। शिवसहचरी रंगभरी अटकरी बात मृदु मुसकात नैन कोरमें जनाई है॥ चाहै याहि टारों यह चाहे प्राण वारों तब श्यामठिग आप कही नीके समुझाई है। जावो यहै ध्यान करो करो सुधि आऊं जहां आए निजठौर चटपटासी लगाई है॥ ३३॥ कीनी ठौर न्यारी विप्रसुता भई नारी एक सुत उभै बारी जग भक्ति बिसतारी है। आवैं बहु संत सुख देत हैं अनंत गुण गावत रिझावत औ सेवा बांधि धारी है॥ जिती द्विज जात दुख भयो अति गात मान्यो बडो उतपात दोष करै न विचारी है। एतो रूपसागरमें नागर मगन महा सकै कहा कारि चहुँ ओर गिरिधारी है॥ ३४॥ तीरथ करत साधु आये पुर पूंछे कोऊ हुंडी लिखि दीजै हमैं द्वारिका सिधारिवे। जेवर है दुःख कही जातही भगावे भूप नरसी विदित साह आगे दाम डारिवे॥ चरण पकरि गिरिजावो जो लिखा-वो अहो कहो बार बार सुनि विनती न टारिवे। दियो ले बताइ घर जाय वही रीति करी भरी अँकवार मेरो भाग कहा वारिवे॥ ३५॥ सातसै

रुपैया गनि ढेरी करि दई आगे लागे पग देवो लिखि कही बार बार है। जानि बँहकाये प्रभु दाम दे पठाये लिखी किये मनभाये साह सांवल उदार है॥ याही हाथ दीजिये ले कीजिये निशंक काज गये यदुराजधानी पूंछ्यो सो बजार है। ढूंढि फिरी हारे भूंख प्यास मीडि डारे पुर तजि भये न्यारे दुखसागर अपार है॥ ३६॥ साहको स्वरूप करि आये कांधे थैली धरि कौन पास हुंडी दाम लीजिये गनायकै। बोलि उठे ढूंढि हारे भले जू निहारे आजु कही लाज हमैं देत मैंहू पाये आयकै॥ भेरो है इको सो बास जानै हरिदास कोऊ लेवो सुखरास करो चिट्ठी दीजै जायकै। धरे हैं रुपैया ढेर लिख्यो करो बेर बेर फेरि आई पाती दई लई गरे लायकै॥ ३७॥ देखि आये साह दौरी मिले उतसाह अंग वेऊ रंग बोरे संतसंगको प्रभाव है। हुंडी लिखि दँई दाम लिये सो खवाय दिये किये प्रभु पूरे काम संतनसों भाव है॥ सुता सुसरार भई छुछक विचार सास देत बहु गारि जाके निपट अभाव है। पिता सो पठाई कहि छाती ले जराई इन जोपै कछु दियो जाय आवो यह दाव है॥ ३८॥ चले गाडी टूटीसी ले बूढे उभै बैल जोर पहुँचे नगर छोर द्विज कही जायकै। सुनतहि आई देखि मुँह पियराई फिरी दाम नहिं एक तुम कियो कहा आयकै॥ चिंता जिनि करौ जाय सास ढिग ढरौ लिखि कागदमें धरो अति उत्तम अघायकै। कही समुझाय सुनि निपट रिसाय उठी कियो परिहास लिख्यो गांव खुनसायकै॥ ३९॥ कागद ले आई देखि दूसरे फिराई पुनि भूलिपै न पाई जात पाथर लिखाये हैं। रहिबेको दई ठौर फूटी ठही पौर जाकी बैठे शिर मोर आय बहु सुख पाहे हैं॥ जल दे पठायो भली भांतिकै औटायो भई वरषा सिरायो यों समोयकै अन्हाये हैं। कोठरी सँवारी आगे परदा सो दियो डारि ले बजाये ताल बेस अगणित आये हैं॥ ४४०॥ गांव पहिरायो छबि छायो यश गायो अहो हाटक रजत उभै पाथरहु आये हैं। रही गई एक भूल लिखत अनेक जहां लेहो ताही पास जापै सब

मिलि पाये हैं ॥ विनती करत बेटी दीजिये जु लाज रहै दियो मँगवाइ हरि फेरिकै बुलाये हैं। अंगन समात सुता तातको निरखि रंग संग चली आई पति आदि विसराये हैं॥ ४१ ॥ सुता हुतीं दोय भोय भक्ति रहीं घरहींमें एक पति त्यागि एक पतिहू न कियो है। पुरमें फिरत उभै गायनि सुचायनिसों धनसों न भेंट काहू नाम कहि दियो है॥ आइ लगी गायवेको कही समझाय अहो पायवेको नाहीं कछु पावे दुख हियो है। चाहो हरिभक्ति तो मुडायकै लडाय लीजै कीजै बार दूरी रही प्रेमरस पियो है ॥ ४२ ॥ मिली उभै सुता रंग झीली संग गायनि वै चायनिसों नृत्य करें भायनि बतायकै। सालँग है नाम मामा मंडलीकमंत्री रहै कहो विपरीत बडी राजासों सुनायकै ॥ बडे बडे दंडी और पंडित समाज कियो करो बाकी भंडी देश जीजिये छुटायकै। आए चार चोपदार चलो जू विचार कीजै भयो दरबार हमें दिये हैं पठायकै ॥ ४३ ॥ चारों तुम जावो टरि भयो हमैं राजा डर सकें कहा करि अजू चलें संग संगही। आए वाही भांति सभा प्रभाहत भई तऊ बोले कहा रीति यह युवती प्रसंगही॥ नाचत बजावत ये चली ढिग गावत सुभावत मगन जानी भीजि गई रंगही। कही भक्ति गंध दूरि पढै पोथी परी धूरि श्रीशुक सराही तिया माथुरनि भंगही ॥ ४४ ॥ बोलि उठ्यो विप्र एक छुछक प्रसंग देख्यो कह्यो रसरंग भऱ्यो ढऱ्यो नृपपायमैं। कहीं जू विराजो गाजो नित सुख साजो जाय किये हरि राय वश भीजे रहो भायमैं॥ धारो उर और शिरमोर प्रभु मंदिरमें सुंदर केदारो राग गावे भरे चायमैं। श्यामकंठमाल टूटि आवति रसाल हिये देखि दुख पावे परे विमुख सुभायमैं॥ ४५॥ नृपति सिखायो जाय वृथा शय छायो काचे सूतमें पुहायो हार टूटि ख्यात कारी है। माता हरिभक्त भूप कही जिनि करो कान तऊ बानि राजसकी माया मति हरी है॥ गयो ढिग मंदिरके सुंदर मँगाय पाट तागो बटवाय कारि माला गुहि धरी है। प्रभु पहिराय कह्यो गाय अब जानी परै भरै सुर राग और गायो पै न परी है

॥ ४६ ॥ विमुख प्रसन्न भये तब तो उराहने दे नये नये चोज हरि सनमुख भाषिये । जाने ग्वाल बाल एक माल गहि रहे हिये जिये लाग्यो एहो रूप कह्यो लाख लाखिये ॥ नारायण बडे महा अहो मे रे भाग लिख्यो करै कौन दूरि छबि पूरि अभिलाषिये । मेरो कहा जाय आय परसे कलंक तुम्हैं राखिये निशंक हार भक्ति मारि नाखिये ॥ ४७ ॥ रहे तहां साह किये उभय विवाह जागें तिया एक भक्त कहै हरिको दिखाइये । नरसी कही ही भले सोई प्रभुवानी लई सांच कर दई गए राग छुटवाइये ॥ बोले पट खोलि दिये किये दरशन ताने ताने पट सोवै वह कही देवो भाइये। लिये दाम काम कियो कागद गहाय दियो दियो कछु खायवेको पायो ले भिजाइये ॥ ४८ ॥ गहने धर्‍यो हो राग केदारो सो साह धरि धरि रूप नरसीको जायकै छुटायो है । कागद ले डर्‍यो गोद मोद भरि गाय उठे आय जन जन श्याम हार पहिरायो है ॥ भजो जैजैकार नृप पांय लपटाय गयो गह्यो हिये भाव सो प्रभाव दरसायो है । विमुख खिसाने भये गये उठि नये माहि बिन हरिकृपा भक्तिपंथ जात पायो है ॥ ४९ ॥ करन सगाई आयो पायो वर भायो नाहिं घर घर फिर्‍यो द्विज नरसी बतायो है। आय सुख पाय पूंछ्यो सुत सो दिखाय दियो कियो ले तिलक मन देखत चुरायो है ॥ आजू हम लायक न तुम सब लायक हो सायकसो छूट्यो जाय नांव ले सुनायो है । सुनतही माथो ठोंकि कहे तालकुटा वह नाल बोरि आयो फेरी जावो दुख छायो है ॥ ४५० ॥ काटिकै अँगुठा डारो तबसो उचारो बात मनमें विचारो कियो तिलक बनायके। जाने सुता भाग ऐसे रहे सोचि पागि सब आवे जब व्याहवेको धन दे अघायके ॥ लगन हू लिखि दियो दियो द्विज आनि लियो डारि राख्यो कहूं गावै ताल ए बजायके। रहे दिन चारि पै विचारी नहिं नेकु प्रन आए कृष्ण रुक्मिणीजू झूमि मिले धायके ॥ ५१ ॥ ठौर ठौर पकवान होत तिया गान करें धुरत निसान कान सुनिये न बात है । चित्रमुख किये ले विचित्र पटरानी आय घोर

रंग बोरी पै चढायो सुत रात है॥ करी सो ज्योनार तामें मानव अपार आये द्विजनि विचारि पोट बांधी पै न मात है। मणिमयी साज बाजि गज रथ ऊंट कोर झमके किसोर आज साजे यों बरात है ॥ ५२ ॥ नरसीसों कहै गहै हाथ तुम साथ चलो अंतरिक्षमें हों चलों इति बात मानिये। कही अजू जानो तुम मैंतो हिये आनो यहै लहै सुख मनमें सो फेट ताल आनिये॥ आपही विचार सब भारसों उठाय लियो दियो डेरा पुरी समधीकी पहिंचानिये॥ मानुस पठायो दिन आयो पै न आये अहो देखि छबि छायो नर पूंछे जु बखानिये॥ ५३ ॥ नरसी बरात मत जानो यह नरसीकी नरसी न पावे ऐसी समझ अपार है। आयकै सुनाई सुधि बुद्धि बिसराई कहो करत हँसाई बात भाखो निरधार है॥ गयो जो सगाई कर दरबार आयो द्विज निजअंक मात कैसे रंगविसतार है। कही पकघास धन राशिसों न पूजै कहूं चहूं दिशि पूर रही देखो भक्तिसार है॥ ५४ ॥ चले अचरज मानि देखि अभिमान गयो लयो पाछो बांभनको हमैं राखि लीजिये। जाय गहि पांय रहो भाय भरि दया करें गये दृग भरि पांय परि कृपा कीजिये॥ मिले भरि अंक ले दिखायो सो मयंकमुख हूजिये निशंक इनै भोर सुता दीजिये। व्याहि करि आये भक्तिभाव ले पठाये सब गाये गुण जाने जिते सुनि सुनि जीजिये ॥ ५५ ॥

छप्पय–सुत कलत्र संमत सबै गोविंदपरायण।
सेवत हरि हरिदास द्रवत मुख राम रसायण॥
सीतापतिको सुयश प्रथमही गमन बखान्यो।
द्वै सुत दीजे मोहिं कवित सबही जग जान्यो॥
गिरागदित लीला मधुर, संतनि आनंददायिनी।
दिवोदासवंशयशोधरसदन, भई भक्ति अनपायिनी॥ ९॥
लीलापदरसरीति ग्रंथरचनामें नागर।
सुरस उक्तियुत युक्ति भक्ति रसगान उजागर॥

प्रचुरपयधिलौं सुयश राम पुरग्रामनिवासी ।
सकलसुकल संवलित भक्तपदरेणुउपासी ॥
चंद्रहास अंगज सुहृद, परमप्रेमपयमें पगे ।
श्रीनंददासआनंदनिधि, रसिकसुप्रभुहित रंगमें ॥ ११० ॥
भक्तितेज अतिभाल संतमंडलको मंडन ।
बुधिप्रवेश भागवत ग्रंथ संशयको खंडन ॥
नरइडगांवनिवास देश बाडग निस्तार्‍यो ।
नवधा भजन प्रबोध अनन्यदासव्रत धार्‍यो ॥
भक्तकृपा वांछी सदा, पदरज राधालालकी ।
संसार सकल व्यापक भई, जकरी जन गोपालकी ॥१११॥
प्रसिद्ध प्रेमकी बात गढा गढ परचौ दीयो ।
ऊंचेते भयो पात श्याम सांचोंपन कीयो ।
सुत नाती पुनि सदृश चलत ऊही परिपाटी ।
भक्तनसों अतिप्रेम नेम नहिं काहू अंग घाटी ॥
नृत्य करत नहिं तन संभार, समसर जन कनकी शक्ति ।
माधो दृढ महि महि उपर, प्रचुर करी लोटन भगति ॥११२॥

टी० क०—गढा गढ पुर नाम माधो बढी प्रेमभूमि लोटे जब नृत्य करे भूले सुधि अंगकी । भूपति विमुख झूंठ जानिकै परीक्षा लई आनि तिन छातपर देखी गति रंगकी ॥ नूपुरन बांधि नाच सांच सो दिखाय दियो गिर्‍योहू कराहमध्य जियो मति पंगकी । बडो त्रास भयो नृपदास विसवास बढ्यो मढ्यो उरभाव रीति न्यारी या प्रसंगकी ॥ ५६ ॥

छप्पय—नग अमोल इक ताहि सबै मिलि भूपति जांचै ।
साम दाम बहु करे दास नाहिंन मत कांचै ॥
एकसमैं संकट ले वे पानीमहिं डार्‍यो ।
प्रभू तिहारी वसति बदनते वचन उचार्‍यो ॥

पांच दोय शत कोशते, हरि हीरा ले उर धर्‍यो ।
अभिलाषभक्त अंगदको, पुरुषोत्तम पूरण कर्‍यो ॥ १३ ॥

टी०क०—रायसेन गढ वास नृपसों सलाह दी जू ताको यह काका रहे अंगद विमुख है । ताकी मारी प्यारी प्रभु साधुसेवा धारी उर आय गुरु घर कहे कृष्णकथा सुख है ॥ बैठे भौन कौन देखि कैसे मौन रह्यो जात बोल्यो तिया जात कहा करो नर रूख है । सुनि उठि गये वधू अन्न जल त्याग दये लये पांव जाय विषैवश भयो दुख है ॥ ५७ ॥ मुख न दिखावे याहि देख्योई सुहावे कही भावै सोई करो नेकु वदन दिखाइये । मैंहूं जल त्यागि दियो अन्न जात कापै लियो जियो जब नीको तब आप कछु खाइये॥ बोलि मोसों बोलो जिन छांडो तन याहि छिन पन सांचो होतो जोपै सुनत समाइये । कह्यो अब कीजै जोई मेरी मति गई खोई भोइ उर दया बात कहि समझाइये ॥ ५८ ॥ वेई गुरु करो जाय पांयनिमें परो गयो चायनि लिवाय ल्यायो भयो शिष्य दीन है । धारी उर माल भाल तिलक बानाय कियो लियो शीतप्रीति कोउ उपजी नवीन है॥ चढी फौज संग चढ्यो वैरी-पुर मारि बढ्यो कढ्यो टोपी लेके हीरा शत एक पीन है । डारे सब बेंचि पागपेंचमध्य राख्यो मुख्य भाख्यो सो अमोल करो जगन्नाथ लीन है ॥५९॥ कानकानी भई नृप बात सुनि लई कही हीरा वह देह तोपै और माफ किये हैं । आप समुझावे बहु जुगत बतावे याके मनमें न आवे जाय सबै कहि दिये हैं ॥ अंगद बहनि लगे वाकी भुवा पागे तासों देवो विष मारो फिरि तूही पग छिये हैं । करत रसोई घर गरल मिलायो पाक भोगहू लगायो अजू आवो बोलि लिये हैं ॥ ४६० ॥ वाकी एक सुता संग लेके बैठे जेंवनको आई सो छिपाइ कही जेंवो कहूं गई है । जेंवत न बोध हारी तबसों विचारी प्रीति भीति रोय मिली गरे रीति कहि दई है ॥ प्रभु ले जिंवाय रांड भांडको निकासि द्वार देकरि किंवार सब पायो आप नई है । बहु दुःख हिये रह्यो कह्यो कैसे जात काहू बात सुनी नृपहूने जैसी भांति

भई है ॥ ६१ ॥ चले नीलाचल हीरा जाय पहिराय आवे आय घेरि लीने नृप रननि सिखायकै। कही डारिदेवो कै लराई सनमुख लेवो वसन हमारो भूप आज्ञा आय धायकै ॥ बोले नेकु रहो मैं अन्हाय पकराय देत हेत मन और जल डाऱ्यो ले दिखायकै। वस्तु है तिहारी प्रभु लीजिये उचारी यह वाणी लागी प्यारी उर धारि सुख पायकै ॥ ६२ ॥ एतो घर आय वेतो जलमध्य कूदि छाय अति अकुलाय नेकु खोजहू न पायो है। राजा चलि आयो सब नीर कटवायो कीच देखि मुरझावो दुखसागर अन्हायो है ॥ जगन्नाथदेव आज्ञा दई वाहि सुधि देवो आयके सुनाई नरतनु बिसरायो है। गयो जाय देख्यो उरपर जग मग रह्यो लह्यो सुख नैननिको कापै जात गयो है ॥ ६३ ॥ राजाहियताप भयो दयो अन्न त्यागि कह्यो आवे जोपै भाग मेरे ब्राह्मण पठाये हैं। धरनो दे रहे कहै नृपके वचन सब तब है दयालु आपु पुरढिग आये हैं ॥ भूप सुनि आगे आय पांय लपटाय गयो लयो उरलाय दृग नीर ले भिजाये हैं। राजा सर्वसु दियो जियो हरिभक्त कियो हियौ सरसायो गुण जाने जिते गाये हैं ॥ ६४ ॥

छप्पय—भक्तआगमन सुनत सन्मुख जो जन इक जाई।
सदन आन सतकार सदृश गोविंद बडाई ॥
पादप्रक्षालन सुहथराय रानी मन सांचे।
धूप दीप नैवेद्य बहुरी तिन आगे नाचे ॥
यह रीति करौलाधीशकी, तन मन धन आगे धरै।
चतुर्भुजनृपकी भक्तिको, कौन भूप सरवर करै ॥ १४ ॥

टी॰क॰—पुरढिग चारों और चौकी राखी योजनपै जो जनही आवे तिन्हैं ल्यावत लिवायकै। मालाधारी दास मानि आवै कोऊ द्वार जोपै करै वही रीति सुनाइ छप्पै गायकै ॥ सुनि एक भूप भक्त निपट अनूप कथा सबको भंडार खोलि देत बोल्यो धायकै। पात्र औ अपात्र यो विचारही जो नाहीं तौपे कहा ऐसी बात दई नेकुमें उडायकै ॥ ६५ ॥ भागवत गावै

भक्तभूप एक विप्र तहां बोलिकै सुनावै ऐसी मन जिन ल्याइये। पावे और कौन हृदे भौनमें प्रवेश करि भरि अनुराग कहा उरमाधि आइये॥ करि ले परीक्षा भांडविमुख पठाय दियो दियो माला तिलक द्वार दास यों सुनाइये। गयो गयो भूमि फूल कुलविसतार कियो लियो पहिचानि अबजानि कैसे पाइये॥ ६६॥ बीते दिन बीस तीस आई वही सीख सुधि कधी हरिदास कोऊ आयो यों सुनाइये। बोले जू निशंक जावो गावो गुण गोविंदके आये घरमध्य भूप करी जैसी भाइये॥ भक्तिके प्रसंगको न रंग कहूं नेकु जान्यो जान्यो उन मानसों परीक्षा मँगवाइये। दियो ले भंडार खोलि लियो मन मान्यो दई संपुटमें कौडी डारी जारि लपटाइये॥ ६७॥ आयो वाही राजापास सभामें प्रकाश कियो लियो धन दियो पाछे सोई ले दिखायो है। खोलिकै लपेटा मध्य संपुट निहारी कौडी समझि बिचारे हारे मनमें न आयो है॥ बडो भागवत विप्र पंडित प्रवीण महानिशि रस लीन जानि आपको बतायो है। कऱ्यो उनमान भक्त मानवो प्रधान जरी मूंदिकै पठाई ताही गुण समझायो है॥ ६८॥ राजा रीझि पांव गहे कहे जू वचन नीके तोपै नेकु आप जाय तत्व याको ल्याइये। आये दौरि पांय लपटाय भूप भाय भरे परे प्रेमसागरमें चरचा चलाइये॥ चलिवे न देत सुख देत चले लोल मन खोलिकै भंडार दियो लियो न रिझाइये। उभै सूवा सारो कही एक कर धारो मेरे दई अकुलाय लई मानो निधि पाइये॥ ६९॥ आयो राजसभा बहु बातनि अखारो जहां बोल उठी सारो कृष्ण कहो झारि डारे हैं। पूंछे नृप कहो अहो लहो सब याहीसों जु पंछी वा समाज रहे हारि प्राणप्यारे हैं॥ कोटि कोटि रसना बखानों पै न पावों पार सार सुनि भक्ति आप शीस पांय धारे हैं। राखो यह खग पग रह्यो तम मन श्याम अति अभिराम रीति मिले औ पधारे हैं॥ ४७०॥

छप्पय–सदृश गोपिको प्रेम प्रगट कलियुगहिं दिखायो।
निरअंकुश अति निडर रसिक यश रसना गायो॥

दुष्टनि दोष विचार मृत्युको उद्यम कीयो ।
बार न बांको भयो गरल अमृतज्यों पीयो ॥
भक्तिनिशान बजायकै, काहूतें नाहिन लजी ।
लोकसाजकुलशृंखला, तजि मीरा गिरिधर भजी ॥ १५ ॥

टी०क०—मेरे तो जनमभूमि झूमिहित नैन लगे पगे गिरिधारी लाल-पिताहीके धाममें । रानाके सगाई भई करी ब्याह सामा नई गई मति बूडि वार गीले घनश्याममें ॥ भांवरैं फिरत मन सांवरे सरूपमांझ तावरेसी आवै चलिवेको पतिग्राममें । पूंछे पितु मातु पट आभरण लीजिये जू लोचन भरत नीर कहा काम दाममें ॥ ७१ ॥ देवो गिरिधारीलाल जो निहाल कियो चाहो और धनमाल सब राखिये उठायकै । बेटी अतिप्यारी प्रीति-रंग बढ्यो भारी रोय मिली महतारी कही लीजिये लडायकै ॥ डोला पध-राय दृगदृगसों लगाय चली सुख न समाय चाय प्राणपति पायकै । पहुँची भवन सास देवीपै गवन कियो तिया ओर वर गढ जोरो कऱ्यो भायकै ॥ ७२ ॥ देवीके पुजायवेको कियो ले उपाय सासु वरपै पुजाय पुनि वधू पूजि भाखिये । बोली जू बिकायो माथ लाल गिरिधारी हाथ और कौन नवै एक वाही अभिलाखिये ॥ बढत सुहाग याके पूजे ताते पूजा करो करो जिनि हठ सीस पांयनिपै राखिये । कही बार बार तुम यही निरधार जानो वही सुकुमार जापै वारि नाखिये ॥ ७३ ॥ तब तो खिसानी भई अति जरि बरि गई गई पतिपास यह वधू नहीं कामकी । अबहीं जबाब दियो अपमान मेरो आगे क्यों प्रमाण करे भरे श्वास चामकी ॥ राना सुनि कोप कऱ्यो धऱ्यो हिये मारिवोई दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति वामकी । लालनि लडावै गुण गायकै मल्हावै साधुसंगही सुहावै जिन्हैं लागी चाह स्वामिकी ॥ ७४ ॥ आयकै ननंद कहै गहै किन चेत भाभी साधनसों हेतमें कलंक लागे भारिये । राना देशपति लाजै बाप कुलरीत जात मानि लीजै बात बेगसंग निरवारिये ॥ लागे प्राण साथ संत

पावन अनंत सुख जाको दुःख होय ताको नीके करि टारिये। सुनिकै कटोरा भरि गरल पठाय दियो लियो करि पान रंग चढ्यो यों निहारिये ॥ ७५ ॥ गरल पठायो सो तो शीस ले चढायो संग त्यागि विष भारी ताकी झार न सँभारी है। रानाने लगायो चर बैठे साधु ढिग ढर तबहीं खबर करि मारो यहै धारी है ॥ राजे गिरिधारी लाल तिनहीसों रंग जाल बोलत हँसत ख्याल कान परी प्यारी है। जाइकै सुनाई भई अति चपलाई आयो लियो तरवारि दै किवार खोलि न्यारी है ॥ ७६ ॥ जाके संग रंग भीजि करत प्रसंग नाना कहां वह नर गयो वेगि दे बताइये । आगेही विराजै कछु तोसों नहीं लाजै अजू देखि सुख साजै आंखैं खोलि दरसाइये ॥ भयोई खिसानो रानो लिख्यो चित्र भीति मानो उलट पयानो कियो नेकु मन आइये। देख्योहू प्रभाव तौपै भावमैं न भिजो जाय विना हरि कृपा कहो कैसे करि पाइये ॥ ७७ ॥ विषयी कुटिल एक भेष धरि साधु लियो कियो यों प्रसंग मोसों अंगसंग कीजिये। आज्ञा मोको दई आप लाल गिरिधारी अहो शीस धरि लई कछु भोजनहू लीजिये ॥ संतन समाजमें बिछाई सेज बोलि लियो शंक अब कौनकी निशंक रस पीजिये। श्वेत मुख भयो विषैभाव सब गयो नयो पांयनिमें आयो मोको भक्तिदान दीजिये ॥ ७८ ॥ रूपकी निकाई भूप अकबर भाई हिये लिये संग तानसेन देखिवेको आयो है। निरखि निहाल भयो छबि गिरिधारी लाल पद सुखजल एक तबहीं चढायो है ॥ वृंदावन आई जीव गुसाईसों मिली झिली तियामुख देखिवेको पन ले छुडायो है। देखि कुंज कुंज लाल प्यारी सुखपुंज भरी धरी उरमांझ आय देश वन गायो है॥ ७९ ॥ रानाकी मलीन मति देखि वसो द्वारावति रति गिरिधारी लाल नित्यही लडाइये। लागी चटपटी भूपभक्तिको स्वरूप जानि अतिदुख मानि विप्रश्रेणी ले पठाइये ॥ वेगि लेके आवो मोको प्राण दे जिवावो अहो गये द्वार धरनो दे विनती सुनाइये। सुनि बिदा होन गई राय रणछोरजूपै छांडो राखो हीन लीन भई नहीं पाइये ॥ ४८० ॥

छप्पय—श्रीकृष्णदास उपदेश परम तत्व परचो पायो ।
निरगुणसगुण निरूप तिमिर अज्ञान नशायो ।।
काछ बाछ निकलंक मनो गांगेय युधिष्ठिर ।
हरिपूजा प्रह्लाद धर्मध्वज धारी जगपर ।।
पृथ्वीराज परचो प्रगट, तन शंखचक्रमंडित कियो ।
आंवेर अछित कूरमको, द्वारकानाथ दर्शन दियो ।। १६।।

टी० क०—पृथ्वीराजा चल्यो द्वारिका श्रीस्वामीसंग अति रसरंग भऱ्यो आज्ञा प्रभु पाई है । सुनिकै दिवान दुःख मानि निशि कान लग्यो कही पऱ्यो साधुसेवा भक्ति पुर छाई है ।। देखिये निहारिकै विचार कीजै इच्छा जोई लीजै नहीं साथ जावो बात ले दुराई है । आयो भोर भूप हाथ जोरि करि ठाढो रह्यो कह्यो रहो देशसों निदेशानि सुहाई है ।। ८१ ।। द्वारावती नाथ देखि गोमतीमें स्नान करो धरो भुजि छाप आप मन अभिलाषिये । चिंता जिन कीजे तीनों बात यहां लीजे अजू दीजे जोई आज्ञा सोई शिर धर राषिये ।। आय पहुँचाय दूर नैन जलपूर वहै देह उर भारी कहा संग रस चाखिये । बीते दिन दोइ निशि रहे सुते सोइ भोई भक्तिगिरा आय बानी मधु भाषिये ।। ८२ ।। अहो पृथ्विराज कहो स्वामीहीसी बानी लही आयो उठि दौरि वाही ठौर प्रभु देखे हैं । घूम्यो कह्यो कान धरो गोमतीमें स्नान करो सुनिकै अन्हायो पुनि बैन कहूं पेखे हैं ।। शंखचक्र आदि छाप तन सब व्याप गई भई यों अबार रानी आय अवरेखे हैं । बोले रह्यो नीरमें शरीर ले सनाथ कीजै लीजै नाथ हिये निज भाग करि लेखे हैं।। ८३ ।। भयो जब भोर पुर बडो भक्तिसोर पऱ्यो कऱ्यो आनि दर्शनसु भई भीर भारी है। आये बहु संत औ महंत बडे बडे धाये अति सुख पाये देहरचना निहारी है।। नाना भेट आवै हित महिमा सुनावै राजा सुनत लजावै जानि कृपा बनवारी है । मंदिर करायो प्रभुरूप पधरायो सब जग यश गायो कथा मोको लगी प्यारी है ।। ८४ ।। विप्र दृगहीन सो अनाथ बैजनाथद्वार पऱ्यो चक्षु

चाहे मास केतिक विहाने हैं। आज्ञा वार दोयो चारि भई ऐन फेरि होहि याको हठ सार देखि शिव पिघलाने हैं ॥ पृथ्वीराज अंगके अँगोछासे अँगोछो जाय आयकै सुनाय द्विज गौरव डराने हैं। नयो मँगवाय तन छाई दियो छायो नैन खुले चैन भयो जन छाइ लखि सरसाने हैं ॥ ८५ ॥

छप्पय—लघु मथुरामें रता भक्त अति जैमल पोषै।
टोढे भजन निधान रामचंद्र हरिजन तोषै ॥
अभैराम एक रस नेम नीवाके भारी।
कर्मशील सुरतान भगवान वीर भूपति व्रतधारी ॥
ईश्वर अक्षयराज रायमल कान्हर, मधुकर नृप सर्वसु दियो।
भक्तनको आदर अधिक, राजवंशमें इन कियो ॥ १७॥

जैमलजूका वर्णन।

टी०क०—मेरतें वसत भूप भक्तिको सरूप जानि जैमल अनूप जाकी कथा कहि आये हैं करी साधुसेवा रीति प्रीतिकी प्रतीति भई नई एक सुनौ हरि कैसेकै लहाये हैं ॥ नीच मानि मंदिरसों सुंदर विचारि बात छातपर बँगलाके चित्र ले बनाये हैं। विविध बिछौना सेज राजत उढौना पानदार धरि सोना जरी परदा सिवाये हैं ॥ ८६ ॥ ताकी दारु सीढी कारि रचना उतारि धरे भरे दूर चौकी आप भाव स्वच्छताई है। मानसी विचारे लाल सेज पग धारे पान खात ले उघारि डारे पौढे सुखदाई है ॥ तियाहू न भेद जाने सोन सैनी धरी वाने देखेको किशोर सोयो फिरि भोर आई है। पतिको सुनाई भाई अति मन भाई वाको खीजि डरपाई जानि भाग अधिकाई है ॥ ८७ ॥

मधुकरसाहजूका वर्णन।

क०—मधुकरसाह नाम कियो ले सफल जाते भेष गुण सार ग्रह तजत असार है। ओडछेको भूप भक्तभूप सुखरूप भयो लयो पन भारी जाके और ना विचार है ॥ कंठी धरि आवे कोय धोय पग पीवे सदा भाई दुखी

खर धर डार्‌यो माल भार है। पांय परिछाल कही आज जू निहाल किये हिये द्रवे दुष्ट पांव गहे दृग धार है ॥ ८८ ॥

छप्पय–रैना हरिगुण रामभजन भागवत उजागर।
प्रेमी परमकिशोर उदार रजत रतनाकर ॥
हरिदासनके दास दशा ऊंची ध्वजधारी।
निरभै अनन्य उदार रसिक जस रसना भारी ॥
दशधा संपति संत बल, सदा रहत प्रफुलित वदन।
खेमाल रतन राठौरके, अटल भक्ति आई सदन ॥ ११८ ॥
आजिर धर्म आचर्‌यो लोकहित मनो नीलकंठ।
निंदकजन अनराय कहा महिमा जानैगो भूशठ ॥
विदित गांधर्वी व्याह कियो दुष्यंत प्रवानै।
भरत पुत्र भागवत सुमुख शुकदेव बखानै ॥
और भूप कोउ छ्वै सकै, दृष्टि जाय नाहिंन धरी।
कलियुग भक्ति कररी कमान, रामरेणुकै ऋजु करी॥११९॥

टी० क०–पून्योमें प्रकाश भयो शरदसमाज रास विविध विलासनृत्य राग रंग भारी है। बैठे रस भीजि दोउ बोल्यो राम राजा रीझि भेंट कहा कीजे विप्र कही जोई प्यारी है॥ प्यारको विचारे न निहारे कहूं नेकु छटा सुतारूप घटा अनुरूप सेवा जारी है। रही सभा सोचि आप जायकै लिवाय ल्याय भेखसों दिवाय फेर संपति ले बारी है ॥ ८९ ॥

छप्पय–आरजको उपदेश सुतो उर नीके धार्‌यो।
नवधा दशधा प्रीति आन धर्म सबै विसार्‌यो ॥
अच्युत कुल अनुराग प्रगट पुरुषारथ जान्यो।
सारासार विवेक बात तीनो मनु मान्यो ॥
दासतन अनन्यउदारता, संतन मुख राजा कही।
हरिगुरु हरिदासनसों, रामधरण सांची रही ॥ १२० ॥

टी॰ क॰—आये मधुपुरी राजा राम अभिराम दोऊ दाम पै न राख्यो साधु विप्र भुगतायो है। ऐसे ए उदार राह खरच संभार नाहिं चालिवो विचार भयो चूरा दीठि आये हैं॥ मुद्रा शत पांच खोलि मोल तिया आगे धरि दीजे बेंचि गए नाभाकर पहिराये हैं। पतिको बुलाय कही नीके देखि रीझे भीजे काढिकै करज पुर आप दे पठाये हैं॥ ४९० ॥

छप्पय—पांयन नूपुर बांधि नृत्य नगधरहित नाच्यो।
रामकलश मन रली शीस ताते नहिं बांच्यो॥
वाणी विमल उदार भक्ति महिमा विस्तारी।
प्रेमपुंज शुठि शील विनय संतन रुचिकारी॥
सृष्टि सराहै रामयश लघु, वैस लछन आरज लियो।
अभिलाष उभै खेमालको, ते किशोर पूरा कियो॥ २१॥

टी॰ क॰—खेमल रतन तन त्याग समै अश्रुपात बात सुत पूंछे अजू नीके खोलि दीजिये। कीजै पुण्य दान बहु संपति अमान भरी धरी हिये दोय सोय कही सुनि लीजिये॥ विविध बडाईमें समाई मति भई पै न नितही विचार अब मनपर खीजिये। नीर भरि घट शीश धरिकै न ल्यायो और नूपुरन बांधि नृत्य कियो नाहिं छीजिये॥ ९१॥ रहे चुप सबै जानी काम आपहीको बोल्यो यों किशोर नाती आज्ञा मोको दीजिये। यही नित करो नहिं टरो जौलों जीवे तन मनमैं हुलाय उठि छाती लाय लीजिये॥ बहु सुख पाय पाय वैसेही निवाय पन माय गुण लाल प्यारी अति मति भीजिये। भक्ति विसतार कियो वेस लघु भीज्यो हियो दियो सनमान संत सभा सब रीझिये॥ ९२॥

छप्पय—हरिदास हरिभक्त भक्ति मंदिरको कलसो।
भजनभाव परिपक्कहृदय भागीरथिजलसो॥
त्रिधाभांति अति अनन्य रामकी कीर्ति निवाही।
हरिगुरुहरिबलभांति नहीं सेवा दृढ साही॥

पूर्ण इंदु प्रमुदित उदधि, त्यों दास देखि बाढे रली ।
खेमालरतन राठौरके, सुफल वेलि मीठी फली ॥ २२ ॥
गायो भक्तिप्रताप सबहि दासत्व दृढायो ।
राधावल्लभ भजन अनन्यता वर्ग बढायो ॥
मुरलीधरकी छाप कवित अहिही निर्दूषण ।
भक्तनकी अंघ्रिरेणु वहै धारी शिरभूषण ॥
सतसंग महाआनंदमें, प्रेम रहत भीज्यो हियो ।
हरिवंशचरण बल चतुर्भुज, गौडदेश तीरथ कियो ॥२३॥

टी०क०—गौडवाने देश भक्तिलेशहू न देख्यो कहूं मानसको मारि इष्ट-देवको चढायो है। तहां जाय देवताको मंत्र ले सुनायो कान लियो उन मानि गांव सुपन सुनायो है ॥ स्वामी चतुर्भुजजूके वेगि तुम दास होहु नातो होहु नाश सब गांव भज्यो आयो है । ऐसे शिष्य किये माला कंठी पाय जिये पांव लिये मन दिये औ अनंत सुख पायो है ॥ ९३ ॥ भोग ले लगावै नाना संतन लडावै कथा भागवत गावै भाव भक्ति विसतारिये। भज्यो धन लेकै कोऊ धनी पाछे पऱ्यो सोऊ आनिकै देवायो बैठि रह्यो न निहारिये ॥ निकसी पुराणबात करे नयो गात दीक्षा शिक्षा सुनि शिष्य भयो गयो यों पुकारिये । कहे या जनममैं न लियो कछु दियो फारो हाथ ले उबाऱ्यो प्रभुरीति लागी प्यारिये ॥ ९४ ॥ राजा झूठि मानि कह्यो करो बिन प्राण याको साधु ये विराजमान ले कलंक दियो है । चले ठौर मारिवेको धारि-वेको सकें कैसे नैनभरि आये नीर बोल्यो धन लियो है ॥ कहे नृप सांचो ह्वैकै झूठा जिन हूजै संतमहिमा अनंत कही स्वामी ऐसो कियो है। भूप सुनि आयो उपदेश मन भायो शिष्य भयो नयो तन पायो भीजि गयो हियो है ॥ ९५ ॥ पकि रह्यो खेत संत आये कर तोरि लेत जिते रखवारे मुख सेत सोर कियो है । कह्यो स्वामी नाम सुन्यो कही बडो काम भयो यह तो हमारो सोई आप सुनि लियो है॥ लेकै मिष्टान्न आप सुमुख बखान

कीनो लीनो अपनाय अजु भीज्यो मेरो हियो है । लेगयो लिवाय नाना भोजन कराय भक्तिचरचा चलाय चाय हित रस पियो है ॥ ९६ ॥

छप्पय–शक्र कोप शुभ चरित्र प्रसिद्ध पुनि पंचाध्याई ।
कृष्णरुक्मिणीकेलि रुचिर भोजनविधि गाई ॥
गिरिराज धरनकी छाप गिरा जलधर ज्यों गाजै ।
संत शिखंडी खंड हृदय आनंदके काजै ॥
जाड हरन जग जाडता, कृष्णदास देही धरी ।
चालककी चर चरी चहूं दिशि, उदधिअंतलोंअनुसरी ॥२४॥
गोपीनाथपदराग भोग छप्पन्न भुजाये ।
पृथु पद्धति अनुसार देव दंपति दुलराये ॥
भगवत भक्त समान ठौर द्वैको बल गायो ।
कवित्त सूरसों मिलित भेद कछु जात न पायो ॥
जनम करम लीला जुगत, रहसि भक्ति भेदी नरम ।
विमलानंद प्रबोध वंश, संतदास सीवा धरम ॥ २५ ॥

टी०क०–बसत निमाई ग्राम श्यामसों लगाई मति ऐसी मन आई भोग छप्पन लगाये हैं। प्रीतिकी सचाई यह जगमें दिखाई सेवा जगन्नाथ देव आप रुचिसों ले पाये हैं ॥ राजाको सुपन दियो नाम ले प्रगट कियो संतहीके गृहमें तो जेंवों यों रिझाये हैं। भक्तिके आधीन सब जानत प्रवीण जन ऐसे हैं रंगीन लाल ठौर ठौर गाये हैं ॥ ९७ ॥

छप्पय–गान काव्य गुणराशि सुहृद सहचरि अवतारी ।
राधा कृष्ण उपास्य रहसि सुखके अधिकारी ॥
नव रस मुख्य शृंगार विविध भांतिन करि गायो ।
वदन उचारत वेर सहस पांयनि व्है धायो ॥
अंगीकारकी अवधि यह, जो आख्या भ्राताजमल ।
श्रीमदनमोहन सूरदासकी, नामशृंखला जुरी अटल ॥२६॥

टी०क०सूरदास नाम नैनकंज अभिराम फूले झूले रंग पीके नीके जीके और जाये हैं। भयो सो अमीन यों संडीलेको नवीन प्रीति रीति गुरु देखि दाम बीसगुने लाये हैं॥ कही पुवा पावे आप मदनगोपाल लाल परे प्रेमख्याल लाद छकरा पठाये हैं। आयो निशि भये श्याम कियो आज्ञा योग लेके अबहीं लगावो भोग जागे फिरि पाये हैं॥ ९८ ॥ पद ले बनायो भक्तिरूप दरशायो दूरि संतनिकी पानहीको रक्षक कहाऊं मैं। काहू सीखि लियो साधु लियो चाहै परचैको आये द्वार मंदिरके खोलि कही आऊं मैं॥ रह्यो बैठि जाइ जूजी हाथमें उठाइ लीनी पूरी आश मेरी अब निशिदिन गाऊं मैं। भीतर बुलावैं जू गुसाई बार दोई चारि सेवा सौंपि सारी कही जनपद ध्याऊं मैं॥ ९९ ॥ पृथ्वीपतिसंपति ले साधुनि खवाइ दई भई नहीं शंक यों निशंक रंग पागे हैं। आये सो खजानो लेन मानों यह बात अहो पाथर ले भरे आप आधी निशि भागे हैं॥ रुक्का लिखि डारे दाम गटके ए संतनने याते हम सटके हैं चले जब जागे हैं। पहुँचे हजूर भूप खोलिकै संदूके देखे पेखे आंक कागदमें रीझे अनुरागे हैं॥ ५०० ॥ लेनको पठाये कही निपट रिझाये हमें मनमें न ल्याये लिखि बनत न डाऱ्यो है। ठोडर दिवान कह्यो धनको विनाश कियो ल्यावो रे पकरि मूढ फेरिकै सँभाऱ्यो हैं॥ ले गये हजूर नृप बोल्यो मोसों दूरि राखो ऐसे महाक्रूर सौंपि दुष्ट कष्ट धाऱ्यो है। दोहा लिखि दीनो अकबर देखि रीझि लीनों जावो वाही ठौर तोपै द्रव्य सब वाऱ्यो है॥ १ ॥

दोहा।

इक तम अँधियारो करै, शून्य दई पुनि ताहि ॥
दशतमते रक्षा करो, दिनमणि अकबर शाहि ॥ १ ॥

क०—आयो वृंदावन मन माधुरीमें भीजि रह्यो कह्यो जोई पद सुन्यो रूपरसरास है। जा प्रगट दिन भयो गयो शत योजनपै जनपै सुनत भेद बाढी जग प्यास है सूर द्विज द्विज निज महल टहल पाय चहल

पहल हिये युगल प्रकाश है। मदनमोहनजू हैं इष्ट इष्ट महाप्रभु अ-
चरज कहा कृपादृष्टि अनायास है ॥ २ ॥

छप्पय–मारगजात अकेल गान रसनो जु उचारे ।
तालमृदंगी वृक्ष रीझि अंबर तहँ डारे ॥
गोपनारि अनुसारि गिरा गद्गद आवेशा ।
जगप्रपंचते दूरि अजा परसे नहिं लेशा ॥
भगवान रीति अनुरागकी, संतसाखि मेली सही ।
कात्यायनीके प्रेमकी, बात जाय कापै कही ॥ २७ ॥
विदित बलोदा गांव देश मुरधर सब जानै ।
महामहोछो मध्य संत परिषद परवानै ॥
पगन घूंघरू बांधि रामको चरित दिखायो ।
देशी शारंगपाणि हंस तासंग पठायो ॥
उपमा और न जगतमें, पृथा विना नाहिन बियो ।
कृष्णविरह कुंतीशरीर, त्यों मुरारि तन त्यागियो ॥ २८ ॥

टी० क०–श्रीमुरारिदास रहे राजगुरु भक्तराज आवत सनान किये कान धुनि कीजिये । जातको चमार करे सेवा सो उच्चारि कहे प्रभु चरणामृतको पात्र सोई लीजिये ॥ गये घरमांझ वाको देखि डरि कांपि उठ्यो ल्यावो देवो हमैं अहो पान करि जीजिये । कही मैं तो न्यून तुच्छ बोले हमहूंते स्वच्छ जाने कोऊ नाहिं तुम मेरी मति भीजिये ॥ ३ ॥ बहै दृग नीर कहै मेरे बडी पीर भई तुम मतिधीर नहीं मेरी योग्यताई है । लियोई निपट हठ बडे पटु साधुतामें श्याम प्यारी भक्ति जाति पांति ले बहाई है ॥ फैलि गई गांव वाको नाव ले चवाव करे भरे नृप कान सुनि वाहू न सुहाई है । आयो प्रभु देखिवेको गयो वहै रंग उठि जान्यो सो प्रसंग सुन्यो वही बात छाई है ॥ ४ ॥ गये सब त्यागि प्रभु सेवाहीसों राग जिन्हैं नृप दुखपागि गयो सुनि यह बात है । होत हो सभाज सदा भूपके बरसमांझ दरश-

न काहू होत मान्यो उतपात है॥ चलेई लिवाइवेको जहां श्रीमुरारिदास करी हि साष्टांग राशि नैन अश्रुपात है । मुखहू न देखे याको विमुखके लेखे अहो पेखे लोग कहै यहै गुरु शिष्य ख्यात है॥ ५॥ ठाढो हाथ जोरि मति दी-नतामें बोरि कीजै दंड मोपै कोरि यों निहोरि मुख भाखिये । घटती न मेरी आप कृपाहीकी घटती है बढतीसी करी ताते न्यूनताई राखिये ॥ सुनिकै प्रसन्न भये कहे ले प्रसंग नये वालमीक आदि दे दे नानाविधि साखिये। आये निज गांव नांव सुनि सब साधु धाये भयोई समाज सो वै देखि अभिलाखिये ॥ ६ ॥ आये बहु गुणीजन नृत्यगान छाई धुनि तो पै संतसभामन स्वामी गुण देखिये । जानिकै प्रवीण उठे नूपुर नवीन बांधि सप्तसुर तीन ग्राम लीन भये पेखिये ॥ गायो रघुनाथजूको वनको गमन समै तासँग गमन प्राण चित्रसम लेखिये । भयो दुखराशि कहा पैये श्रीमुरारिदास गए रामपास एतो हिये अवरेखिये ॥ ७ ॥

छप्पय—त्रेता काव्यनिबंध करी शतकोटि रामायण ।
इक अक्षर उद्धरे ब्रह्महत्यादिपरायण ॥
अब भक्तन सुख देन बहुरि लीला विस्तारी ।
रामचरणरसमत्त रटत अहनिशि व्रतधारी ॥
संसार पारके पारको, सुगम रूप नौका लयो ।
कलि कुटिल जीवनिस्तारहित, वालमीकितुलसीभयो ॥२९॥

टी० क०—तियासों सनेह बिन पूंछे पितागेह गई भूली सुधि देह भजे वाही ठौर आये हैं । वधू अतिलाज भई रिससों निकसि गई प्रीति राम नई तन हाड चाम छाये हैं॥ सुनी जब बात मनो है गयो प्रभात वह पाछे पछितात तजि काशीपुरी धाये हैं । कियो तहां वास प्रभुसेवा ले प्रकाश कीनो लीनो दृढ भाव नैन रूपके पियासे हैं ॥ ८ ॥ शौचजल शेष पाये भूतहू विशेष कोऊ बोल्यो सुख मानि हनूमानजू बताये हैं। रामायणकथा सो रसायन है काननको आवत प्रथम पाछे जात घृणा छाये हैं ॥ जाय

पहिंचानि संग चले उर आनि आये वनमध्य जानि धाय पांय लपटाये हैं। करें सीतकार कही सकोगे न टारि मैं तो जाने रससार रूप धन्यो जैसे गाये हैं ॥ ९ ॥ मांगि लीजे वर कहि दीजे रामभूप अब अतिही अनूप निशि नैन अभिलाषिये। कियो ले संकेत वाही दिनहीसों लाग्यो हेत आई सोई समै चेत कस छबि चाखिये ॥ आये रघुनाथ साथ लक्ष्मण चढे घोडे पट रंग बो रे हरे कैसे मन राखिये। पाछे हनुमान आय बोले देखे प्राणप्यारे नेकु न निहारे मैं तो भले फेरि भाखिये ॥ ५१० ॥ हत्या करि विप्र एक तीरथ करत आयो कहै मुख राम भिक्षा डारिये हत्यारेको। सुनि अभिराम नाम धाममैं बुलाय लियो दियो ले प्रसाद कियो शुद्ध गायो प्यारेको ॥ भई द्विजसभा कही बोलिकै पठाये आप कैसे गयो पाप संग लेके जैये न्यारेको। पोथी तुम बांचो हिय सार नहीं सांचो अजू ताते मत काचो दूर करे न अँधारेको॥ ११ ॥ देखी पोथी बांचि नाममहिमाहूं कही सांच तौपै हत्या करे कैसे तरै कहि दीजिये। आवे जो प्रतीति कहो कही याके हाथ जेंवै शिवजूको बैल तब पंगतिमें लीजिये ॥ थारमैं प्रसाद दियो चले जहां पन कियो बोले आप नामके प्रताप मति भीजिये। जैसी तुम जानो तैसी कैसेकै बखानो अहो सुनिकै प्रसन्न पायो जैजैधुनि रीजिये ॥ १२ ॥ आये निशि चोर चोरी करन हरन धन देखे श्याम धनु हाथ चाप शर लिये हैं। जब जब आवैं बान साधि डरपावैं वे तौ अति मडरावैं तौपै बली दूरी किये हैं ॥ भोर आय पूंछे अजी सांवरो किशोर कौन सुनि करि मौन रहे आसू डारि दिये हैं। दे सबै लुटाय जानी चौकी रामराय दई लई उन्हौ दीक्षा शिक्षा शुद्ध भये हिये हैं॥ १३ ॥ कियो तन विप्र त्याग लागी चली संग तिया दूरिहीते देखि कियो चरण प्रणाम है। बोले यों सुहागवती मन्यो पति हौंहूं सती अब तौ निकासि गई ज्याउं सेवो राम है ॥ बोलिकै कुटुंब कही जोपै भक्ति करो सही गही तब बात जीव दियो अभिराम है। भये सब साधु व्याधि मेटि ले विमुखताकी जाकी वास रहै तौ न सूझे श्यामधाम है ॥ १४ ॥

दिल्लीपति बादशाह अहदी पठायो लेन ताको सो सुनायो सुवै विप्र ज्यायो जानिये । देखिवेको चाहै नीके सुखसों निबाहै आय कही बहु विनै गही चले मन आनिये ॥ पहुँचे नृपतिपास आदर प्रकाश कियो दियो उच्च आसन ले बोल्यो मृदु बानिये । दीजे करामात जग ख्यात सब मात किये कही झूंठ बात एक राम पहिंचानिये ॥ १५ ॥ देखें राम कैसो कही कैद किये किये हिये हूजिये कृपाल हनुमानजू दयाल हो । ताही समै फैलि गये कोटि कोटि कपि नये लोंचें तन खैंचें चीर भयो यों विहाल हो ॥ फोरें कोट मारें चोट किये डारें लोट पोट लीजै कौन ओट जाय मानो प्रलैकाल हो । भई तब आखें दुखसागरको चाखें अब वेई हमें राखें भाखें वारो धन माल हो ॥ १६ ॥ आय पांव लिये तुम दिये हम प्रान पावें आपु समुझावें करामात नेकु लीजिये । लाज दबि गयो नृप तब राखि लियो कह्यो भयो घर रामजूको वेगि छोडि दीजिये ॥ सुनि तजि दियो और कर्यो लेके कोट नयो अबहूं न रहै कोऊ वामें तन छीजिये । काशी जाय वृंदावन आय मिले नाभाजूसों सुन्यो हो कवित्त निज रीझ मति भीजिये ॥ १७ ॥ मदन गोपालजूको दर्शन कारि कही सही राम इष्ट मे रे इष्टभाव पागी है । वैसोई स्वरूप कियो दियो ले दिखाय रूप मनअनुरूप छबि देखि दीकी लागी है ॥ काहू कही कृष्णअवतारीजू प्रशंस महा रामअंश सुनि बोले मति अनुरागी है । दशरथसुत जानो सुंदर अनूप मानो ईशता बताई रति बीसगुनी जागी है १८

छप्पय—करुणावीर श्रृंगार आदि उज्ज्वल रस गायो ।
परउपकारक धीर कवित्त कविजन मन भायो ॥
कौशलेयपदकमल अनन्यदास व्रत लीनो ।
जानकीजीवनसुयश रहत निशि दिन रंग भीनो ॥
रामायणनाटककी, रहसि उक्ति भाषा धरी ।
गोप्यकेलि रघुनाथकी, मानदास परगट करी ॥ १३० ॥
अर्थ धर्म काम मोक्ष भक्ति अनपायी दाता ।

हस्तामल श्रुति ज्ञान सबही शास्त्रनके ज्ञाता ॥
परिचर्या ब्रजराज कुँवरके मनको कर्षै ।
दर्शन परम पुनीत सभाजन अमृतवर्षै ॥
विठ्ठलेशनंदन सुभाव, जग कोऊ नहीं तासमान ।
श्रीवल्लभजूके वंशमें, सुरतरु गिरिधर भ्राजमान ॥ ३१ ॥
रत्ननाम सुत सुबुद्धि प्रेमपुलकित आनन्दभर ।
उत्तम भूषण भोग भजन सुठि सुंदर ताता ।
भ्राता मदन मुकुंद मेघबाई तिहि माता ॥
अहमदाबाद आधीन अति, अच्युत गोत्र सेवा सुघर ॥
विठ्ठलवंश कल्याणके, शिष्य सुनो सद्गुण निकर ॥ ३२ ॥
उदधि सदा अक्षोभ सहज सुंदर मतिभाषी ।
गुरुवर्तन गिरिराज भलपन सब जग साखी ॥
विठ्ठलेशकी भक्ति भयो बेला दृढ ताके ।
भगवततेजप्रताप नमत नरवर पद जाके ॥
निर्व्यलीक आशय उदार, भजन पुंज गिरिधरनिरति ।
श्रीवल्लभजूके वंशमें, गुणनिधि गोकुलनाथ अति ॥ ३३ ॥

टी० क०–आयो कोउ शिष्य होन ल्यायो भेंट लाखनकी भाषनकी चातुरीपै मेरी मति रीझिये । कहूं है सनेह तैसे जाके मिले विना देह व्याकुलता होय तोपै जोपै दीक्षा दीजिये ॥ बोल्यो अजू मेरो किहू वस्तुसों न हेतु नेकु नेति नेति कही हम गुरु ढूंढि लीजिये । प्रेमहीकी बात इहां करही पलट जात गयो दुख गात कहो कैसे रँग भीजिये ॥ १९ ॥ कान्हा हो हलालखोर घोरि दियो मन लेके श्यामरस सागरमें नागर रसाल है । निशिके सुपनमांझ निपुण श्रीनाथजूने आज्ञा दई भीति नई भई ओट साल है ॥ गोकुलके नाथजूको वेगि दे जिताइ दीजै कीजै याहि दूरि छबि पूरि देखो ख्याल है । भोर जो विचारे नहिं धीरजको धारे उहां जाउ कोउ मारे

पैंडे पर्‍यो यह लाल है ॥ ५२० ॥ ऐसे दिन तीन आज्ञा देत वे प्रवीण नाथ हाथ कहा मेरे विन गये नहिं सरेगो । गयो द्वार द्वारपाल बोले जू विचार एक दीजै सुधि कान सुनि खीझै बात करेगो ॥ काहूने सुनाइ दई लीजिये बुलाय अहो कहो और दूर करें करें दूरि ढरेगो । जाय वही कही लही आपनि पिछानि मिलै सुन्यो मेरो श्याम कह्यो नहीं टरेगो ॥ २१ ॥

छप्पय–बात कवित्त बड चतुर चोख चौकस अति जाने ।
सारासारविवेक परमहंसनपर वाने ॥
सदाचारसंतोष भूत सबको हितकारी ।
आरजगुण तन अमित भक्ति दशधाव्रतधारी ॥
दर्शन पुनीत आशय उदार, आलाप रुचिर सुखधामको ।
रसिक रंगीलो भजन पुंज, सुठि वनवारी श्यामको ॥३४॥
नाम नारायण मिश्र वंश नवलाजु उजागर ।
भक्तनकी अति भीर भक्ति दशधाको आगर ॥
आगम निगम पुराणसार शास्त्रन सब देखे ।
सुरगुरु शुक सनकादि व्यास नारदजु विशेषे ॥
सुधाबोधमुख सुरधुनि, यशवितान जगमें तन्यो ।
भागवत भलीविधि कथनको धान्य जननि एकै जन्यो ॥३५॥
काम क्रोध मद मोह लोभकी लहर न लागी ।
सूरज ज्यों जल ग्रहै बहुरि ताही ज्यों त्यागी ॥
सुंदर शीलस्वभाव सदा संतनसेवाव्रत ।
गुरु धरम निकष निरवह्यो विश्वमें विदित बडो भृत ॥
अल्हाराम रावल कृपा, आदिअंत धुकती धरी ।
कलिकाल कठिन जग जीतियो, राघवकी पूरी परी ॥३६॥
अच्युतकुलसों दोष सुपनेहू उर नहिं आने ।
तिलक दाम अनुराग सबन गुरुजन करि माने ॥
सदनमांहि वैराग्य विदेहनकीसी भांती ।

रामचरणमकरंद रहत मनसा मदमाती ॥
योगानंद उजागर वंश करि, निशिदिन हरिगुण गावनो ।
हरिदास भलप्पन भजनबल, बावन ज्यों बढ्यो बावनो॥३७॥
ज्यों चंदनको पवन नींब पुनि चंदन करई ।
बहुत काल तम निबिड उदय दीपक जिमि रहई ॥
श्रीभट पुनि हरिव्यास संतमारग अनुसरई ।
कथा कीरतन नेम रसना हरिगुण उच्चरई ॥
गोविंदभक्ति गदरोगगति, तिलक दाम सद्वैद्य हद ।
जंगली देशके लोग सब, परशुराम किय पारषद ॥ ३८ ॥

टी० क०—राजसी महंत देखि गयो कोउ अंत लेन बोल्योजू अनंत हरि सगे माया टारिये । चले उठि संग वाके पहिर कोपीन अंग बैठे गिरिकंदरामें लागी ठौर प्यारिये ॥ तहां बनिजारो आइ संपति चढाई दई और संग पालकी हू महिमा निहारिये । जाय लपटायो पांय भाव मैं न जान्यो कछु आन्यो उरमांझ आवे प्राण वारि डारिये ॥ २२ ॥

छप्पय—सज्जन सुहृद सुशील वचन आरज प्रतिपालै ।
निर्मत्सर निष्काम कृपा करुणाको आलै ॥
अनन्य भजन दृढ करन धर्‌यो वपु भक्तनि काजै ।
परम धर्मको सेतु विदित वृंदावन गाजै ॥
भागवत सुधा वरषै वदन, काहूको नाहिन सुखद ।
गुणनिकर गदाधर भट्ट अति, सबहिनको लागे सुखद ॥३९॥

टी०क०—श्यामरंग रंगी पद सुनिकै गुसाईजीव पत्र दे पठाये उभै साधु वेगि धाये हैं। रैनी विनु रंग कैसे चढ्यो अति शोच बढ्यो कागदमे प्रेम मढ्यो तहां लेके आये हैं ॥ पूर ढिग कूप तहा बैठे रसरूप लगि पूंछिवेको तिनहींसों नाव ले बताये हैं। रहौ कौन ठौर शिरमौर वृंदावनधाम नाम सुनि मूरछा है गिरे प्राणपाये हैं ॥ २३ ॥ काहू कही भट्ट श्रीगदाधरजू

एही जानो मानो उहि पाती चाह फेरिकै जिवाय हैं। दियो पत्र हाथ लियो शीससों लगाय चाय बांचतही चले बेगि वृंदावन आए हैं॥ मिले श्रीगुसांई जीसों आंखें भारि आईं नीर सुधि न शरीर धरी वहि गाए हैं। पढे ग्रंथ संग नाना कृष्ण कथा रंग रसकी उमंग अंग अंग भाव छाए हैं॥ २४॥ नाम है कल्याणसिंह जाति रजपूतपूत बैठो आय कथासो अभूत रंग लाग्यो है। निपट निकट वास धौरेरा प्रकाश गांव हास परिहास तज्यो तियादुख पाग्यो है॥ जानि भट्ट संगसों अनंगवास दूरि भई करो लेके नई आनि हिये काम जाग्यो है। मांगति फिरत हती युवती औ गर्भवती कही ले रुपैय्या बीस नेकु कहो राग्यो है॥ २५॥ गदाधरभट्टजूकी कथामें प्रकाश कहो अहो कृपा करो अब मेरी सुधि लीजिये। दई लौंडी संग लोभरंग चित भंग किये ले बताय बोली मेरो काम कीजिये॥ बोले आप बैठिये जू जाय नित करो हिये पाप नहिं मेरो गई दरशन दीजिये। श्रोता दुख पाय भाखे झूंठी याही मारि नाखें सांची कहि राखें सुनि तन मन छीजिये॥ २६॥ फाटि जाय भूमि तौ समाय जैय्यै श्रोता कहै बहै दृग नीर है अधीर सुधि गई है। राधिकावल्लभदास प्रगट प्रकाश भास भयो दुखराशि सुनि सो बुलाय लई है॥ सांच कहि दजि नहीं अभी जीव लीजै डरि सबै कहि दियो सुख लियो संज्ञा भई है। काढि तरवार तिया मारिवे कल्याण गयो दयो परबोध हमें करी दया नई है॥ २७॥ रहे काहू देशमें महंत आये कथामांझ आगे ले बैठाये देखें सबै साधु भीजे हैं। मेरे अश्रु-पात क्यों न होत सोचसोत परे करे ले उपाय दे लगाय मिर्चे खीझे हैं॥ संत एक जानिकै जताइ दई भट्टजूको गये उठि सब जब मिलि अति रीझे हैं। ऐसी चाह होय मेरे रोयकै पुकार कही चली जलधार नैन प्रेम आइ धीजे हैं॥ २८॥ आयो एक चोर घर संपति बटोरि गांठि बांधि लै मरोरि किहूं उठे नाहिं भारी है। आइकै उठाइ दई देखि इन रीति नई पूंछ्यो नाम प्रीति भई भूलो मैं विचारी है॥ बोले आप ले पधारो होतही सबारो

आवै और दशगुणी मेरे तेरी यह ज्यारी है । प्राणनको आगे धरो आनिकै उपाय करो रहे समझाय भयो शिष्य चोरी टारी है ॥ २९॥ प्रभुकी टहल निज करन करत आप भक्तिको प्रताप जाने भागवत गाई है । देतहुते चौका कोउ शिष्य बहु भेंट ल्यायो दूरिहीते देखि दास आयो सो जनाई है ॥ धोवो हाथ बैठो आय सुनिकै रिसाय उठे सबहीमें चाम वाको खीझि समझाई है । हिये हितराशि जगआशको विनाश कियो पियो प्रेमरस ताकी बातहू दिखाई है ॥ ५३० ॥

छप्पय—चौमुख चौरा चंड जगत ईश्वर गुण जानै ।
कर्मानंद औ कोल्ह अल्ह अक्षर परवाने ॥
माधो मथुरामध्य साधु जीवानंद सींवा ।
दूदा नारायण दास नाम मांडन नत ग्रीवा ॥
चौरासी रूपक चतुर, वर्णत वाणी जू जुवा ।
चरणशरण चारण भगत, हरिगायक एता हुवा ॥ १४० ॥

कर्मानंदजूका वर्णन ।

टी० क०—कर्म्मानंद चारणकी वाणीके उच्चारणमें दारुण जो हियो होय सोउ पिघलाइये । दियो गृह त्याग हरिसेवा अनुराग भरे बटुवा सुग्रीव हाथ छरी पधराइये ॥ काहू ठौर जाय गाडि वही पधराय वापै ल्याय उर प्रभु भूलि आये कहां पाइये । फेर चाह भई दई श्यामको जताय बात लई मँगवाय देखि मति ले भिजाइये ॥ ३१ ॥

कोल्हअलूजूका वर्णन ।

क०—कोल्ह अलू भाई दोउ कथा सुखदाई सुनो पहिलो विरक्त मद मांस नहीं खात है। हरिहीके रूप गुण वाणीमें उच्चार करै धरे भक्ति भाव हिये ताकी यह बात है॥ दूसरो अनुज जानौ खाय सब उनमानो नृपहीको गांव प्रभु कभू गाय जात है। बडेके अधीन रहे सोई करे जोई कहे ईश करि चहे आप दीनतामें मात है ॥ ३२ ॥ बडे आय

कही चलो द्वारिका निहारें सही मिथ्या जगभोग यामें आयुही विहात है। आज्ञाके आधीन चल्यो आये पुर लीन भये नये चोज मंदिरमें सुनो कान बात है॥ कोल्हने सुनाये सब जे जे नाना छंद गाये पाछे अल्ह दोय चार कहे सकुचात है। भऱ्योही हुंकारो प्रभु कही माला गरे डारो लाय पहिराये कह्यो बडो मेरो भ्रात है ॥ ३३ ॥ दयो पै न याहि दयो बडो अपमान भयो गयो बूड्यो सागरमें दुखको न पार है। बूडतही आगे भूमि पाइ चल्यो झूमि प्रीतिसों अनीति भूले नहीं मानो तरवार है॥ सोई आये लेन हरिजनमन चैन झील्यो मिल्यो कृष्ण जाय पायो अति सुखसार है। बैठे जब भोजनको दई उभै पातर ले दूसरी जु कैसी कही वही भाई प्यार है ॥ ३४ ॥ सबै विष भयो दुख गयो सोई हुवो नयो दयो परमोद वाकी बात सुनि लीजिये । तेरो छोटो भाई मेरो भक्त सुखदाई ताकी कथा ले चलाई जामें आपही सों धीजिये ॥ प्रथम जनम मांझ बडो राजपुत्र भयो गयो गेह त्यागि सदा मोसों मति भीजिये । आयो बन कोऊ भूपसंग रागरंग रूप देखि चाह भई देह भोग कीजिये॥ ३५ ॥ तेरेई वियोग अन्न जल सब त्याग कियो जियो नहिं जात वापै बेगि सुधि लीजिये। हाथपै प्रसाद दीनो आय घर चीन्ह लीनो सुपनोसो वीति प्रीति वासों कीजिये ॥ द्वारिकाको संग सुनि आवतही आगे चल्यो मिल्यो भूमि-पर दृग भरि वहै दीजिये। कही सब बात श्यामधाम तज्यो ताही छिन कऱ्यो वनवास दोउ अति मति भीजिये ॥ ३६ ॥

श्रीनारायणदासजूका वर्णन।

क०—अल्हहीके वंशमें प्रशंस याही जानि लेहु बडो और भाई छोटो श्रीनारायणदास है। दीरघ कमाऊ लघु उपज्यो उडाऊ भाभी दियो सीरो भोजन ले भयो दुख रास है॥ देवो मोको तातौ करि बोली यह क्रोध भरि बहू जाहु करो भरवावे कियो हास है। गयो गृह त्यागि हरि पागि कऱ्यो वैसेही जू भक्तिवश श्याम कह्यो प्रगट प्रकाश है ॥३७॥

छप्पय–सवैया गीत श्लोक वेलि दोहा गुण नवरस ।
पिंगल काव्य प्रमाण विविधविधि गायो हरियश ॥
परदुख विदुषश्लाघ्य वचनरचना जु विचारै ।
अर्थ कवित्तनि मोल सबै सागर उद्धारै ॥
रुक्मिणी लता वर्णन अनूप, वागीश वदन कल्याण सुव ।
नरदेव उभै भाषा निपुण, पृथीराज कविराज हुव ॥ ४१ ॥

टी०क०–मारवाडदेश बीकानेरको नरेश बडो पृथीराजमान भक्तराज कविराज है। सेवा अनुराग और विषैमो बैराग ऐसो रानी पहिचानी नाहिं मानों देखि आज है ॥ गयो हो विदेश तहां मानसी प्रवेश कियो हियो नहीं छुवै कैसे सरे मन काज है । बीते दिन तीन प्रभु मंदिर न दीठि परै पाछे हरि देखि भयो सुखको समाज है ॥ ३८ ॥ लिखिकै पठायो देश सुंदर संदेश यह मंदिर न देखे हरि बीते दिन तीन हैं । लिख्यो आयो सांचि बांधि अतिही प्रसन्न भये लगे राज बैठे प्रभु बाहर प्रवीन हैं ॥ सुनो एक और यों प्रतिज्ञा करी हिये धरी मथुरा शरीर त्यागि करें रस लीन हैं । पृथ्वीपति जानिकै मुहीम दई काबिलकी बल अधिकाई नहीं कालके अधीन हैं ॥ ३९ ॥ जीवनअवधि रहै निपट अलप दिन कलप समान बीते पल न बिहात है ।आगम जनाय दियो चाहें इन्है सांचो कियो लियो भक्ति-भाव जाको छायो गात गात है ॥ चल्यो चढि सांडिनीपै लई मधुपुरी आनि करिकै सनान प्राण तजे सुनि बात है। जै जै धुनि भई व्यापि रई चहुँ और अहो भूपति चकोर यश चंद दिन रात है ॥ ५४० ॥

छप्पय–असुर अजीज अनीति अगिनिमें हरिपुर कीधो ।
सांगन सुतने सादराय रणछोरै दीधो ॥
धरा धाम धनकाज मरण बीजाहू मांडौ ।
कमधुज कुटके हुवो चौक चतुरभुजनी चाडौ ॥
वाढेल बाढि कीवी कटक, चांद नाम चांडे सबल ।

द्वारिका देखि पालंटती, चढि सीवेकीधी अटल ॥ ४२ ॥

टी०क०—कावा पतिसीवा सुत सांगनको प्यारो हरि द्वारावती नाथ यों पुकारे रक्षा कीजिये । सदा भगवान आप भक्तप्रतिपाल करें करो प्रतिपाल मेरो सुनि मति भीजिये ॥ तुरक अजीजनाम धामको लगाई आग लई बाग घोरनिकी आय टूट कीजिये । दुष्ट सब मारे प्रभु कष्टते उबारे निजप्राण वारि डारे यह नयो रस पीजिये ॥ ४१ ॥

छप्पय—कथा कीरतन प्रीति भीर भक्तनकी भावै ।
महामहोत्सव मुदित नित्य नंदलाल लडावै ॥
मुकुंदचरण चितवंत भक्ति महिमा ध्वजधारी ।
पतिपर लोभ न कियो टेंक अपनी नहिं टारी ॥
भलपन सबै विशेषही, आवै रसदन सुन खाजती ।
पृथीराज नृपकुलवधू, भक्तभूप रतनावती ॥ ४३ ॥

टी०क०—मानसिंह राजा ताको छोटो भाई माधोसिंह ताकी जानो तिया जाकी बात ले बखानिये । ढिग जो खवासिनि सो श्वासनि भरति नाम रटत जटत प्रेम रानी उरआनिये ॥ नवल किशोर कभू नंदके किशोर कभू वृंदावनचंद कहि आंखें भरि पानिये।सुनत विकल भई सुनवेकी चाह भईरीति यह नई कछु प्रीति पहिंचानिये ॥ ४२ ॥ बार बार कहै कहा कहै उर गहै मेरो बहै दृगनीर सो शरीरसुधि गई है । पूंछो मत बात सुख करो दिन रात यह सहै निजगात रागी साधुकृपा भई है ॥ अति उतकंठा देखि कह्यो सो विशेष सब रसिकनरेशनकी वाणी कहि दई है । टहल छुटाई औ सिराने ले बैठाई वाहि गुरुबुद्धि आई यह जानो रीति नई है ॥ ४३ ॥ निशिदिन सुन्यौ करे देखिवेको अरबरे देखे कैसे जात जलजात दृग भरे हैं । कछुक उपाय कीजै मोहन दिखाय दीजै तबहीं तौ जीजै वे तो आनि उर अरे हैं ॥ दरशन दूर राज छोंडि लोटें धूर पै न पावें छबिपूर एक प्रेम वश करे हैं । करो हरिसेवा भरि भाव धरि मेवा पकवान रस खान दे बखान मन धरे हैं ॥ ४४ ॥

इंद्रनील मणिरूप प्रगट सरूप कियो लियो बहै भाव यों सुभाव मिली चली है। नानाविधि राग भोग लडाको प्रयोग जामें यामिनि सुपन योग भई रंग रली है ॥ करत श्रृंगार छबिसागर न पारावार रहत निहारि वाही माधुरीसों पली है। कोटिक उपाय करे योग यज्ञ पार परै तौपै नहीं पावे यह दूर प्रेमगली है ॥ ४५ ॥ देख्योई चहत तऊ कहत उपाय कहा अहो चाह बात कहो कौनको सुनाइये। कही जू बनावो ढिग महलके ठौर एक चौकी ले बैठावो चहूं ओर समुझाइये ॥ आवैं हरिप्यारे तिन्हें ल्यावैं वे लिवाइ इहां रहेते धुवाय पांय रुचि उपजाइये। नानाविधि पाक सामा आगे आनि धरे आप डारि चिक देख्यो श्याम दृगनि लखाइये ॥ ४६ ॥ आवें हरि प्यारे साधु सेवा करि टारे दिन किहूं पांव धारे जिन्हें व्रजभूमि प्यारिये। युगलकिशोर गावे नैननि बहाव नीर ह्वै गई अधीर रूप दृगनि निहारिये ॥ पूंछी वा खवासनीसों रानी कौन अंग जाके इतनी अटक संग भंग सुख भारिये।चली उठि हाथ गह्यो रह्यो नहीं जात अहो सहो दुख लाज बडी तनक विचारिये ॥ ४७ ॥ देख्यों मैं विचारि हरिरूप रससार ताको दीजिये अहार लाज कानि नीके टारिये। रोकत उतरि आई जहां साधु सुखदाई आनि लपटाई पांय विनती ले धारिये ॥ संतनि जिंवावयवेकी निज करि अभिलाख लाख लाख भांतिनसों कैसेकै उचारिये। आज्ञा जोई दीजे सोई कीजें सुख वाहीमें जु प्रीति अवगाही कहि करो लागी प्यारिये ॥ ४८ ॥ प्रेममें न नेम हेम थार ले उमगि चली चली दृगधार सो परोसिकै जिंवाये हैं। भीजि गयो साधु नेहसागर अगाध देखि नैननि निमेष तजी भये मनभाये हैं॥ चंदन लगाई आनि बीरीहू खवाई श्यामचरचा चलाई चष रूप सरसाये हैं। धूम करी गांव झूम आये सब देखवेको देखि नृपपास लिखि मानस पठाये है॥ ४९॥ ह्वै करि निशंक रानी बंक गति लई नई दई तजि लाज बैठि मोडनकी भीरमें। लिख्यो ले दिवानतर आय सो बखान कियो बांचि सुनि आंच लागि नृपके शरीरमें ॥ प्रेमसिंहसुत ताहि कालसों रसाल आयो भालपै तिलक

माला कंठी कंठ तीरमें । भूपको सलाम कियो नरनि जताइ दियो बोल्यो आव मोडीकेरे पर्‍यो मन पीरमें ॥ ५५० ॥ कोप भारि राजा गयो भीतरसों सोच नयो पाछे पूंछि लयो कह्यो नरनि बखानके । तब तो विचारि अहो मोडा है हमारी जात भयो सुख गात भक्ति भाव उर आनके ॥ लिख्यो पत्र माजीको तू प्रीति हिये साजी जोपै शीसपर बाजी आय राखो तजि प्रानके । सभामध्य भूप कही मोडीको विरूप भयो रहो अब मोडी केहि भूलो मति जानके ॥ ५१ ॥ लिख्यो दे पठायो वेगि मानस ले आये जहां रानी भक्तिसानी हाथ दई पाती बांचिये । आयो चढि रंग बांचि सुतको प्रसंग वार भीजे जे फुलेल दूरि किये प्रेम सांचिये ॥ आगे सेवापाक निशि महल वसत जाय ल्याय याही ठौर प्रभु नीके गाय नाचिये । अन्न नृप त्यागि दियो दियो लिखि पत्र पुत्र भई मोडी आज तुम हित कारि जांचिये ॥ ५२ ॥ गये नर पत्र दियो सीससों लगाय लियो बांचिकै मगन हियो रीझ बहु दई है । नौबत बजाय द्वार बांटत बधाई काहू नृपति सुनाई कही कहा रीति नई है ॥ पूंछे भूप लोग कह्यो मिटे सब सोग भयो मोडीके जु योग स्वांग कियो बनि गई है । भूपति सुनत बात अति दुख गात भयो लयो वैरभाव चढ्यो त्यारी इत भई है ॥ ५३ ॥ नृप समुझाय राखो देशमें चवाय व्है है बुधवंत जन आई सुतसों जताई है । बोल्यो विषैलागि कोटि कोटि तन खोये एक भक्तिपर आवे काम यह मन आई है ॥ पांइ पारि मांगि लई दई जो प्रसन्न तुम राजा निशि चल्यो जाय करो जिय भाई है । आयो निजपुरढिग भूरि नर मिले आनि कह्यो सो बखान सब चिंता उपजाई है ॥ ५४ ॥ भवन प्रवेश कियो मंत्री जो बुलाय लियो दियो कहि कटी नाक लोहू निरवारिये । मारिये कलंकहू न आवे यों सुनावे भूप काहू बुधवंतने विचार ले उचारि ॥ नाहर जू पिंजरामें दीजै छोडि लीजै मारि पाछेते पकारि वह बात दाब डारिये । सबनि सुहाई जाय करी मन भाई आयो देख्यो वा खवासनी नृसिंहज निहारिये ॥ ५५ ॥ करे हरिसेवा भारि

रंग अनुराग दृग सुनि यह बात नेकु नैन उत टारे हैं। आवहीसों जाने उठि अति सनमाने अहो आज मेरे भाग श्रीनृसिंहजू पधारे हैं॥ भावना सँचाई त्रही शोभा ले दिखाई फूलमाल पहिराई रचि टीको लागे प्यारे हैं। भौनते निकसी धाय मानो खंभ फारि आये विमुखसमूह ततकाल मारि डारे हैं ॥५६॥ भूपको खबर भई रानीजूकी सुधि लई सुनि नीकी भांति आप नम्र ह्वैकै आये हैं। भूमि पारि साष्टांग करी केउ हरी मति भई दया आय वाके वचन सुनाये हैं ॥ करत प्रणाम राजा बोली आजु लालजूको नेकु फिरि देखों एक ओर ए लखाये हैं । बोल्यो नृपराज धन सबही तिहारो धारो पतिपै न लोभ कही करो सुख भाये हैं॥ ५७ ॥ राजा मानसिंह माधोसिंह उभै भाई चढे नावपर कहूं तहां बूडिवेको भई है। बोल्यो बडो भ्रात अब कीजिये जतन कौन भौन तिया भक्त कहि छोटे सुधि दई है॥ नेकु ध्यान कियो तबै आनिकै किनारो लियो हियो हुलसायो जेठ चाह नई लई है। कर्‍यो आय दरशन विनै गिरि गयो भूप अतिही अनूप कथा हिये व्यापि गई है ॥ ५८ ॥

छप्पय–रामानुजकी रीति प्रीति पन हिरदे धार्‍यो ।
संस्कार सम तत्व हंस ज्यों बुद्धि विचार्‍यो ॥
सदाचार मुनिवृत्ति इंदिरा पद्धति उजागर ।
रामदाससुत संत अनन्यदशधाको आगर ॥
पुरुषोत्तमपरसादते, उभै अंग पहर्‍यो वरम ।
पारिख प्रसिद्ध कुल काथड्या, जगन्नाथ सींवा धरम॥४४॥
सदाचार संतोष सुहृद सुठि शील सुभासै ।
हस्तक दीपक उदै मेटि तम वस्तु प्रकासै ॥
हरिको हिय विश्वास नंदनंदनबल भारी ।
कृष्णकलशसों नेम जगत जाने शिर धारी ॥
श्रीवर्धमान गुरुवचनरति, सो संग्रह नहिं छंडियो ।

कीरतन करत कर सुपनहूं, मथुरादास न मंडियो ॥ ४५ ॥

टी॰क॰—बास कै तिजारेमांझ भक्तिरसरास करी करी एक ताको प्रगट सुनाइये। आयो भेषधारी कोउ करे शालग्रामसेवा डोलत सिंहासनपै आनि भीर छाइये ॥ स्वामीके जु शिष्य भयो तिनहूंको भाव देखि वाहीको प्रभाव आय कह्यो हिये भाइये। नेकु आप चलो उही रीतिको विलोकिये जू बडे सरवज्ञ कही दुखै नहीं जाइये ॥ ५९ ॥ पांय परि गये लेके जाय ढिग ठाढे भये चाहत फिरायो पै न फिरै शोस पर्यो है। जानि गयो आप कछु याहीको प्रताप तापै मारो कारि जाप यों विचार मन धर्यो है॥ मूढ ले चलाई भक्ति तेज आगे आई नहीं वाही लपटाई भयो ऐसो मानो मर्यो है। ह्वै कारि दयालु जा जिवायो समझायो प्रीतिपंथ दरशायो हिये भयो शिष्य कर्यो है ॥ ५६० ॥

छप्पय—पद लीनो परसिद्ध प्रीति जामें दृढ नातो।
अक्षर तनमें भयो मदनमोहन रँगरातो ॥
नाचत सबको आहि काहिपै यह बनि आवै।
चित्रलिखितसो रह्यो त्रिभंगदेशी जू दिखावै ॥
हंडिया सराय देखत दुनी, हरि पुरपदवीको चढ्यो।
नृतक नारायणदासको, प्रेमपुंज आगे बढ्यो ॥ ४६ ॥

टी॰ क॰—हरिहीके आगे नृत्य करे हिये धरे यही ढरे देश देशनमें जहा भक्तभीर है। हंडिया सरायमध्य जायकै निवास लियो लियो सुनि नाम सो मलेच्छ जाति मीर है ॥ बोलिकै पठाये महाजन हरिजन सबै आयो है सदन गुनी ल्यावो चाह पीर है। आनिकै सुनाई भई बडी कठिनाई अब कीजै जोई भाई वह निपट अधीर है ॥ ६१ ॥ विना प्रभु आगे नृत्य करिये न नेम यहै सेवा वाके आगे कहो कैसे विसतारिये। कियो यों विचार ऊंचे सिंहासन माला धारि तुलसी निहारि हरिगान कर्यो ॥ भारिये ॥ एक ओर बैठो मीर निरखै नयन कोर मगन किशोररूप सुधि ले विसारिये।

चाहे कछु वार्‍यो परे औचकहीं प्राण हाथ रीझि सनमान कीनो मीच लागी प्यारिये ॥ ६२ ॥

छप्पय—वोहित राम गोपाल कुँवर वर गोगोविंद मांडिल ।
छीतस्वामी जसवंत गदाधर अनंतानंद भल ॥
हरिनाम मिश्र दीनदास वछपाल कन्हर यश गायन ।
गोसू रामदास नारदश्याम पुनि हरिनारायण ॥
कृष्णजीवन भगवानजन, श्यामदास विहारी अमृतदा ।
गुणगण विशद गोपालके, एते जन भये भूरिदा ॥ ४७ ॥
उद्धव राम रैनि परम रामगंगा ध्रूखेतानिवासी ।
अच्युतकुलकृष्णदास विश्राम शेषशाईके वासी ॥
किंकर कुंडा कृष्णदास खेम सोटा गोपालनंद ।
जैतारन विदुर दयाल दामोदर मोहन परमानंद ॥
उद्धव रघुनाथ चतुरो नगन, कुंजओक जे बसत अब ।
निवृत भये संसारते, ते मेरे यजमान सब ॥ ४८ ॥

टी०क०—झीथडो ढिगहीमें जेतारन विदुर भयो भयो हरिभक्त साधु-सेवा माति पागी है । वरषा न भई सब खेती सूखि गई चिंता नई प्रभु आज्ञा दई बडो बडभागी है ॥ खेतको कटाओ औ गहाओ ले उडावो पावो दो हजार मन्न अन्न सुनि प्रीति जागी है । करी वही रीति लोग देखें न प्रतीति होत गाये हरिमीत राशिलागी अनुरागी है ॥ ६३ ॥

छप्पय—सदा युक्त अनुरक्त भक्तमंडलको पोषत ।
पुर मथुरा ब्रजभूमि रमत सबहीको तोषत ॥
परम धर्म दृढ करन देव श्रीगुरु आराध्यो ।
मधुर बैन सुठि ठौर ठौर हरिजन सुख साध्यो ॥
संत महंत अनंत जन, यश विस्तारत जासु नित ।
श्रीस्वामी चतुरीनगन, मगन रैनादिन भजनहित ॥ ४९ ॥

टी० क०–आये गुरुगृह यों सनेहसों ले सेवा करै धरै हिये सांचो भाव अति मति भीजिये। टहल लगाइ दई नई रूपवती तिया दियो वासों कहि स्वामी कहैं सोई कीजिये॥ देख्यो उरझाव अंग संगको लखाव भयो दयो घर धन वधू कृपा करि लीजिये। धाम पधराय सुख पायकै प्रणाम करी धरी व्रजभूमि उर वसे रस पीजिये॥ ६४॥ श्रीगोविंदचंदजूको भोरही दरश करि केशव श्रृंगार राजभोग नंदग्राममें। गोवर्द्धन राधाकुंड ह्वैके आवे वृंदावन मनमें हुलास नित करे चारि याममें॥ रहैं पुनि पावनपै भूंखे दिन तीन बीते आये दूध ले प्रवीण एऊ रँगे श्याममें। मांग्यो नेकु पानी ल्यावो फेर वह प्रानी कहां दुख मातिसानी निशि कही कियो काममें॥ ६५॥ पानीसों न काज व्रजभूमिमें विराज दूध पीवो घर घर यह आज्ञा प्रभु दई है। पतो व्रजवासी सब क्षीरके उपासी कैसे मोको लेन देहैं कही देहैं सुनी नई है॥ डोले धाम धाम श्याम कह्यो जोई मानि लियो दियो परचोहू परतीति तब भई है। जहां जा छपावे पात्र वेगि आप ढूंढि ल्यावे अति सुख पावे कीनी लीला रसमई है॥ ६६॥

छप्पय–गोमा परमानंद प्रधान द्वारिका मथुरा खोरा।
कालुष सांगानेर भलो भगवानको जोरा॥
विठ्ठल टोडे खेम पंडा गूनोरे गाजे।
श्याम श्येनके वंश चींधड पापीर विराजे॥
जैतारनि गोपालको, केवल कूवे मोल लियो।
माधुकरी मांगि सेवै भगवत, तिनपरहोंबलिहाराकियो॥५०॥

केवलकुवाजूका वर्णन।

टी० क०–कहत कुम्हार जग कुल निसतार कियो केवल सुनाम साधुसेवा अभिराम है। आये बहु संत प्रीति करी ले अनंत जाको अंत कौन पावे तोपै सीधो नहीं धाम है॥ बडीही गरज चले करज निकासिवेको बनियां न देत कुवा खोदि कीजे काम है। कियो बोलि कही तोल लियो नीके रोल करि हितसों जिंवाये जिन्हें प्यारो एक श्याम है॥ ६७॥ गये

कुँवा खोदिवेको सुवा ज्यों उचारे नाम हुवा काम जान्यो वानें भयो सुख भारी है। आई रेत भूमि माटी झूमि गिरि दबे वामें केतेक हजार मन होत कैसे न्यारी है ॥ शोक करि आये धाम राम नाम धुनि काहू कानपरी बीत्यो मास कही बात प्यारी है । चले वाही ठौर स्वर सुनि प्रीति और परे रीति कछु और वह सुधि बुधि टारी है ॥ ६८ ॥ माटी दूरि करी सब पहुँचे निकट तब बोलिकै सुनायो हरे बानी लागी प्यारिये । दर्शन भयो जाय पाय लपटाय गये महराव ऐसी व्हैकै कुवाहू निहारिये ॥ धन्यो जलपात्र एक देखि बडे पात्र जान्यो आने निजगेह पूजा लागी अति भारिये । भई भीर द्वार नर उमडि अपार आये महिमा विचारि बहु संपति ले वारिये ॥६९॥ सुंदर स्वरूप श्याम ल्याये पधरायवेको साधु निजधाम आये कुवाजूके बसे हैं। रूपको निहार मनमें विचार कियो आप करैं कृपा मोको प्रभु अचल व्है लसे हैं ॥ करत उपाय संत टरत न नेकु किहूं कही जू अनंत हरि रीझे स्वामी हँसे हैं। धस्यो जानराय नाम जानि लई हीकी बात अंगमें न मात सदा सेवा सुख रसे हैं ॥ ५७० ॥ चले द्वारावती छाप ल्यावें यह मति भई आज्ञा प्रभु दई फिरि घरहीको आये हैं । करो साधुसेवा धरे भाव दृढ हिये मांझ ढरो निज कहूं कीजै जे जे मन भाये हैं ॥ गेहहीमें शंख चक्र आदि निजदेह भये नये नये कौतुक प्रगट जग जग गाये है। गोमतीसों सागरको संगम हो रह्यो सुन्यो सुमिर्नी पठायके यों दोउ ले मिलाये हैं७१ भये शिष्य शाखा अभिलाषा साधुसेवा हीकी महिमा अगाध जग प्रगट दिखाई है । आये घर संत तिया करत रसोंई कोई आयो वाको भाई ताको खीर ले बनाई है ॥ कुवाजू निहारि जानी याको हित सोदर सो कीजिये विचार एक सुमति उपाई है । कही भरि ल्यावो जल गई डर कलपै न लई तसमई सब भक्तनि जिंवाई है ॥ ७२ ॥ वेगि जल ल्याई देखि आगिसी बराई हिये झांकैं मुह भाई दुखसागर बडाई है । विमुख विचार तिया कुवाजू निकारि दई गई पति कियो और ऐसी मन आई है ॥ पन्योई अकाल

बेटा बेटीसों न पालि सकै तकै कोऊ ठौर मति अति अकुलाई है। लियो संग कन्यो जोई पुत्रपति भूख भोई आई परी झींथडामें स्वामीको सुनाई है ॥७३॥ नानाविध पाक होत संत आवें जैसे सोत सुख अधिकाई रीति कैसे जात गाई है । सुनत वचन वाके दीन दुख लीन महा निपट प्रवीण मनमांझ दया आई है॥ देखि पति मेरो और तेरो पति देख याहि कैसेकै निवाह सकै परी कठिनाई है । रहो द्वार झन्यो करो पहुँचे अहार तुम्हें महिमा निहारी दृग धार ले बहाई है ॥७४॥ कियो प्रतिपाल तिया पुरीको अकाल मास भयो जब समै बिदा कीनी उठि गाई है । अतिपछितात वह बात अब पावे कहां जहां साधुसंग रंग सभा रसमई है ॥ करे जाको शिष्य संत सेवाही बतावे करो जो अनंतरूप गुण चाह मनभई है । नाभाजू बखान कियो मोको इनि मोल लियो दियो दरसाय सब लीला नितनईहै ७५

छप्पय–जंगी प्रसिद्ध प्रयाग विनोदी पूरन वनवारी ।
नरसिंह भल भगवान दिवाकर दृढव्रतधारी ॥
कोमलहृदय किशोर जगत जगन्नाथ सुलूधौ ।
औरौ अनुग उदार खेम खीची धर्म धीर लघु ऊधौ ॥
त्रिविधतापमोचन सबै, सौरभ प्रभु जिन शिरभुजा ।
श्रीअग्रअनुग्रहते भये, शिष्य सबै धर्मकी ध्वजा ॥ ५१ ॥
अंगद परमानंददास योगी जग जागे ।
खरतर खेम उदार ध्यान हरिजन अनुरागे ॥
सुस्फुट त्योला शब्द लोहकर वंशउजागर ।
हरिदास कविप्रेम सबै नवधाके आगर ॥
अच्युतकुल सबै सदा, दासातन दशधा अघट ।
भरतखंड भूधर सुमेरु, टीला लाहाकी पद्धति प्रगट ॥ ५२ ॥
चारि वरण आश्रम रंक राजा अन पावे ।
भक्तनिको बहुमान विमुख कोई नहिं जावे ॥

बीरा चंदन वसन कृष्ण कीरतन बरखै ।
प्रभुके भूषण देइ महामन अतिशय हरखै ॥
विट्ठलसुत विमल्यो फिरे, दासचरणरज शिर धरे ।
मधुपुरी महोछो मंगलरूप, कान्हरकोसो को करे ॥ ५३ ॥
आवहिं दास अनेक उठिव आदर करि लीजे ।
चरण धोइ दंडवत सदनमें डेरो दीजे ॥
ठौर ठौर हरिकथा हृदय अति हरिजन भावें ।
मधुर वचन मुहलाय विविधभांतिन्हे लडावें ॥
सावधान सेवा करें, निर्दूषण रति चेतसी ।
भक्तनसों कलियुग भले, निर्वाही नीवा खेतसी ॥ ५४ ॥
यह अचरज भयो एक खांड घृत मैदा बरखे ।
रजत रुक्मकी रेल सृष्टि सबही मन हरखे ॥
भोजन रासविलास कृष्ण कीरतन जु कीनो ।
भक्तनको बहु मान दान सबहीकों दीनो ॥
कीरति कीनी भीमसुत, सुनि भूप मनोरथ आनके ।
वसन बढे कुंतीवधूत्यों तूंबर भगवानके ॥ ५५ ॥

टी० क०–बीतत वरस मास आवे मधुपुरी प्रेम नेमसों महोछो रास हेमही लुटाइये । संतन जिवाय नाना पट पहिराय पाछे द्विजनि बुलाय कछू पूजे पै न भाइये ॥ आयो कोऊ काल धन माल विहाल भये चाहे पन पान्यो आए आलप कराइये । रहे विप्र दुखी सुनि भयो सुख भूंख बढि आयो यों समाज करो प्यारी मन आइये ॥ ७६ ॥ अतिसनमान कियो लायो जोई सौंपि दियो लियो गांठि बांधि तब विनती सुनाइये । संतानि जिमावो भाये गास ले करावो भावे जेवो सुख पावो कीजे बात मन भाइये ॥ सीधो ल्याय कोठे धन्यो रोंकहीसों थैली भन्यो द्विजन बुलाय देत क्योंहू निघटाइये । जितनो निकासें तातें सौगुनो बढत और एक २ ठौर बीसगुनो दे पठाइये ॥ ७७ ॥

छप्पय—भक्तनसों अतिभाव निरंतर अंतर नाहीं ।
कर जोरे इक पांय मुदित मन आज्ञामाहीं ॥
श्रीवृंदावनवास कुंज क्रीधा रुचि भावे ।
राधावल्लभ लाल नित्यप्रति ताहि लडावे ॥
परम धर्म नवधा प्रधान, सदन सांचानिधि प्रेमजड ।
जसवंत भक्त जैमालकी, रूडा राखी राठवड ॥ ५६ ॥
अमित महागुण गोप्य सारवित सोई जानै ।
देखतको तुलाधार दूर आसै उनमानै ॥
देइद मान्यो पैज विदित वृंदावन पायो ।
राधावल्लभ भजन प्रगट परताप दिखायो ॥
परम धरम साधन सुदृढ, कलियुग कामधेनुमें गन्यो ।
हरिदास हरिभक्तनि हित, धनि जननी एकै जन्यो ॥५७॥

टी०क०—हरिदास वणिक सो काशीढिग वास जाको ताको यह पन तन त्यागों व्रजभूमिही । भयो ज्वर नारी छीन छोंडि गये बैद तीन बोल्यो यों प्रवीन वृंदावन रस झूमही ॥ बेटी चार संतनिको दई अंगीकार करो धरो डोली मांझ मोको ध्यान व्रजभूमिही । चले सावधान राधावल्लभको गान करै करैं अचरज लोग परी गांव धूमही ॥ ७८ ॥ आवतही मगमांझ छूटि गयो तन पन सांचो कियो श्याम वन प्रगट दिखायो है। आय दरशन कियो इष्ट गुरु प्रेमभरि नेम पन्यो पूरो जाय चीरघाट न्हायो है ॥ पाछे आय लोक शोक करत भरत नैन बैन सुनि चैन भयो ताहि नहिं आयो है। भक्तिको प्रभाव यामें भाव और आनो जिन बिन हरिकृपा यह कैसे जात पायो है ॥ ७९ ॥

छप्पय—बावोली गोपाल गुणनि गंभीर गुनारट ।
दक्षिण दिशि विष्णुदास गांव काश्मीर भजन भट ॥
भक्तनिसों यह भाय भजै गुरु गोविंद जैसे ।

तिलक दाम आधीन सुबर संतनि प्रति तैसे ॥
अच्युतकुल पन एक रस, निबह्यो ज्यों श्रीमुखगदित ।
भक्ति भार जूडै युगल, धर्मधुरंधर जगविदित ॥ ५८ ॥

टी०क०–रहे गुरुभाई दोऊ भाई साधुसेवा हिये ऐसे सुखदाई नई रीतिले चलाइये । जाय जा महोछोमें बुलाए हुलसाये अंग संग गाडी सामासो भंडारी दे मिलाइये ॥ याको तातपर्य संत घटती न सही जात बात वे न जाने सुख माने मन भाइये । बडे गुरु सिद्ध जग महिमा प्रसिद्ध बोले विनै करजोर सोई कहिकै सुनाइये ॥ ५८० ॥ चाहत महछो कियो हुलसत हियो नित लियो सुनि बोले करो वेगि दे तियारिये । चहुँ दिशि डार्‍यो नीर कर्‍यो न्योत्यो ऐसे धीर आवे बहुभीर संत ठौरनि सँवारिये ॥ आये हरिप्यारे चारों खूंटते निहारे नैन जाय पग धारे शीसविनै ले उचारिये । भोजन कराय दिन पांच लग छाय रहे पट पहिराय सुख दियो अति भारिये ॥ ८१ ॥ आज्ञा गुरु दई भोर आवो फिरि आस पास महासुखराशि नामदेवजू निहारिये । उज्ज्वल वसन तन एकले प्रसन्न मन चलें जात वेगि शीस पांयनिपै धारिये ॥ वेही दे बताय श्रीकबीर अति धीर साधु चले दोऊ भाई परिदक्षिणा विचारिये । प्रथम निरखि नाम हरखि लपटि पगे लगि रहे छोंडत न बोले सुनो धारिये ॥ ८२ ॥ साधु अपराध जहां होत तहां आवत न होय समान सब संत तोहिं आइये । देखि प्रीति रीति हम निपट प्रसन्न भये लये उर लाय जावो श्रीकबीर पाइये ॥ आगे जो निहारे भक्तराज दृग धारे चली बोले हँसि आप कोऊ मिल्यो सुखदाइये। कह्यो हांजू मानि दई भई कृपा पूरण यों सेवाकों प्रताप कहौं कहांलगि गाइये॥८३॥

छप्पय–आश करन ऋषिराज रूप भगवान भक्तिगुरु ।
चतुरदास जग अभै छाप छीतर जू चतुरबरु ॥
लाखा अद्भुत रायमल खेम मनसा क्रम वाचा ।
रसिकराय मलगौर देवा दामोदर हरी रंग राचा ॥

सबै सुमंगलदास दृढ, धर्मधुरंधर भजन भट ।
कीह्न कृपा कीरति विशद, परम पारषद शिष प्रगट ॥ ५९ ॥
आगम निगमपुराण सार शास्त्रजु विचाऱ्यो ।
ज्यों पारो दे पुटहिं सबनिको सार उधाऱ्यो ॥
श्रीरूप सनातन जीव भट्ट नारायण भाख्यौ ।
सो सर्वस उरसांच जतन करि नीके राख्यौ ॥
फनी वंशगोपाल सुवरागाको अयन ।
रसराशिउपाशिकभक्तराजस, रघुनाथभटनिर्मल बयन १६०
निश्वरपति रति त्यागि कृष्ण मदसों रति जोरी ।
सबै जगतकी फांसि तरनि तिनका ज्यों तोरी ॥
निर्मल कुल कांयङ्या धन्य परसा जिहिं जाई ।
विदित वृंदावन वास संत मुख करत बडाई ॥
संसार स्वाद सुख वांति करि, फेरि नहीं तिन तन चही ।
कठिन काल कलियुगमें, करमेती निकलंक रही ॥ ६१ ॥

टी०क०—सेखावत नृपके पुरोहितकी बेटी जानो वासहो खडेला करमेती जो बखानिये । बसे उर श्याम अभिराम कोटि कामहूंते भूले धामकाम सेवा मानसी पिछानिये ॥ बीत जात याम तन वाम अनुकूल भयो फूल फल अंग गति मति छबि छीनिये । आयो पति गौनो लेन भयो पितु मात हिये लिये चित चाव पट आभरन आनिये ॥ ८४ ॥ पऱ्यो सोच भारी कहा कीजिये विचारी हाडचामसों सँवारी देह रतिके न कामकी । ताते देवो त्यागि मन सोवे जिनि जागि अरे मिटे उरदाग एक सांचि प्रीति श्यामकी ॥ लाजको न काज जोपै चाहै व्रजराजसुत बडोई अकाज जोपै करे सुधि धामकी जानी भोर गौनो होइ सानी अनुराग रंग संग एक वही चली भीजी मति वामकी ॥ ८५ ॥ आधी निशि निकसी यों बसी हिये मूरति सो पूरण सनेह तनसुधि बिसराइये । भोर भयो सोर पऱ्यो पऱ्यो

पितु मातु सोच कर्यो ले जतन ठौर ठौर ढूंढि आई है ॥ चारों और दौरे नर आये ढिग ढरे जन ऊकठे करंकमध्य देह जा दुराई है। जग दुरगंध कोऊ ऐसी बुरी लागी जामें बहु दुरगंधसों सुगंधसी सुहाई है ॥ ८६ ॥ बीते दिन तीन वा करंकहीमें शंक नहीं वंक प्रीति रीति यह कैसे कारि गाइये । आयो कोऊ संग ताही संग गंगा तीर आई तहां सो अन्हाई दे भूषण वन आइये ॥ ढूंढत परशुराम पिता मधुपुरी आये पतो ले बताये जाय माथुर मिलाइये । सघन विपिन ब्रह्मकुंडपर वर एक चढि कारि देखी भूमि असुवां भिजाइये ॥ ८७ ॥ उतरिकै आय रोय पांय लपटाय गयो कटी मेरी नाक जग मुख न दिखाइये । चलो गृह वास करो लोक-उपहास मिटे सासघर जावो मत सेवा चित लाइये ॥ कोउ सिंह व्याघ्र अजू वपुको विनाश करे त्रास मेरे होत फिरि मृतक जिवाइये। बोली कही सांच बिनभक्ति तन ऐसो जानो जोपै जियो चाहो करो प्रीति यश गाइये ॥ ८८ ॥ कही तुम काटी नाक कटै जोपै होय कहूं नाक एक भक्तिनाक लोकमें न पाइये । वरस पचास लग विषैहीमें वास कियो तऊ न उदास भये चनेको चबाइये ॥ देखे सब भोग मैं न देखे एक देखे श्याम ताते तजि काम तन सेवामें लगाइये । राततेजु प्रात होत ऐसे तन जात भयो दयो ले स्वरूप प्रभु गयो हिये आइये ॥ ८९ ॥ आये निशि घर हरिसेवा पधराय चाय मनको लगाय वही टहल सुहाई है। कहूं जात आवत न भावत मिलाप कहूं आप नृप पूंछे द्विज कहा सुधि आई है ॥ बोल्यो कोऊ जन धाम श्याम संग पागे सुनि अति अनुराग वेगि खबर मँगाई है । कहो तुम जाय ईश इहांई असीस करो कही भूप आयो हिये चाह उपजाई है ॥ ५९० ॥ देखि नृप प्रीति रीति पूंछी सब बात कही नैन अश्रुपात वह रँगी श्याम रंगमें । बरजत आयो भूप जायके लिवाय ल्याऊं पाऊं जोपै भाग मेरे बढी चाह अंगमें ॥ कालिंदीके तीर ठाढी नीर दृग भूप लखी रूप कछु औरै कहा कहे वे उगंगमें । किये मने लाख बेर तौपैं अभिलाष राजा कीनी कुटी आये देस भीजे सो प्रसंगमें ॥ ९१ ॥

छप्पय–गोपी ग्वाल पितु मात नाम निर्णय किय भारी ।
दान केलि दीपक प्रचुर अति बुद्धि विचारी ॥
सखा सखी गोपाल काल लीलामें वितयो ।
कायथ कुल उदार भक्ति दृढ आन न चितयो ॥
गौतमी तंत्र उर ध्यान धरि, तन त्याग्यो मंडल सरद ।
गोविंदचंद गुण ग्रंथनको, खड्गसेनवाणी विशद ॥ ६२ ॥

टी०क०–ग्वालियर वास सदा रासको समाज करें शरदउजारी अति रंग चढ्यो भारी है । भावकी बढनि दृग रूपकी चढनि ताता थेईकी रटनि जोरी सुंदर निहारी है ॥ खेलतमैं जाय मिले त्यागत न भावनासों झेलत अपार सुख रीझि देहवारी है । मेमकी सचाई ताकी रीति ले दिखाई भावकनि सरसाई बात लागी प्यारी है ॥ ९२ ॥

छप्पय–श्यामाजूकी सखीनाम आगम विधि पायो ।
ग्वाल गाय व्रज गांव पृथक नीके करि गायो ॥
कृष्णकेलि सुख सिन्धु अटल उर अंतर धरई ।
तारसमें नित मग्न असद आलाप न करई ॥
व्रजवास आस व्रजनाथ, गुरुभक्तिचरणरज अनगिनाति ।
सखा श्याम मनभावतो, गंग ग्वाल गंभीरमाति ॥ ६३ ॥

टी०क०–पृथ्वीपति आयो वृंदावन मय चाह भई सारंग सुनावे कोऊ जोरावरी ल्याये हैं । वल्लभहू संग सुर भरतहीं छायो रंग अतिहीं रिझायो दृग असुवां बहाये हैं ॥ ठाढो कर जोर विनै करी पै न धरी हिये जिये व्रजभूमिहीसों वचन सुनाये हैं । कैद करि साथ लिये दिल्लीते छुटाय दिये हरिदास तूंबरन आये प्राण पाये हैं ॥ ९३ ॥

छप्पय–परमभक्ति परताप धरमध्वज नेजाधारी ।
सीतापतिको सुयश वदन शोभित अतिभारी ॥
जानकीजीवन चरणशरण थाती शिर पाई ।

नरहरिगुरुप्रसाद पूत पोते चलि आई ॥
रामउपासक छाप दृढ, और न कछु उर आनियो ।
सोती श्लाघ्य संतानि सभा, द्वितिय दिवाकर जानियो ॥ ६४ ॥
हृदै हरिगुण खान सदा सतसँग अनुरागी ।
पद्मपत्र ज्यों रह्यो लोभकी लहर न लागी ॥
विष्णुरातसम रीति वंधे रेत्यों तन त्याज्यो ।
भक्त बरातीवृंदमध्य दूलह ज्यों राज्यो ॥
खरी भक्ति हरिषापुरे, गुरुप्रताप गाढी रही ।
जीवत यश पुनि परमपद, लालदास दोनों लही ॥ ६५ ॥
निशिदिन यहै विचार दास जिहिं विधि सुख पावैं ।
तिलक दामसों प्रीति हृदै अति हरिजन भावैं ॥
परमारथसों काज हिये स्वारथ नहिं जाने ।
दशधा मत्त मराल सदा लीला गुण गाने ॥
आरत हरिगुण शील सम, प्रीति रीति प्रतिपालकी ।
भक्तनहित भगवंत रचि, देही माधो ग्वालकी ॥ ६६ ॥
मानस वाचिक काय राम चरणन चित दीनो ।
भक्तचसों अतिप्रेम भावना करि शिर लीनो ॥
रासमध्य निर्जान देह द्युति दशा दिखाई ।
आडौ चलियो अंक महोछो पूरी पाई ॥
क्यारे कलश औलीध्वजा, विदुष श्लाघा भागकी ।
श्रीअगरसुगुरु प्रतापते, पूरी परी प्रयागकी ॥ ६७ ॥
सुंदर शील स्वभाव मधुर वानी मंगलकर ।
भक्तनको सुख देत फल्यो बहुधा दशधातर ॥
सदन वसत निर्वेद सारभुक जगतअसंगी ।
सदाचार उदार नेम हरिदास प्रसंगी ॥

दयादृष्टि वश आगरे, कथा लोक पावन कर्यो ।
प्रगट अमित प्रण प्रेमनिधि, धन्य विप्र जिहि नाम धर्यो ॥

टी०क०—प्रेमनिधि नाम कर सेवा अभिराम श्याम आगरो सहर निशि शेष जल ल्याइये । वरषा सुऋतु जित तित अतिकीच भई भई चित चिंता कैसे अपरस आइये ॥ जोपै अंधकारहीमें चलो बिगार होत चलें यो विचारि नीच छुवै न सुहाइये । निकसत द्वार जब देख्यो सुकुमार एक हाथमे मसाल याके पाछे चलि जाइये ॥ ९४ ॥ जानी यह बात पहुँचाय कहूं जात यह अबहीं बिलात भले चैन कोउ धरी है । यमुनालों आयो आच रजसों लगायो मन तन अन्हवायो माति वाही रूप हरी है ॥ घट भारि धर्यो शीश भट सब आय गयो आय गयो घर नहीं देखी कहा करी है । लागी चटपटी अटपटी न समझि परै भट भटी भई नैन नीर लागी छरी है ॥९५॥ कथा ऐसी कहे जामें गहे मनभाव भरे करे कृपादृष्टि दुष्टजन दुःख पायो है । जायकै सिखायो बादशाह उर दाह भयो कही तिया भलीको समूह घर छायो है । आये चोपदार कहैं चलो एही बार बार झारी प्रभु आगे धर्यो चाहे सोर लायो है । चले तब संग गए पूंछे नृप रंग कहा तिया न प्रसंग करों कहिकै सुनायो है ॥ ९६ ॥ कान्ह भगवानही आयकै सुपन दियो कियो वाको इष्टभेष कही प्यास लागी है । पीवो जल कहां आबखाने ले बखाने तब अतिही रिसाने को पिवावे कोउ रागी है ॥ फेरि मारी लात अरे सुनी नहीं बात मेरी आप फरमावो सोई प्यावे बडभागी है । सो तो लेके कैद कर्यो सुनि अरबर्यो डर्यो भर्यो हिये भाव मति सोवतते जागी है ॥ ९७ ॥ दौरे नर ताही समै वेगि पै लिवाय ल्याये देखि लपटाय पांये नृप दृग भीजे हैं । साहिब तिसाये जाय अबहीं पिवावो नीर औरपै न पीवें एक तुमहीपे रीझे हैं ॥ लेवो देश गांव सदा पांवहीसों लग्यो रहो गाहों नहीं नेकु धन पाये बहु छीजे हैं । संग दे मसाल ताही कालमें पठाये यों कपाट जा खुलाय लाल प्यायो जल धीजे हैं ॥ ९८ ॥

छप्पय-सदाचार गुरुशिष्य त्यागविधि प्रगट दिखाई ।
बाहिर भीतर विशद लागि नहिं कलियुग काई ॥
राघव रुचिर स्वभाव असद आलाप न भावै ।
कथा कीरतन नेम मिले संतन गुण गावै ॥
ताप तोल पूरो निकष, ज्यों घन अहरन हीरो सहत ।
दुबलो जाहि दुनियां कहे,सो भक्त भजन मोटो महत॥६९॥
हरिनारायण नृपति पदम बेरछे विराजे ।
गांव हुसंगाबाद अटल उद्धव भल छाजे ॥
भले तुलसीदास भट रुयात देव कल्यानो ।
वोहिथ बनिया रामदास सुहेले परम सुजानो ॥
औली परमानंदके, ध्वजा सबल धर्मकी गडी ।
दासनके दासनको, चौकस चौकी ए मँडी ॥ १७० ॥
दे मा प्रगट सब दुनी रामबाई बीरा हीरामनि ।
लाली नीरा लक्ष्मी युगल पार्वती जगत धनि ॥
खीचनि केशीधना गोमती भक्त उपासिनि ।
बादररानी विदित गंगा यमुना रैदासिनि ॥
जेवा हरखा जोइ सनि, कुंवरराय कीरति अमल ।
अबलाशरीर साधन सबल, एबाई हरिभक्तिबल ॥ ७१ ॥
श्रीगुरुशरणै आइ भक्तिमारग सत जान्यो ।
संसारी धर्म छांडि झूंठ अरु सांच पिछान्यो ॥
ज्यों शाखाद्रुमचन्द्र जगतसों यहि विधि न्यारो ।
सर्वभूत समदृष्टि गुणनि गंभीर अति भारो ॥
भक्त भलाई वदत नित, कुवचन कबहूं नहिं कह्यो ।
कान्हरदास संतनि कृपा, हरी हृदय लाहो लह्यो ॥ ७२ ॥
कहनि रहनि है एक एक प्रभुपद अनुरागी ।

यश वितान जग तन्यो संतसम्मत बडभागी ॥
तैसोई पूत सपूत नूतफल जैसो परसा ।
हरिहरदासनिटहल कबितरचना पुनि सरसा ॥
सुरसुरानंद संप्रदाय दृढ, केशव अधिक उदार मन ।
लव्यो लटेरा आनविधि, परम धर्म अति पीनतन ॥ ७३ ॥
भक्त भागवत विमुख जगतगुरु नाम न जाने ।
ऐसे लोग अनेक ऐंचि सन्मारग आने ॥
निर्मल रति निहकाम अजाते सदा उदासी ।
तत्वदरशि तम हरण शील करुणाकी राशी ॥
तिलक दाम नवधारतन, कृष्णकृष्ण करि दृढ दिया ।
केवल राम कलियुगके, पतित जीव पावन किया ॥ ७४ ॥

टी०क०–घर घर जाय कहै यहै दान दीजे मोको कृष्णसेवा कीजे नाम लीजे चित्त लायकै । देखें भेखधारी दस बीस कहूं अनाचारी दीये प्रभु सेवनिकी रीतिहि सिखायकै ॥ करुणानिधान कोऊ सुने नहीं कान कहूं बैलके लगायों सोंटो लोठे दया आयकै । उपज्यो प्रगट तन मनकी सचाई अहो भये तदाकार कहों कैसे समझायकै ॥ ९९ ॥

छप्पय–धर्मशील गुणसींव महाभागवत राजऋष ।
पृथीराजकुलदीप भीमसुत विदित कील्हशिष ॥
सदाचार अतिचतुर विमल वाणी रचनापद ।
शूर धीर उदार विनय भलपन भक्तनहद ॥
सीतापति राधासुवर, भजन नेम उरमें धऱ्यो ।
श्रीमोहनमिश्रित पदकमल, आशकरन यश विस्तऱ्यो ७५

टी०क०–नरवरपुर ताको राजा नरवर जानों मोहनजू धरि हिये सेवा नीके करी है । धरी दश मंदिरमें रहे चौकी चोपदार पावत न जान कोऊ ऐसी मति हरी है ॥ पऱ्यो कोऊ काम आय अबहिं मिलाय ल्या वा कहे

पृथ्वीपति लोग कानमें न धरी है। आई फौज भारी सुधि दीजिये हमारी सुनि बहू बात टारी परी अति खरभरी है ॥ ६०० ॥ कहिकै पठाई कहो कीजिये लराई सुनि रुचि उपजाई चलि पृथ्वीपति आयो है। पर्यो शोच भारी तब बात यों विचारि कही आय एक जावो गयो अचरज पायो है ॥ सेवा करि सिद्धि साष्टांग ह्वैकै भूमि परे देखि बडी बेर पांव खडग लगायो है। कटि गई एँडी तौपै टेढीहूं न भौंह करी करी नित नेम रीति धीरज दिखायो है ॥ १ ॥ उठी चिक डारि तब पाछे सो निहार कियो मुजरा विचारि बादशाह अति रीझे हैं। हितकी सचाई यह नेकु न कचाई होत चरचा चलाईं भाव सुनि मन भीजे हैं॥ बीते दिन कैऊ नृप भक्त सो समायो पृथ्वी पति दुध पायो सुनि भोग हरि छीजे हैं। करें विप्रसेवा तिन्हें गांव लिखि न्यारे दिये वाके प्राणप्यारे लाड करो कहि भीजे हैं ॥२॥

छप्पय–कथा कीरतन प्रीति संतसेवा अनुरागी।
खरिया खुर्पा रीति ताहि ज्यों सर्वसु त्यागी ॥
संतोषी सुठि शील असद आलाप न भावे।
कालवृथा नहिं जाय निरंतर गोविंद गावे ॥
शिष सपूत श्रीरंगको उदित पारषद अंशके।
निष्किंचन भक्तन भजे, हरिप्रतीति हरिवंशके ॥ ७६ ॥
नंद किशोर दृढव्रत अनन्यमारग इक धारा।
मधुर वचन मनहरण सुखद जानत संसारा ॥
परउपकार विचार सदा करुणाकी राशी।
मनवच सर्वसरूप भक्तपदरेणुउपासी ॥
धर्मदाससुत शील सुठि, मनमान्यो कृष्ण सुजानके।
हरिभक्ति भलाई गुण गंभीर, बांट परी कल्याणके ॥७७॥
आदि अंत निर्वाह भक्तपदरजव्रतधारी।
रहे जगतसों ऐंड तुच्छ जानें संसारी।

प्रभुतापतिकी पद्धति प्रगट कुलदीपप्रकाशी ।
महतसभामें मान जगत जानै रैदासी ॥
पद पढत भई परलोकगति, गुरु गोविंद युगफल दिया ।
विठ्ठलदास हरिभक्तिके, दुहूं हाथ लाडू लिया ॥ ७८ ॥
का वह श्रीरंग सुमति सदानंद सर्वसुत्यागी ।
श्यामदास लघुलंब अनन्य लाखा अनुरागी ॥
मास मुदित कल्याण परस वंशी नारायण ।
चेता ग्वाल गोपाल शंकर लीला पारायण ॥
संतसेवाकारज किया, तोषत श्याम सुजानको ।
भगवंत रचे भारी भगत, भक्तनके सन्मानको ॥ ७९ ॥
शरणागतको शिबरि दान दधीच टेक बलि ।
परम धर्म प्रल्हादसीस जग देव देत कलि ॥
बीकावति बानैत भक्तिपण धर्मधुरंधर ।
तूवरकुलदीपक संतसेवा नित अनुसर ॥
पार्थपीठि अचरज कौन, सकल जगतमें यश लियो ।
तिलकदाम परकामको, हरिदास हरि निर्मयो ॥ १८० ॥

टी०क०—प्रह्लाद आदि भक्त गाये गुण भागवत सब एक ठौर आये देखे हरिदासमें। रीझि जगदेदसों यों कहिकै बखान कियो जानत न कोउ सुन्यो कर्‍यो ले प्रकाशमें॥ रहे एक नटी शक्तिरूप गुणजटी गावे लागे चटपटी मोह पावे मृदु हासमें। राजा रीझवार करे देयेको विचार पै नवावे सार काटे शीस राख्यो तेरे पासमें॥३॥ दियो करदाहनोंमें वासो नहीं जांचो काहू सुनि एक राजा भेद भावसों बुलाई है। नृत्य कारि गई रीझि लेवो कही आइ देह ओड्यो बांयो हाथ रिसभारिकै सुनाई है॥ इतो अपमान पाणि दक्षिणा ले दियो अहो नृप जगदेवजूको ऐसी कहा पाई है। तासों दसगुनी लीजै मोको सौ दिखाय दीजे दई नहीं जाय काहू मोहिं ये सुहाई हैं॥ ४॥ कीतो

समझावे ल्यावो कहे यह जग साखी गई बडभागी पास वस्तु मेरी हीजिये। काटि दियो शीस तन रहे ईश शक्ति लख्यो ल्याई बकशीस थार ढापि देखि लीजिये॥ खोलिकै दिखायो नृप मूरछा गिरायो तन धनकी न बात अब याको कहा कीजिये। मैं जु दीनो हाथ जान आनि ग्रीव जोरि दई लई वाकी रीझि पद तान सुनि जीजिये॥५॥ सुनी जगदेवरीति प्रीति नृपराजसुता मा-तासों बखान कही वाहीको ले दीजिये। तब तो बुलायो समझाये बहुभांति खोलि वचन सुनायो अजू बेटी मेरी लीजिये॥ नट्यो शतवार जब कही डारो मारि चले मारवेको बोलि वहे मारो मति भीजिये। दृष्टिसों न देखे कही ल्या-वो काट मुंड ल्याय चाहे शीस आंखिनको गयो फिरि रीझिये ॥ ६ ॥ निष्ठा रिझवार रीति कीन्ही सो विस्तार यह सुनो साधुसेवा हरिदासजूने करीहै। परदान संत सोहै देत है अनंत सुख रह्यो रुख जानि भक्तसुता चित धरी है॥ दोउ मिलि सोवें ऋतुग्रीषमकी छातपर गातपर गात सोए सुधि नहीं परी है। दातुनके करिवेको चढे निशि शेष आपि चादर उढाय नीचे आये ध्यान धरी है॥७॥ जाग परे दोऊ अरबरे देखि चादरको पंखि पहिंचानी सुता पिताहीकी जानी है। राते दृग नये चले बैठे मग पग लये गये ले एकांतमें यों विनती बखानी है। नेकु सावधान हैकै कीजिये निःशंककाम दुष्टराज छिद्र पाय कहे कटु वानी है। तुमको जु नांव धरे जरे सुनि हियो मेरो डरे निंदा अपनी न होत सुखदानी है ॥८॥ इतनी जितावनीमें भक्तिको कलंक लगै तौपै शंक वही साधु घटती न चाई है। भई लाज भारी विषै-वास धोय डारी नीके जीके दुखराशि चाहे कहूं उठि जाई है॥ निपट मगन किये नानाविधि सुख दिये दिये पै न जान मिलि लालनि लडाई है। गोविं-दअनुजताकी बांसुरीको सांचो पन मनमें न ल्यायो नृप इहविधि गाई है ॥ ९ ॥

छप्पय—तान मान सुर ताल छन्द सुंदर सुठि सोहै।
सुधाअंग भ्रूभंग मान उपमाको कोहै॥

रत्नाकर संगीत रागमाला रंगरासी ।
रीझें राधालाल भक्तपदरेणुउपासी ॥
स्वर्णकार खरगू सुवन, भक्तभजन पन दृढ लियो ।
नंदकुँवर कृष्णदासको, निजपगतें नूपुर दियो ॥ ८१ ॥

टी० क०—कृष्णदास ए सुनार राधाकृष्ण सार लियो सेवा करि पाछे नृत गान विसतारिये । व्है करि मगन काहू दिन तनसुधि भूली एक पग नूपुरसों गिऱ्यो न सँभारिये ॥ डाल अति रंग भरे जानी जन भंग भई पांय निजखोली आय बांध्यो सुख भारिये । फेरि सुधि आई देखि धारा ले बहाई नैन कीरति यों छाई जग भक्ति लागी प्यारिये ॥६१० ॥

छप्पय—चित्सुखिटीकाकार भक्ति सर्वोपरि राखी ।
श्रीदामोदरतीर्थ सम अर्चनाविधि भाखी ॥
चंद्रोदय हरिभक्ति नृसिंहारण्यहि कीनी ।
माधो मधुसूदन सरस्वती परमहंसकीरति लीनी ॥
प्रबोधानंद रामभद्र, जगदानंद कलियुग धनि ।
परमधर्म प्रतिपोषिकै संन्यासी ए मुकुटमनि ॥ ८२ ॥

श्रीप्रबोधानंदसरस्वती गुसांईजूका वर्णन ।

टी० क०—श्रीप्रबोधानंद बडे रसिक आनंदकंद श्रीचैतन्यचंदजूके पारषद प्यारे हैं । राधाकृष्णकुंजकेलि निपट नवेलि कही झेलि रस रूप दोउ किये दृग तारे हैं ॥ वृंदावनवासको हुलास ले प्रकाश कियो दियो सुखसिंधु कर्म धर्म सर्व टारे हैं । तहां सुनि सुनि कोटि कोटि जन रंग पायो विपिन सुहायो वसैं तनमन वारे हैं ॥ ११ ॥

छप्पय—सरिता कूकस गांव सलिलमैं ध्यान धऱ्यो मन ।
रामचरण अनुराग सुदृढ जाके सांचोपन ॥
सुत कलत्र धन धाम ताहिसों सदा उदासी ।
कठिन मोहको फंद तरकि तोरी कुल फांसी ॥

कीन्ह कृपा बल भजनके, ज्ञानखङ्ग माया हनी ।
अष्टांग योग तन त्यागियो, द्वारिकादास जाने दुनी॥८३॥
उदय अस्त परवत गहिर मध्य सरिता भारी ।
योगयुवती विश्वास तहां दृढ आसन धारी ॥
व्याघ्रसिंह गुंजे खराक कछु शंक न मानै ।
अर्द्ध न जाते पवन उलट ऊरधको आनै ॥
साखि शब्द निर्मल कही, कथ या पद निरवान ।
पूर्ण प्रगट महिमा अनंत, करि है कौन बखान ॥ ८४ ॥
सदाचार मुनिवृत्ति भजन भागवत उजागर ।
भक्तनसों अतिप्रीति भक्ति दशधाको आगर ॥
संतोषी सुठि शील हृदय स्वारथ नहिं लेशी ।
परमधर्म प्रतिपाल संतमारगउपदेशी ॥
श्रीभागवत बखानिकै, नीरक्षीर विवरण कऱ्यो ।
श्रीरामानुजपद्धति प्रताप, भट्ट लक्ष्मण अनुसऱ्यो ॥ ८५॥
कृष्णदास कलि जीति न्योति नाहर पल दीयो ।
अतिथिधर्म प्रतिपाल प्रगट यश जगमें लीयो ॥
उदासीनता अवशि कनककामिनि नहिं रातो ।
रामचरणमकरंद रहत निशिदिन मदमातो ॥
गलते गलित अमित गुण, सदाचार सुठि नीति ।
दधीच पाछे दूसरी करी, कृष्णदास कलिजीति ॥ ८६ ॥

टी॰ क॰–बैटे हैं गुंफामें देखे सिंहद्वार आय गयो लयों यो विचार हो अतिथि आजु आयो है। दई जांघ काटि डारि कीजिये अहार अजू महिमा अपार धर्म कटिन बतायो है ॥ दियो दरशन आप सांचमें रह्यो न जाय निपट सँचाई दुख जान्यो न बिलायो है । अन्न जल देवेहीको झखत जगत नर करि कौन सकै जन मन भरमायो है ॥ १२ ॥

छप्पय—लालविहारी जपत रहत निशिवासर फूल्यो ।
सेवा सहज सनेह सदा आनंदरस झूल्यो ॥
भक्तनसों अतिप्रीति रीति सबही मनभाई ।
आशय अधिक उदार रसना हरिकीरति गाई ॥
हरि विश्वास हिये आनिकै, सुपनेहु अन्य न आश की ।
भली भांति निबही भगति, सदा गदाधर दासकी ॥ ८७ ॥

टी० क०—बुरहानपुरढिग बाग तामें बैठे आय कारि अनुराग त्यागि पागी मति श्यामसों । गांवमें न जात लोग किते हाहा खात सुख मानि लियो गात नहीं काम और कामसों ॥ पऱ्यो अतिमेह देह बसन भिजाय डारे तब हरि प्यारे बोले सुर अभिरामसों । रहे एक साह भक्त कही जाय ल्यावो उन्हैं मंदिर करावो तेरो भऱ्यो घर दामसों ॥ १३ ॥ नीठि २ ल्याये हरिवचन सुनाये जब तब करवायो ऊंचो मंदिर सँवारिकै ॥ प्रभु पधराये नाम लाल औ विहारी श्याम अति अभिराम रूप रहत निहारिकै ॥ करे साधुसेवा जामें निपट प्रसन्न होत वासी न रहत अन्न सोवैं पात्र झारिकै। करत रसोई जोई राखी ही छिपाय सामा आये घर संत आप कही ज्यांवो प्यारिकै ॥ १४ ॥ बोल्यो प्रभु भूंखे रहे ताके लिये राख्यो कछु भाख्यो तब आप काढो भोर और आवैगो। करिकै प्रसाद दियो लियो सुख पायो सब सेवारीति देखि कही जग यश गावैगो ॥ प्रात भये भूखे हरि गये तीन याम दूरि रहे क्रोधभरि कहे कब धौं छुटावैगो । आयो कोउ ताहीसमै दोसत रुपैय्या धरे बोले गुरु शिष्य लेके नारो कितो पावैगो ॥ १५ ॥ डऱ्यो वह साह मत मोपै कछु कोप कियो कियो समाधान सब बात समझाई है। तब तौ प्रसन्न भयो अन्न लगे जितौ देत सेवा सुखलेत साधुरुचि उपजाई है ॥ रहे कोउ दिन पुनि मधुपुरी वास लियो पियो व्रजरस लीला अतिसुखदाई है । लाल ले लडाये संत नीके भुगताये गुण जाने जिते गाये मति सुंदर लगाई है ॥ १६ ॥

छप्पय–भक्तियोग दृढ युक्ति देह निजबल करि राखी ।
हिये स्वरूपानंद जालरस रसना भाखी ॥
परिचय प्रचुर प्रताप जानमणि रहससहायक ।
श्रीनारायणप्रगट मनौ लोगन सुखदायक ॥
नित सेवक संतन महत, दाता उत्तरदेश गति ।
हरिभजन शिवै स्वामी सरस, श्रीनारायणदास अति॥८८॥

टी०क०–आये बद्रीनाथजूतैं मथुरा निहारि नैन चैन भयो रहै जहां केशौजूके द्वार है। आवें दरशन लोग जूतिनको सोग हिये रूपको न भोग होत कियो यों विचार है॥ करे रखवारी सुख पावत है भारी कोऊ जानै न प्रभाव उर भाव सो अपार है। आयो एक दुष्ट पोट पुष्ट सोतो शीश दई लई चले मग ऐसो धीरजको सार है ॥ १७ ॥ कोऊ बडो नर देखि मग पहिंचानि लखे किये परिणाम भूमि परे भरि नेहको । जानिकै प्रभाव पांव लीने महादुष्टहूंनै कष्ट अति पायो छुट्यो अभिमान देहको ॥ बोले आप चिंता जिन करो तेरो काम होत नैन नीर सोत मुख देखों नहीं गेहको। भयो उपदेश भक्तिदेश उन जान्यो साधु शक्तिको विशेष वहां जानो भाव मेहको ॥ १८ ॥

छप्पय–भजनभाव आरूढ गूढ गुण वलित ललित यश ।
श्रोता श्रीभागवत रहस्यज्ञाता अक्षररस ॥
मथुरापुरी निवास आस पदसंतनि इकचित ।
श्रीयुत खोजीये श्यामधाम सुखकर अनुचरहित ॥
अति गंभीर सुधीर मति, हुलसत मन जाके दरस ।
भगवानदासश्रीसहितनित, सुहृदशील सज्जन सरस ॥८९॥

टी०क०–जानिवेको पन पृथ्वीपति मन आई यों दुहाई ले दिवाई माला तिलक न धारिये। मानि आन प्रान लोभ केतकनि त्यागि दिये छिपे नहीं जात जानी वेगि मारि डारिये॥ भगवानदास उर भक्ति सुखराशि भयो

कर्‍यो ले सुदेस बसे रीति लागी प्यारियै । रीझ्यो नृप देखि रीझे मथुरा-निवास पायो मंदिर करायो हरि देवसो निहारियै ॥ १९ ॥

छप्पय—जगन्नाथको दास निपुण अति प्रभुमन भायो ।
परमपारषदसमुझि जानि प्रिय निकट बुलायो ॥
प्राणपयानो करत नेह रघुपतिसों जोर्‍यो ।
सुत दारा धन धाम मोह तिनुका ज्यों तोर्‍यो ॥
कोधनी ध्यान उरमें लस्यो, रामनाम मुख जानकी ।
भक्तपक्ष उदारता, यह निबही कल्यानकी ॥ १९० ॥
संतदास सदवृत्ति जगत छोई कर डार्‍यो ।
महिमा महाप्रवीण भक्तिवित धर्म विचार्‍यो ॥
बहुरो माधवदास भजनबल परचो दीनो ।
करि योगिनिसों वाद वसन पावक प्रति लीनो ॥
परमधर्म विस्तारहित, प्रगट भये नाहिन तथा ।
सोदर सोभूरामके, सुनो संत तिनकी कथा ॥ ९१ ॥
कृष्णभक्तिको थंभ ब्रह्मकुल परम उजागर ।
क्षमाशील गंभीर सर्वलक्षणको आगर ॥
सर्वसु हरिजन जानि हृदय अनुराग प्रकाशै ।
अशन वसन सन्मान करत अति उज्ज्वल आशै ॥
सोभूरामप्रसादते, कृपादृष्टि सबपर बसी ।
बूडिये विदितकान्हरकृपालु, आत्मारामआगमदरसी ॥९२॥
रुचिर शील घन नील लील रुचि सुमति सरितपति ।
विविध भक्ति अनुरक्त व्यक्त बहु चरित चतुर अति ॥
लघु दीर्घ स्वर शुद्ध वचन अविरुद्ध विचारन ।
विश्ववास विश्वास दास परिचय विस्तारन ॥
जानि जगतहित सब गुणनि, सुसम नरायणदास दिय ।

भक्तरत्नमाला सुधन, गोविंदकंठ विकास किय ॥ ९३ ॥
श्रीयुत नृपमणि जगतसिंह दृढभक्तिपरायण ।
परमप्रीति किय सुवश शील लक्ष्मी नारायण ॥
जासु सुयश सहजही कुटिल कालि कल्पजु धायक ।
आज्ञा अटल सुप्रगट सुभट कटकनि सुखदायक ॥
अतिहि प्रचंड मार्तंड सम, तमखंडन दोर्दंड वर ।
भक्तेशभक्त भवतोष करि, संत नृपति वासों कुंवर ॥ ९४ ॥

टी०क०–जगताको पन मन सेवा श्रीनारायणजू भयो ऐसो परायण रहे डोला संगही । लखिको चले आगे आगे सदा पाछे रहे लावे जल शीश ईश भर्‍यो हियो रंगही ॥ सुनि जसवंत औ जैसिंहके हुलास भयो देख्यो दिल्लीमांझ नीर ख्यावत अभंगहीं । भूमि पारि विनै करी घरी देह तुमहीने जाते पायो नेह भीजि गयो यों प्रसंगही ॥ ६२० ॥ नृपति जैसिंहजूसों बोल्यो कहा नेह मेरे तेरी जो बहनि ताकी गंधको न पाऊं मैं । नाम दीपकुंवरि सो बडी भक्ति मान जानि वह रसखान तौपै कछुक लडाऊं मैं ॥ सुनि सुख भयो भारी हुती रीस वासों टारि लिये गांव काटि फिरि दिये हरि ध्याऊं मैं । लिखिकै पठाई बाई करे सो करन दीजे लीजे साधुसेवा करि निशिदिन गाऊं मैं ॥ २१ ॥

छप्पय–प्रेमी भक्त प्रसिद्ध गान अतिगद्गदवानी ।
अंतर प्रभुसों प्रीति प्रगट रह नाहिंन छानी ॥
नृत्य करत आमोद विपिन तन वसन विसारे !
हाटक पट हित दान रीझि तत्काल उतारे ॥
मालपुरे मंगलकरण, रास रचो रस रंगको ।
गिरिधर ग्वालगोपालको, सखा साचको संगको ॥ ९५ ॥

टी० क०–गिरिधर ग्वाल साधुसेवाहीको ख्याल जाके देखि यों निहाल होत प्रीति सांची पाई है । संत तन छूटहूते लेत चरणामृतको और अब

रीति कहौ कापै जात गाई है ॥ भये द्विज पंच इकठौर सो प्रपंच मान्यो आन्यो सभामांझ कह्यो छोड्यो न सुहाई है । जाके हो अभाव मत लेवो प्रेमभाव जानो मृतक यों बुद्धि ताको वारौ सुनि भाई है ॥ २२ ॥

छप्पय–प्रगट अंगमैं प्रेम नेममौं मोहनसेवा ।
कलियुग कलुष न लग्यो दासते कबहुँ न छेवा ॥
वाणी शीतल सुखद सहज गोविंदधुनि लागी ।
लक्षणकला गंभीर धीर संतनि अनुरागी ॥
अंतरशुद्ध सदा रहै, रसिक भक्ति निज उर धरी ।
गोपालीजन पोषको, जगत यशोदा औतरी ॥ ९६ ॥
शीतल परम सुशील वचन कोमल मुख निकसै ।
भक्त उदित रवि देखि हृदय वारिज जिमि विकसै ॥
अतिअनंद मन उमँगि संतपरिचर्या करई ।
चरण धोइ दंडवत विविध भोजन विस्तरई ॥
बछवन निवास विश्वास हरि, युगुल चरण उर जगमगत ।
श्रीरामदास रसरीतिसों, भलींभांति सेवत भगत ॥ ९७ ॥

टी०क०--सुनि एक साधु आयो भक्तिभाव देखिवेको बैठे रामदास पूंछे रामदास कौन है । उठे आप धोये पांव आवे रामदास अब रामदास कहां मेरे चाह और गौन है ॥ चलो जू प्रसाद लीजे दीजे रामदास आनि यही रामदास पग धारि निजभौन है । लपटानो पायनसों चायनि समात नाहिं भायनिसों भर्‍यो हियो छायो यश जौन है ॥ २३ ॥ बेटीको विवाह घर बडो उतसाह भयो किये पकवान नाना कोठेमांझ धरे हैं । करें रखवारी सुत नाती दिये तारो रहें औरही लगाय तारी खोल्यो नहीं डरे हैं ॥ आये गृह संत तिन्है पोट बँधवाइ दई पायो यों अनंत सुख ऐसे भाव भरे हैं । सेवा श्रीविहारीलाल गाई पाक स्वच्छताई मेरे मन भाई सब साधु उर हरे हैं ॥२४॥

छप्पय–भक्ति ज्ञान वैराग्य योग अंतर्गति पाग्यो ।
काम क्रोध मद लोभ मोह मत्सर सब त्याग्यो ॥
कथा कीर्तन मग्न सदा आनंदरस झूल्यो ॥
संत निरख मन मुदित उदित रवि पंकज फूल्यो ॥
वैरभाव जिनद्रोह किय, तासु पागि खासि भै परी ।
विप्र सारस्वतघर जनम, राम राय हरि रति करी ॥९८॥
कुंजविहारी केलि सदा अभ्यंतर भासै ।
दंपति सहज सनेह प्रीति परिमिति परकासै ॥
अनन्य भजन रसरीति पुष्टिमारग करि देखी ।
विधि निषेध बल त्यागि पागि रति हृदय विशेषी ॥
माधव सुत संमत रसिक, तिलकदाम धरि सेव लिय ।
भगवंत मुदित उदार यश, रस रसना आस्वाद किय ॥९९॥

टी०क०–सूजाके दिवान भगवंत रसवंत भये वृंदावनवासिनकी सेवा ऐसी करी है। विप्र कै गुसांई साधु कोऊ व्रजवासी जावे देत बहु धन एक प्रीति मति हरी है॥ सुनि गुरु देव अधिकारी श्रीगोविंद देव नाम हरिदास जाय देखि चित धरी है । योग्यताई सीवा प्रभू दूध भात मांगि लियो कियो उतसाह तऊ पोषे अरबरी है ॥ २५ ॥ सुनि गुरु आवत अमावत न किहूं अंग रंग भारि तियासों यों कही कहा कीजिये। बोली घरबार पट संपति भंडार सब भेंट करि दीजे एक धोती धारि लीजिये ॥ रीझे सुनि वाणी सांची भक्ति तेही जानी मेरे अति मनमानी कहि आंखें जल भीजिये । वही बात परी कान श्रीगुसांई लई जानि आये फिरि वृंदावन पन मति धीजिये ॥ २६ ॥ रह्यो उतसाह उरदाहको न पारावार कियो ले विचार आज्ञा मांगि चले आये हैं। रहे सुख लहे नानापद रचि कहे एक रस निरवहे व्रजवासी जा छुटाये हैं॥ कीनी घर चोरी तऊ नेकु नासा मोरी नाहिं बोरी मति रंग लाल प्यारी दृग छाये हैं । बडे बडभागी अनुरागी रति जागी जग माधव रसिक बात सुनो पिता पाये हैं ॥ २७ ॥

आयो अंतकाल जानि बेसुधि पिछानि सब आगरेते लेके चले वृंदावन जाइये । आये आधी दूरि सुधि आई बोले चूर ह्वैके कहां लिये जात कूर कही जोई ध्याइये ॥ कही फेरो तन वन जायवेको पात्र नहीं जरै वास आवे प्रिया प्रियको न भाइये । जानहारो होय सोई जायगो युगलपास ऐसे भाव राशि ताही ठौर चलि आइये ॥ २८ ॥

छप्पय–गौरश्यामसों प्रीति प्रीति यमुनाकुंजनसों ।
वंशीवटसों प्रीति प्रीति व्रजरजपुंजनसों ॥
गोकुलगुरुजन प्रीति प्रीति घन बारह वनसों ।
पुर मथुरासों प्रीति प्रीति गिरि गोवर्धनसों ॥
वास अटल वृंदा विपिन, दृढ करि सो नगरी कियो ।
दुर्लभ मानुषदेहसों, लाल मती लाहो लियो ॥ २०० ॥
कविजन करत विचार बडो को ताहि मनीजै ।
कोउ कह अवनी बडी जगत आधार फनीजै ॥
सो धारी शिर शेष ताहि शिव भूषण कीनो ।
शिव आसन कैलास भुजा भरि रावण लीनो ॥
रावण जीत्यो वालि, राम इक सायक दंडे ।
अग्र कहे त्रैलोक्यमें, हरि उर धारे ते बडे ॥ १ ॥
नेह परस्पर अघट निबहि चारों युग आयो ।
अनुचरको उत्कर्ष श्याम अपने मुख गायो ॥
ओतप्रोत अनुराग प्रीति सबही जग जानै ।
पुरप्रवेश रघुवीर भृत्य कीरति जु बखानै ॥
अग्र अनुगगुण वर्णतहि, सीतापति तिन होय वश ।
हरिसुयश प्रीति हरिदासको, हरि भावे हरिदासयश ॥ २ ॥
दुर्वासाप्रति श्याम दासवशता हरि भाखी ।
ध्रुव गज पुनि प्रह्लाद राम शबरी फल चाखी ॥

राजसूय यदुनाथ चरण धो जूठ उठाई ।
(बहु) पांडव विपति निवारि दियो विषविषया पाई ॥
कलि विशेष परचौ प्रगट, आस्ति हैकै चित धरौ ।
उत्कर्ष सुनत संतनको, अचरज कोऊ जिन करौ ॥ ३ ॥

फलश्रुति–दोहा ।

पादव पेडहिं सींचते, पावै अँग अँग पोष ।
पूरवजा ज्यौं वरणते, सुनि मानिय संतोष ॥ ४ ॥
भक्त जिते भूलोकमें, कथे कौनपै जांय ।
समुद्रपानश्रद्धा करै, कह चिरिपेट समाय ॥ ५ ॥
श्रीमूरति सब वैष्णव, लघु दीर्घ गुणी अगाध ।
आगे पीछे वरणते, जिनि मानो अपराध ॥ ६ ॥
फलकी शोभा लाभ तरु, तरुशोभा फल होय ।
गुरुशिष्यकी कीर्तिमें, अचरज नाहीं कोय ॥ ७ ॥
चारि युगनिमें जे भगत, तिनके पदकी धूरि ॥
सर्वसु शिर धर राखि हौं, मेरो जीवनमूरि ॥ ८ ॥
जग कीरति मंगल उदय, तीनों ताप नशाय ।
हरिजनको यश वरणते, हरि हृदि अटल बसाय ॥ ९ ॥
हरिजनको यश वरणते, करै जू असुया आय ।
इहां उदर बाढै व्यथा, अरु परलोक नशाय ॥ २१० ॥
जो हरिप्राप्तिकि आस है, तो हरिजनगुण गाय ।
नातर भूंजे बीज लौं, जन्म जन्म पछिताय ॥ ११ ॥
भक्तदास संग्रह करै, कथन श्रवण अनुमोद ।
सो प्रभु प्यारो पुत्र ज्यों, बैठे हरिकी गोद ॥ १२ ॥
अच्युतकुल यश इक वरहु, जाकी मति अनुरागि ।
उनकी भक्ति भजन सुकृत, निश्चय होय विभागि ॥ १३ ॥

भक्तदाम जिन जिन कथी, तिनकी जूंठनि पाय।
मो मति सारू अक्षर द्वै कीनो सिलौ बनाय॥ १४॥
काहूके बल योगयज्ञ, कुल करनीकी आस।
भक्तनाममाला अग्र उर, वसौ नारायणदास॥ २१५॥

इति नाभाजीकृत भक्तमाल मूल समाप्त।

टीकाकर्ता के गुरुदेव का वर्णन

क०– रसिकाई कविताई जाहि दीनी पाई भई सरसाई हिये मनमें बसाई है।
उर रंगभवनमें राधिकारमण बसे लसे ज्यों मुकुरमध्य प्रतिबिंब भाई है॥
रसिकसमाजमें विराज रसराज कहे चहे मुख सब फूले सुखसमुदाई है।
जनमन हरिलाल मनोहर नाम पायो उनहूंको मन हरि लीनो याते राई है॥२९॥
इनहींके दासदास प्रियादास दास जानों तिन ले बखान्यो मानो टीका सुखदाई है।
गोवर्द्धननाथजूके हाथ मन पर्‍यो जाको कर्‍यो वास वृंदावन लीला मिलि गाई है॥
मति अनुमान कह्यो लह्यो सुख संतनके अंतको न पावे जोई गावे हिये आई है।
घटि बढि जानि अपराध मेरो क्षमा कीजै साधु गुणग्राही यह मानि मैं सुनाई है॥६३०॥
कीनी भक्तमाल सुरसाल नाभास्वामीजूने तरे जीवजाल जग जनमनमोहनी।
भक्तिरसबोधिनी सो टीका मतिशोधिनी है बांचत कहत अर्थ लागे अति सोहनी॥
जो पै प्रेमल क्षणाकी चाह अवगाह याहि मिटे उर दाह नेकु नैननहूं जोहनी।
टीका अरु मूल नाम भूलि जात सुनै जब रसिक अनन्य मुख होत विश्वमोहनी॥३१॥
नाभाजूको अभिलाष पूरण ले कियो मैं तो ताकी साखि प्रथम सुनाई नीके गायकै।
भक्तिको विश्वास जाके तोहीसों प्रकाश कीजै भीजै रंग हियो लीजै संतनि लडायकै॥
संवत प्रसिद्ध दश सातशत उन्हत्तर फाल्गुन मास वदी सप्तमी बितायकै।
नारायणदास सुखराशि भक्तमाल लेके प्रियदासदास पुर वसो रहौ छायकै॥३२॥
अगनि जरावो लैकै जलमें बुडावो भावे शूलीपै चढावो घोरी गरल पिवायवी।
विच्छू कटवावो कोटि साप लपटावो हाथी आगे डरवावो एती भीत उपजायवी॥
सिंहपै खवावो चाहो भूमि गडवावो तीखी अनी विधवावो मोहिं दुःख नहीं पायवी।
व्रजजनप्राण कान्ह बात यह कान करो भक्तिसों विमुख ताको मुख न दिखायवी॥६३३॥

इति श्रीप्रियादासकृत भक्तिरसबोधिनी भक्तमालटीका सम्पूर्ण॥

हमारे प्रकाशनों की अधिक जानकारी व खरीद के लिये हमारे निजी स्थान :

खेमराज श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,
९१/१०९, खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग,
७ वी खेतवाडी बॅक रोड कार्नर,
मुंबई - ४०० ००४.
दूरभाष/फैक्स-०२२-२३८५७४५६.

खेमराज श्रीकृष्णदास
६६, हडपसर इण्डस्ट्रियल इस्टेट,
पुणे - ४११ ०१३.
दूरभाष-०२०-२६८७१०२५,
फैक्स -०२०- २६८७४९०७.

गंगाविष्णु श्रीकृष्णदास,
लक्ष्मी वेंकटेश्वर प्रेस व बुक डिपो
श्रीलक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस बिल्डींग,
जूना छापाखाना गली, अहिल्याबाई चौक,
कल्याण, जि. ठाणे, महाराष्ट्र - ४२१ ३०१.
दूरभाष/फैक्स- ०२५१-२२०९०६१.

खेमराज श्रीकृष्णदास
चौक, वाराणसी (उ.प्र.) २२१ ००१.
दूरभाष - ०५४२-२४२००७८.

KHEMRAJ SHRIKRISHNADASS